246

असली प्राचीन

रावण संहिता

लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

हाथ जोड़े, मस्तक झुकाये, स्तुति करे और सूर्य की ओर मुख करके उसकी जड़ में दूध डाले। फिर उसे खोद लाये। उसे कमर में बाँधते ही धरण यथास्थान आ जाती है—इसमें सन्देह नहीं है।

हूक का मन्त्र

ॐ नमो सारकी छुरी धारका वान हूकन चलै रे महम्मदा ज्वानकी आन शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मन्त्र को २१ बार पढ़ता जाय और प्रत्येक बार तेज छूरी से जमीन पर रेखा खींचता जाय तो हूक बन्द हो जाती है।

प्लीह निवारण मन्त्र

ॐ नमो हुतास पर्वत जहा सुरहगा सुरहगाय के पेटमें वच्छा वच्छाके पेट में तिल्ली दबादबाकर तिल्ली कटै सरकण्डा बढ़े फीहा कटै हरौ फुरौ। इति मन्त्रः।

छुरी से भूमि पर लकीर बनाकर उसे काटता जाय और साथ ही साथ मन्त्र भी पढ़ता जाय तो तिल्ली ठीक हो जाती है।

कखलाई निवारणार्थ मन्त्र

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहां बैठा हनुमन्ता आई पकै न फूतै चलै न पीठ रक्षा करै हनुमन्त वीर, दुहाई गुरू गोरखनाथ की शब्द साचा पिण्डकांचा फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा, सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

नीम की टहनी से २१ बार झाड़कर भूमि की मिट्टी उस पर लगा दे तो तीन ही दिन में कखलाई बैठ जायगी।

रींघनवायु का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको ॐ नमो कामरूदेसकामा७ा देवी जहां बसै इस्मायल जोगी इसमायलजोगीके पुत्री तीन एक तोड़ै एक मिछोड़ै एक रींघनवाय तोड़ै शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मङ्गल और शनिवार को मणिहारी की मुंगरी से झाड़ने से आराम होता है।

सुखप्रसव

मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद्‌गर्भ एहि माचिरमाचिर स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से ८ बार जल को अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलाने से उसे सुखपूर्वक प्रसव हो जायगा।

कुछ अन्य मन्त्र

ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय विकासय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्वने प्रतिचालितसकलसुरासुरचित्ताय युवतीभगवासिसे ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा। इति मन्त्रः।

उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक के द्वारा दूध को अभिमन्त्रित करके गर्भवती को पिलाने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

नेत्रपीडा निवारण मन्त्र

ॐ नमो श्रीरामकी धनुही लक्ष्मणका बाण आंख दर्दकरै तो लक्ष्मण कुमारकी आन। इति मन्त्रः।

नीम की टहनी से इस मन्त्र को पढ़ते हुये २१ बार झाड़ने से तीन दिन में आँख की पीड़ा दूर हो जायगी—इसमें सन्देह नहीं है। यह अनुभूत प्रयोग है।

अन्यत्। ॐ नमो झलमलजहरभरी तलाई अस्ताचल पर्वतसे आई जहां बैठा हनुमन्ता जाई फूटै न पाकै न पीड़ा जती हनुमन्त हरै पीड़ा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़कर नीम की टहनी से झाड़ने से पीड़ा मिट जाती है।

कण्ठवेल का मन्त्र

ॐ नमो कण्ठवेल तूं द्रुमद्रुमाली सिरपर जकड़ी वज्रकी ताली गोरखनाथ जागता आया बढ़ती बेलको तुरत घटाया जो कुछ बची ताहि मुरझाया घटगई वेल बढ़न नहिं पावै बैठी तहां उठननहिं पावै फूटै और पीड़ा करै तो गुरू गोरखनाथकी दुहाई सत्य नाम आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

सात दिन चाकू की नोक से झाड़े और भूमि पर २१ लकीर बनाता जाय। इससे कण्ठवेल समाप्त होता है।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरूको कालो विच्छूं कांकरवालो उत्तर विच्छूं नकर टालो उतरै तो उतारूं चढ़ै तो मारूं गरुड़मोरपङ्ख हकालू शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा। इस मन्त्र से झाड़ने से विच्छूका विख उतर जाता है।

अन्यत्। कालीविच्छू कङ्करवाला हरी पूंछ भौंराला सोनाकागाडू रूपेका पतनाला आठ गांठ नौकोर नीचे विच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकार विच्छू रेतो बावन वीर नीड निकोरके कौन वैदमानुषपर गया खातेजाते लागी वार उतर रे विच्छू तुझे ख्वाजममन्दीनचिरागतृष्टीकी आन। इति मन्त्रः।

जहाँ तक विच्छू चढ़ा हो वहाँ पकड़कर बुहारी (झाड़ू) से झाड़ दीजिये। जैसे-जैसे दर्द नीचे उतरे वैसे-वैसे आप भी नीचे पकड़ते जाँय। जब दंश स्थान पर दर्द उतर आवे तब झाड़ना बन्द कर दे और दंश स्थान पर तेलिया मोहरा पानी में घिसकर लगा दे। इससे दंश स्थान की पीड़ा भी समाप्त हो जायगी।

सर्प झाड़ने का मन्त्र

खं खः। इति द्व्यक्षरो मन्त्रः।

जब कोई सर्प काटने का समाचार दे तब पानी को मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके समाचार देनेवाले व्यक्ति को देकर कहे कि 'जाकर इस पानी को सर्पदष्ट को पिला दो।' इस पानी को पीने से सर्पविष उतर जाता है।

अन्यत्। ॐ नमो भगवति वज्रमये हनहन ॐ भक्ष भक्ष ॐ खादय खादय ॐ अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्माङ्गि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रकराञ्चिते पूर्वां दिशं बन्ध बन्ध ॐ दक्षिणां दिशं बन्धबन्ध ॐ पश्चिमो दिशं बन्ध-बन्ध ॐ उत्तरा दिशं बन्धबन्ध ॐनागान् बन्धबन्धसॐ नागपत्नीं बन्धबन्ध ॐ असुरान् बन्धबन्ध ॐ यक्षराक्षसपिशाचान् बन्धबन्ध ॐ प्रेतभूतगन्धार्वादयो ये केचिदुपद्रवास्तेभ्यो रक्षरक्ष ॐ ऊर्ध्वं रक्षरक्ष ॐ अधो रक्षरक्ष ॐ क्षुरिके बन्धबन्ध ॐ ज्वल महाबले घटघट ॐ मोदिमोदि सटावलि वज्राङ्गि वज्रप्रकारे हुं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फूं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्षरक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वाङ्गानि रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

जल को मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करके पिलाने से विष उतर जाता है।

अन्यत्। ॐ हुं सूं ॐ नालकान्तिदंष्ट्रिणि भीमलोचने उग्ररूपे उग्रतारिणि छिलि किलि रक्त लोचने किलि किलि घोरनिःस्वने कुलु कुलु ॐ तडिज्जिह्वे निर्मांसे जटामुण्डे कट कट हन महोज्ज्वले चिलिचिलि मुण्डमालाधारिणि। स्फोटय मारय मारय स्थावरं विषं जङ्गमं विषं नाशय नाशय ॐ महारौद्रि पाषाणमयि विषनाशिनी वनवासिनी पर्वतविचारिणि कह कह ॐ हस नम नम दह दह क्रुध क्रुध ॐ नीलजीमूतवर्णे विस्फुर ॐ घण्टानादिनि ललज्जिह्वे महाकाये क्षुं हुं आकर्ष आकर्ष विषं धून धून हेहर यं ज्वालामुखि वज्रिणि महकाये अमुकस्य स्थावरजङ्गमयिषं छिन्दि छिन्दि किटि किटि सर्वविषनिवानिणि हुं फट्। इति मन्त्रः।

पहाड़ के एक नीलवर्ण पत्थर के टुकड़े को अभिमन्त्रित करके दष्ट स्थान पर चिपका दे और मन्त्र पढ़ता जाय। जब तक विष रहेगा तब तक पत्थर दष्ट स्थान पर

चिपका रहेगा और विष के समाप्त होने पर स्वयं ही पत्थर अलग हो जायगा—इसमें सन्देह नहीं है।

सर्पकीलन का मन्त्र

ॐ नमो सर्पा रे तूं थूलं मथूला मुख तेरा बना कमलका फूला सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरी दादी भुवा जिनने तोकूं गोद खिलाया सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरा रतन कटोरा जामे तोकूं दूध पिलाया सर्पा रे सर्पा बीज कीलनी बीजपान मेरा कीला करै जो धाव तेरी डाढ भस्म हो जाय गुरु गोरख भी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करके वर्ष दिन पर्यन्त प्रतिदिन सवा पहर तक असंख्य बार जपे तो यह सिद्ध हो जाता है फिर इस सिद्ध मन्त्र से आरने उपले की भस्म को सर्प पर डालने से उसकी डाढ़ बन्द हो जायगी। फिर साधक उस सर्प को खिलौने की भाँति उठा सकता है।

सर्प कीलने का मन्त्र

बजरी बजरी बजरकिवाड़ बजरी कीलूं आसपास मरै सांप होय खाख मेरा कील्या पथर कीलै पथर फूटै न मेरा कीला छूटै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से साँप को एक कङ्कण मारने से उसका उत्कीलन हो जायगा।

सर्पों को भगाने का मन्त्र

ॐ प्लः सर्वकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से सात बार मिट्टी को अभिमन्त्रित करके घर में डाल दे तो सर्प भाग जाँयेगे।

पागल कुत्ते का मन्त्र

ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी जहां वसै इसमायलजोगी इसमायलजोगी का झामरा कुत्ता सोनाकी डाढ रूपा का कूंड़ा बन्दर नाचै रीछ बजावै सीता बैठी औषध बांटै कूवरका विष भाजै शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से झाड़ देने से पागल कुत्ते का विष उतर जाता है और किसी तरह की पीड़ा नहीं होती।

आधासीसी का मन्त्र

ॐ नमो वनमें व्याई वानरी, उछल वृक्षपै जाय। कूदकूद शाखानपै,

कच्चे वनफल खाय। आधा तोड़ै आधा फोड़ै, आधा देय गिराय। हंकारत हनुमानजी, आधा सीसी जाय। इति मन्त्रः।

वननें व्याई अञ्जनी, कच्चे वनफल खाय। हांकमारी हनुमन्तने, इस पिण्डे से आधासीसी उतरजाय। इति मन्त्रः।

इन मन्त्रों से विभूति से झाड़ने से आधा सीसी दूर होकर पीड़ा समाप्त हो जाती है।

निम्नलिखित ६ कोष्ठ के यन्त्र को लिखकर सिर में बाँधने से आधा सीसी दूर होती है। निम्नलिखित चार कोष्ठ के यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर माथे में बाँधने से निश्चित रूप आधा सीसी नष्ट हो जाती है। यह यन्त्र अत्यन्त गुप्त है।

कमल झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो वीरवैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषादी पीलियाकूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहैन एकनिशान जो कहीं रहे जाय तो हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्रं ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

काँसे की कटोरी में तेल भरकर रोगी के सिर पर रखकर मंत्र पढ़े और कुशा से उस तेल को चलाता जाय। जब तेल पीला हो जाय तब उतार ले। इससे पीलिया (कवल) रोग तीन दिन में अच्छा हो जायगा।

दर्द और थनपल को झाड़ना

ॐ वनमें जाई वानरी, जिनजाया हनुमन्त्र। सज्ज खधा ठाकिया, हो गया भस्मीभूत। इति मन्त्रः।

स्त्री का बांया स्तन दुखे तो अपने दाहिन, और यदि उसका दाहिना स्तन दुखे तो अपने बाये स्तन को कण्डे की राख से ७ बार झाड़ने से स्त्री को आराम हो जायगा।

जमोगा का मन्त्र

सुनरे जमोगे मतिकर अभिमान तेरा नहीं दुनिया में ठिकान, बालक दिया है श्रीभगवान बचोगे नहीं तूं जिमी आसमान दुहीई औघड़की छू खेदके मारता हूं वान। इति मन्त्रः।

रामसर की तर-कमान बनावे और मन्त्र पढ़कर तीर बालक को मारे तो जमुवे की पीड़ा से वह छूट जायगा। यह अनुभूत प्रयोग है।

दबा पसली झाड़ने का मन्त्र

सत्य नाम आदेस गुरूका उंखंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पर्वतों गया सवालाख पर्वतों जाय कहा करैगा सवाभार कोईला करैगा सवाभार

चिपका रहेगा और विष के समाप्त होने पर स्वयं ही पत्थर अलग हो जायगा—इसमें सन्देह नहीं है।

सर्पकीलन का मन्त्र

ॐ नमो सर्पा रे तूं थूलं मथूला मुख तेरा बना कमलका फूला सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरी दादी भुवा जिनने तोकूं गोद खिलाया सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरा रतन कटोरा जामे तोकूं दूध पिलाया सर्पा रे सर्पा बीज कीलनी बीजपान मेरा कीला करै जो धाव तेरी डाढ भस्म हो जाय गुरु गोरख भी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करके वर्ष दिन पर्यन्त प्रतिदिन सवा पहर तक असंख्य बार जपे तो यह सिद्ध हो जाता है फिर इस सिद्ध मन्त्र से आरने उपले की भस्म को सर्प पर डालने से उसकी डाढ़ बन्द हो जायगी। फिर साधक उस सर्प को खिलौने की भाँति उठा सकता है।

सर्प कीलने का मन्त्र

बजरी बजरी बजरकिवाड़ बजरी कीलूं आसपास मरै सांप होय खाख मेरा कील्या पथर कीलै पथर फूटै न मेरा कीला छूटै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से साँप को एक कङ्कण मारने से उसका उत्कीलन हो जायगा।

सर्पों को भगाने का मन्त्र

ॐ प्लः सर्वकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से सात बार मिट्टी को अभिमन्त्रित करके घर में डाल दे तो सर्प भाग जाँयेगे।

पागल कुत्ते का मन्त्र

ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी जहां वसै इसमायलजोगी इसमायलजोगी का झामरा कुत्ता सोनाकी डाढ रूपा का कूंड़ा बन्दर नाचै रीछ बजावै सीता बैठी औषध वांटै कूवरका विष भाजै शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से झाड़ देने से पागल कुत्ते का विष उतर जाता है और किसी तरह की पीड़ा नहीं होती।

आधासीसी का मन्त्र

ॐ नमो वनमें व्याई वानरी, उछल वृक्षपै जाय। कूदकूद शाखानपै,

कच्चे वनफल खाय। आधा तोड़ै आधा फोड़ै, आधा देय गिराय। हंकारत हनुमानजी, आधा सीसी जाय। इति मन्त्रः।

वननें व्याई अञ्जनी, कच्चे वनफल खाय। हांकमारी हनुमन्तने, इस पिण्डे से आधासीसी उतरजाय। इति मन्त्रः।

इन मन्त्रों से विभूति से झाड़ने से आधा सीसी दूर होकर पीड़ा समाप्त हो जाती है।

निम्नलिखित ६ कोष्ठ के यन्त्र को लिखकर सिर में बाँधने से आधा सीसी दूर होती है। निम्नलिखित चार कोष्ठ के यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर माथे में बाँधने से निश्चित रूप आधा सीसी नष्ट हो जाती है। यह यन्त्र अत्यन्त गुप्त है।

कमल झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो वीरवैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषादी पीलियाकूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहैन एकनिशान जो कहीं रहे जाय तो हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्रं ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

काँसे की कटोरी में तेल भरकर रोगी के सिर पर रखकर मंत्र पढ़े और कुशा से उस तेल को चलाता जाय। जब तेल पीला हो जाय तब उतार ले। इससे पीलिया (कवल) रोग तीन दिन में अच्छा हो जायगा।

दर्द और थनपल को झाड़ना

ॐ वनमें जाई वानरी, जिनजाया हनुमन्त्र। सज्ज खथा ठाकिया, हो गया भस्मीभूत। इति मन्त्रः।

स्त्री का बांया स्तन दुखे तो अपने दाहिन, आरै यदि उसका दाहिना स्तन दुखे तो अपने बाये स्तन को कण्डे की राख से ७ बार झाड़ने से स्त्री को आराम हो जायगा।

जमोगा का मन्त्र

सुनरे जमोगे मतिकर अभिमान तेरा नहीं दुनिया में ठिकान, बालक दिया है श्रीभगवान बचोगे नहीं तूं जिमी आसमान दुहीई औघड़की छू खेदके मारता हूं वान। इति मन्त्रः।

रामसर की तर-कमान बनावे और मन्त्र पढ़कर तीर बालक को मारे तो जमुवे की पीड़ा से वह छूट जायगा। यह अनुभूत प्रयोग है।

दबा पसली झाड़ने का मन्त्र

सत्य नाम आदेस गुरूका उंखंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पर्वतों गया सवालाख पर्वतों जाय कहा करैगा सवाभार कोईला करैगा सवाभार

कोईलाकर कहाकरैगा हनुमन्त वीर नव चन्द्रहासखङ्ग गढ़ैगा नव चन्द्रहास खङ्ग घड कहाकरैगा जानवा डौरू पांसलीवाय काटकूट खारीसमुद्र नाखैगा जगद्गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

तिल के तेल और सिन्दूर से झाड़ने से आराम होगा।

सर्व रोग निवारक मंत्र

"पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत कटिक शिला कटिक शिला पर अंजनी जिन पाया हनुमान नेहला टेहला काँख की कखाई पीछे की आदटी कान की कनफेट रांग की बद कण्ठ की कण्ठमाल घुटने का डमरु डाढ़ की डढ़शूल पेट की ताप तिल्ली फिया इतने को दूर करे भस्मन्त नातर तुझे माता अंजनी की दूध पिया हराम मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरू का।"

विधि—शनिवार को व्रत रख कर नियमपूर्वक रहकर एक माला उपरोक्त मंत्र की जपे। इसी प्रकार सात शनिवार तक करता रहे। ऐसा करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

कंखाई अदीठ, कनफेर, बद (एक प्रकार का चर्म रोग), कण्ठमाला, दाढ़ का दर्द इन्हें राख से झाड़ना चाहिए। डमरु को, ताप तिल्ली को छुरी से झाड़ें उपर्युक्त सभी रोगों के लिए भभूति बना कर देना चाहिए।

बवासीर नाशक मंत्र

"ओम नमो नमो सिद्ध नमो चौरासी उदर जड़ी रक्त सड़ी चूवे मत खड़ी पड़ी तोहे देखे लोना चमारिन धूप गुगल की दी अग्यारी जो रहे बवासीर तो हजार हराम गुरू गोरख की शक्ति आन गौरी माई की।"

विधि—दीपावली, होली अथवा ग्रहण काल में यह मंत्र जप कर सिद्ध किया जाता है। सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित काली मिट्टी की पट्टी पेडू पर बाँधें तथा अभिमंत्रित लाल धागा कमर में बाँधें। जिस व्यक्ति को यह रोग है वह नित्य शौच के जल को अभिमंत्रित कर प्रयोग करे तो लाभ होता है।

पीलिया झाड़ने का मंत्र

"ओम नमो वीखेताल असराल नारसिंह देव तुषादि पीलिया कूं भिदाती कौरे झौरे पीलिया रहे न नेक निशान जो कहीं रह जाए तो हनुमान की आन मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।"

विधि—श्री हनुमान जी की मूर्ति के आगे नित्य एक हजार मंत्रों का जप कर इक्कीस दिनों तक इक्कीस हजार बार जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

4Books.com

साधना पूर्ण होने के बाद पीलिया ग्रस्त रोगी को सामने बैठाकर काँसे की कटोरी में तेल डाल कर उसके सिर के ऊपर रखें और तेल को कुश से हिलाते हुए इक्कीस बार मंत्र बोलें। ऐसा करने पर यदि कटोरी का तेल पीला हो जाए तो समझना चाहिए कि मंत्र सिद्ध हो गया है। इसी विधि को तीन दिन करते रहने से पीलिया का रोग मुक्त हो जाता है।

रोगी से हनुमानजी पर प्रसाद और गाय को घास, पक्षियों को अनाज आदि पुण्यप्रद कर्म करा देना चाहिए।

कण्ठवेल पीड़ा मुक्ति मंत्र

''ओम नमो कण्ठवेल महावेल तुम दरद दियो अब हिलो चलो तुरतहि जाओ सात लोक सात समुन्दर पार जा के डूबो हमें बचाओ न जाओ तो बहत्तर हजार चमार की नाद में गिरो दुहाई बाबा शंकर की गौरा पार्वती की।''

विधि—किसी भी नवरात्रों में प्रतिदिन एक माला जप कर उपरोक्त मंत्र को सिद्ध करलें। फिर आवश्यकता पड़ने पर रोगी को मोरपंख से झाड़ें। सोमवार से रविवार तक प्रतिदिन सात बार झाड़ देने से कण्ठवेल सूख जाती है और रोगी को पूर्ण लाभ मिलता है।

बालज्वर नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश भगवती बालकष्ट, बाल रोग, बाल पीड़ा दूर कर सर्व विधि सुख दे, जो मेरा आदेश नहीं माने तो राजा राम की दुहाई।

प्रयोग—शिशु यंत्र, (जो कि ताबीज की तरह होता है) पर केशर की तिलक लगाकर नित्य एक हजार मंत्र जप करें। इस प्रकार तीन दिन करने पर वह यंत्र विशेष प्रभावशाली हो जाता है, इसके बाद वह यंत्र जिस बालक के गले में काले धागे में पहनाया जाय तो बालक का बुखार या अन्य किसी भी प्रकार का रोग दूर हो जाता है, और वह स्वस्थ हो जाता है। इस **'चमत्कारी तावीज'** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केंन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

नक्सीर स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो गुरु की आज्ञा सार-सार महासागरे बांधूं सातवार फिर बांधूं तीन बार लोहे की सार बांधे हनुमन्त वीर पाके न फूते तुरत रोखे।

उपर्युक्त मंत्र की सिद्ध करके आवश्यकता पड़ने पर भस्म से ७ बार रोगी को झाड़ना चाहिए।

मसान रोग (सूखा रोग) नाशक प्रभावशाली झाड़ा

मसान रोग सिर्फ बच्चों में ही पाया जाता है। यह एक अत्यंत खतरनाक बीमारी है। इसके प्रकोप से बच्चा दिन-ब-दिन बिना वजह कमजोर होता चला जाता है।

'सफेद मसान गूरू गारख़ की आन यमदण्ड मसान काल भैरों की आन सुकिया मसान लोना चमारी की आन फुलिया मसान गोरे भेरों की आन हल्दिया मसान ककोड़ा भैरों की आन पीलिया मसान दिल्ली की योगिनी की आन कमेदिया मसान रामचन्द्र की आन कीकड़िया मसान कालिका की आन सिलसिलिया मसान वीर मुहम्मद पीर की आन।'

यदि किसी बालक को मसान रोग (अर्थात सूखा रोग) का प्रकोप हो गया हो तो इस मंत्र से दिया गया झाड़ा अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होता है।

कलिया मसान नामक एक दुष्ट प्रेतात्मा के कोप भाजन का शिकार हुए अबोध ही मसान रोग से ग्रसित होते हैं। अतएव भूत-प्रेतादि उतारने के झाड़ों की तरह ही यह झाड़ा दिया जाता है। इस झाड़े को मोरपंख से सुबहो-शाम दोनों ही समय पर दिया जाता है।

एक बार में पूरा मंत्र पढ़कर फिर मोरपंखी से झाड़ा देवें। इस प्रकार एक बार में सात झाड़ें देवें। लगातार दोनों समय झाड़ा देने से वह रोगी बालक सात दिनों में पूर्णतः स्वस्थ हो जाएगा।

आधाशीशी नाशक मंत्र

'बन में जाई बंदरी जो आधा फल खाई खड़े मुहम्मद हांकवें आधा सीसी जाई।'

किसी भी ग्रहण के अवसर पर उक्त मंत्र को दस हजार बार जाप करके सिद्ध कर लें।

अब आधासीसी (माइग्रेन) के सिर पर २१ बार इस मंत्र को पढ़ कर फूंक मार देने से आधासीसी का रोग दूर हो जाएगा।

नेत्र बाधा निवारण मंत्र

'ओम अगाली गगाली अताल पताल गर्द मर्द अदार कार फट उत्कन हूठ।'

नेत्र बाधाओं युक्त रोगी को रविवार के दिन उक्त मंत्र का जाप करते हुए नीम के पत्तों के झोहरे (डाल) से इक्कीस बार झाड़ा देवें तो नेत्र बाधा से मुक्ति मिल जाएगी।

अन्न पचाने का मंत्र

'अन्न हाथ वज्र हाथ, भस्म करे सब पेट का भात, दुहाई हजरत शाह कुतुब आलम की।'

पाचन शक्ति नियमित करने के लिए यह एक स्वयंसिद्ध तथा प्रभावशाली मंत्र है। खाना खाने के पश्चात् अपने हाथ को इस मंत्र से ३१ बार अभिमंत्रित करके

44Books.com

पेट पर फेरें तो भोजन तुरन्त ही पच जाएगा। इस मंत्र के नियमित प्रयोग से पाचन संस्थान सुदृढ़ हो जाता है।

आँख की फूली काटने हेतु

'उत्तर कूल काछ सूत योगी का बाछ इस्माइल योगी की बेटी एक माशे चूल्हा एक काटे फूला काछ।'

यह एक स्वयंसिद्ध मंत्र है। फिर भी किसी शुभ नक्षत्र में मात्र एक माला जप करने से भी यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

किसी को आंख की फूली हो गई हो तो इस मंत्र को पढ़कर लोहे की कील से इकत्तीस बार जमीन में ठोकें तो आँख की फूली स्वत: ही कट जाएगी।

शारीरिक पीड़ा नाशक मंत्र

'लशकर फराउन हरदी नील गर्क शुद्ध जहाँ।'

पीली मिट्टी व दही से इस मंत्र को लिखकर सिद्ध कर लें। फिर उस पीली मिट्टी के वजन के समान गुड़ लेकर बच्चों में बाँट दें तो समस्त प्रकार की शारीरिक पीड़ा का नाश हो जाता है।

बवासीर नाशक मंत्र

'खुरीसानी की दोवासाई खूनी वादी तत्वा लजाय।'

बवासीर के रोगी शौच के पश्चात् उक्त मंत्र से अभिमंत्रित जल से आबदस्त (गुदा प्रक्षालन) लेवें तो बवासीर रोग शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

'ईसा ईसा ईसा काँच कपूर के सीसा, यहव अधर जाने नहीं कोय, खूनी बादी एक न होय, दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।'

उक्त मंत्र स्वयंसिद्ध मंत्र है। बवासीर रोग से मुक्ति पाने का यह सर्वाधिक सरलतम प्रयोग है।

शौच के वक्त गुदा प्रक्षालन (आबदस्त) के लिए उपयोग में आने वाले जल को इस मंत्र से ५ बार अभिमंत्रित करके गुदा प्रक्षालन (आबदस्त) करें तो नियमित प्रयोग से कुछ ही दिनों में बवासीर दूर हो जाएगी।

सूखा रोग झाड़ने का मन्त्र

सूखा रोग का ही दूसरा नाम मसान रोग है, क्योंकि कालिया मसान नामक प्रेतात्मा की कुदृष्टि का शिकार होने पर ही बालक इसके शिकार बनते हैं। जब मसान हर समय बालक के साथ रहने लगता है, तब तो गंडे-तावीज बांधने के साथ ही यह झाड़ा देना भी अनिवार्य हो जाता है।

सपेदा मसान, गुरु गोरख की आन। यमदण्ड मसान, काल भैरों की आन। सुकिया मसान, नोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरों की

आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन। कमेदिया मसान, कालिका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मदा पीर की आन।

मसान रोग का यह झाड़ा सामान्य रूप से नजर उतारने के झाड़ों के विपरीत भूत-प्रेत उतारने के झाड़ों के समान दिया जाता है। मोरपंख के झाड़न से सुबह-शाम दोनों समय देना अधिक उचित है। यह झाड़ा देते समय आप पूरा मन्त्र पढ़ने के बाद एक बार झाड़ें और इस प्रकार सात झाड़े एक समय में दें।

सर्वरोग नाशक तान्त्रिक यन्त्र अथवा तावीज

सामग्री—शिशु स्वास्थ्य यन्त्र, घी का दीपक व अगरबत्ती।

माला—मूंगे की माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन

दिशा—पश्चिम दिशा।

जप—संख्या-तीन हजार।

अवधि—तीन दिन।

मन्त्र—**ॐ नमो आदेश भगवती भवानी बालकष्ट, बाल रोग, बाल पीड़ा दूर कर सर्व विधि सुख दे, जो मेरा आदेश नहीं माने तो राजा राम की दुहाई।**

मन्त्र सिद्ध किए हुए शिशु यन्त्र को सामने रखकर और उस पर केशर का तिलक लगाकर नित्य एक हजार मन्त्र जप करें। इस प्रकार तीन दिन करने पर वह यन्त्र विशेष प्रभावशाली हो जाता है, इसके बाद वह यन्त्र जिस बालक के गले में काले धागे में पहनाया जाए तो बालक का बुखार या अन्य किसी भी प्रकार का रोग दूर हो जाता है और वह स्वस्थ हो जाता है।

अंडकोष वृद्धि रोकने का यन्त्र

इस यन्त्र को केसर से भोजपत्र पर रविवार के दिन लिखकर, चांदी या तांबे के तावीज में करके, लाल डोरे की सहायता से दाहिने हाथ में बांधने से अंडकोष वृद्धि रुक जाती है।

यह यन्त्र अनार की कलम से लिखा जाता है तथा गले में भी बांधा जा सकता है।

ॐ नमो नलाई-ज्यां बैठ्या हनुमत आई पके न फुटे, चले बाल जति रक्षा करे। गुरु रखवाला, शब्द साचा पिंड काचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

नियमित मासिक-धर्म हेतु तान्त्रिक टोटके

एक सादा पान बनवाकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए सात बार अभिमन्त्रित करें और रोगिणी को खिला दें तो उसका अनियमित मासिक धर्म ठीक और नियमित समय पर हो जाएगा।

'ॐ नमो आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु का। तोड़ूं गांठ औंगा ठाली। तोड़ दूं लाय। तोड़ दूं मरित। परित देकर पाय। यह देख हनुमन्त दौड़कर आये। अमुक की देह शांति पाये। रोग कूं वीर भगाये। रोग न नसै तो नरसिंह की दुहाई। फुरो हुकुम खुदाई।'

थोड़ा-सा अदरक लेकर इस मन्त्र से सात बार फूंककर मासिक धर्ममें होने वाली पीड़ाओं से ग्रसित स्त्री को खिलाने से मासिक-पीड़ा शांत हो जाती है।

'ॐ नमो आदेश मनसा माता का। बड़ी-बड़ी अदरख। पतली पतली रेश। बड़े विष के जल फांसी दे। शेष गुरु का वचन न जाए खाली। पिया पंच मुण्ड के बाभ पद ठेली। विषहरी राई की दुहाई।'

मृतवत्सा दोष निवृत्ति हेतु दो मन्त्र

प्रथम मन्त्र—**ओं परब्रह्म परमात्मने अमुकी, गर्भ दीर्घजीवी सुतें।**

मृतवत्सा दोष निवारण के लिए ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को १००८ मन्त्र का विधिपूर्वक जप करें तो सिद्धि होती है।

द्वितीय मन्त्र—**ॐ अदिते दिते दिव्यां गति मासूति सुरि रस्मच गर्भा ठहः ठहः ठहः।**

साधक को चाहिए कि वह स्नानादि से निवृत्त होकर उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए काचनी के पेड़ के नीचे जाए। सोमवार प्रदोष के दिन जब रात्रि में एक प्रहर रह जाए तो जाने का वही समय उपयुक्त रहेगा। धूप-दीप और नैवेद्य आदि से वृक्ष का पूजन करके पकी हुई फली तोड़ लाएं। गाय के दूध में इसके बीजों से मिश्रित खीर बनावें। गर्भिणी स्त्री को स्नानादि से पवित्र कराके सफेद मिट्टी से लीपे हुए चौके अथवा किसी परम पवित्र स्थान पर बिठाएं और उसे आदेश दें कि अदिति माता का ध्यान करते हुए खीर का सेवन करे। खीर के केवल उसे ७ ग्रास ही खाने चाहिए। स्त्री को इन नियमों का भी पालन करना चाहिए कि जब तक शिशु उत्पन्न न हो जाए तब तक किसी भी दूसरी स्त्री की छाय उस पर नहीं पड़नी चाहिए। उसे कुशा के आसन पर सोना चाहिए और दिन में एक बार ही भोजन करना चाहिए। इस प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाले शिशु की सुरक्षा हो सकती है।

मृतवत्सा नारी हेतु झाड़ा

मृतवत्सा दोष से ग्रसित स्त्री का झाड़ा करने के लिए मछली पकड़ने वाला कांटा लाएं और उसे इस मन्त्र से सात बार फूंकें। इसी मन्त्र को जपते हुए रोगिणी का झाड़ा करें और इस कांटे को तावीज में भरकर कमर में पहनवा दें। वह निश्चित रूप से जीवित संतान उत्पन्न करेगी।

छोटी मोटी खप्पर, तूं धरती कितना गुण। जियके बल काट कू जान विज्ञान। दाहिनी ओर हनुमान रहे, बायीं ओर चील। चहुं ओर रक्षा करे वीर बानर नील। नील वानर की भक्ति लखि न जाय। जेहि कृपा मृतवत्सा दोष न आय। आदेश कामरू कामाख्या माई का। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

गर्भाशय के विकार मिटाने का झाड़ा व गंडा

'ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी। जाल बांधूं। जलबाई बांधूं। बांध दूं जल के तीर। पांचों दूत कलुवा बांधूं। बांधू हनुमन्त बीर। सहदेव की आन व अर्जुन का बाण। रावण रण को थाम ले नहीं तो हनुमन्त की आन। शब्द सांचा। पिंड कांचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

इस मन्त्र का जप करते हुए स्त्री का झाड़ा करें। लाल धागा लेकर सिर से पांव तक नापें और इस मन्त्र को उच्चारित करते हुए उसके ऊपर २१ गांठें लगाएं और स्त्री को धारण करवा दें।

ज्वरों के लिए झाड़ा

सभी प्रकार के बुखारों को उतारने में यह शाबर मन्त्र समान रूप से समर्थ है। रोगी को उत्तर की तरफ मुंह करके बैठा दें और स्वयं उसके सम्मुख बैठकर सात बार यह मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ा दें। लगातार तीन दिन सुबह अथवा शाम को यह झाड़ा दें, परन्तु तीनों दिन स्थान और समय एक ही रखें।

दोई भाई ज्वर सुरा महावीर नाम। दिन रात खटि गैर महावीर के नाम।। फर छुद से छतीस रूप महूर्तमों धराय। नाराज नामूर के घर दुआर फिराए।। ज्वाला ज्वरमाल ज्वर काला ज्वर झुमकि दार। ज्वर, उमा ज्वर, भूता ज्वर, झुमकि घोड़ा ज्वर।। भूमा, तिजारी ओ चौथाई। सवंग को भंग घोटन शिव ने बुझाई।। यह ज्वर-ज्वर सुरा ते कौन और तकाव। शीघ्र अमुक अंग छोड़ तुम जाव।। यदि आंगन में तू भूलि भटिकाय। तो महादेव के लागा तू खाय।। आदेश कामरू कामाख्या माई। आदेश हाड़ी दासी चण्डा की दोहाई।।

दाँत दाढ़ का दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरु जी का।। बन में ब्याई अंजनी। जिन जायाहनुमन्त।। कीड़ा मकुड़ा माकड़ा। ये तीनों भस्मन्त।। गुरु की शक्ति। मेरी भक्ति।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण के समय ११ माला जप हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर आवश्यकता के समय नीम की डाली लेकर दर्द वाले स्थान पर छुआते हुए मंत्र जपते हुए ही २१ बार झाड़ा करें तो उस व्यक्ति का दाँत/दाढ़ का दर्द कुछ ही क्षणों में दूर हो जायेगा तथा वह व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा, फिर रोगी व्यक्ति से पीला प्रसाद बटवा दें।

वायु नाशक हनुमान् मन्त्र

पर्वत पर बाइल काग। कै अण्डे, कै बच्चे? सात अण्डा, सात बहिन।। कौन-कौन बहिन? दाँत-चमोकनी मुँह-चमोकनी। आँख-चमोकनी। पैर-चमोकनी।। हाथ-चमोकनी।। बाय-बाय री हरहुल्ला। आवेगा अनुमान बाबा।। मारेगा लोहे का सोटा।। भाग-भाग रे बहन चोदबाय, सात समन्दर पार।। हुई जाय।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री महावीर बजरंगी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर आवश्यकता के समय वायु-रोग से पीड़ित व्यक्ति का झाड़ा लोहे की वस्तु से करें तो पीड़ित व्यक्ति वायु-रोग से निदान पाएगा।

समस्त व्याधियाँ नाशक हनुमान् मन्त्र

कौरव-पाण्डव कहाँ गए? बन में गए। बन में क्या करेंगे? बन कटवाएँगे बन कटा के क्या करेंगे? सहस्त्र मन कोयला करेंगे? सहस्त्र मन कोयले का क्या करेंगे? छप्पन-छुरी बनाएँगे। छप्पन-छुरी का क्या करेंगे? बाय को, चीस को, भड़क को, फुँसी को, फोड़े को, टोक को, नजर को, सिर-दर्द को काट-पीट के खारे समुन्दर में बहाएँगे। खारे समुन्दर में बहा के क्या करेंगे? बहोड़ (बहुर) के उल्टे न आवे ईश्वरो वाचा, पिण्ड कांचा मेरे गुरु का शब्द सांचा देखूँ बाबा हनुमान। तेरे शब्द का तमाशा

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री राम-दूत हनुमान विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए १ माला का जप प्रतिदिन करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय मंत्र में कहे समस्त रोग-दोष का झाड़ा करने से न श होता है।

बाय रोग झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो तडम। उतड भड तेल करे।। दीजे बाती तैल बरै। गलत-सलत।। तू बाई रोग। निनाई रहै:। तो यति हनुमन्त। की दुहाई फिरै।। शब्द सांचा। पिण्ड काँचा।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मन्त्र को ग्रहण-काल, होली, दीपावली में श्री बजरंगी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर इस मंत्र से बाय वाले रोगी का झाड़ा "भस्म" से करें तो रोगी बाय-रोग से निदान पाये।

कान दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र

आसमीन नगोर। वन्ही कर्म न जायतं।। दोहाई महावीर की। जो रहे कान की पीर।। अंजनी-पुत्र कुमार। वायु-पुत्र महाबल को मार।। ब्रह्मचारी हनुमन्तई। नमो-नमो।। दुहाई महावीर की। जो पीर मुण्ड की।।

विधि—इस मंत्र की साधन दीपावली की रात्रि में श्री रामदूत हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों को ध्यान में रख कर पाँच माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होता है फिर जब कोई कान दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो साँप के बिल की मिट्टी लेकर इस मंत्र को जपते हुए २१ बार झाड़ा करे तो रोगी दर्द में आराम पाएगा।

अण्ड वृद्धि व सर्प भगाने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी का। जैसे के लेहु रामचन्द्र।। कबूत ओसई करहु राध। बिनि कबूत पवनपूत।। हनुमन्त धाउ हर-हर। रावन कूट मिरावन श्रवइ।। अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड। अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ।। वाजं गर्भ हिश्रवइ स्त्री। षीलहि श्रवइ शाप हर-हर।। जंबीर हर जंबीर हर-हर। शब्द सांचा।। पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र।। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान ११ दिन का है, साधक श्री हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रातिदिन २ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर इस मंत्र को जपते हुए अण्डकोश को हलके हाथ से मले तथा २१ बार जल को शक्तिकृत कर रोगी को पिलाए तो अण्डकोश वृद्धि शान्त हो जाती है, तथा मिट्टी के एक ढेले को २१ बार अभिमंत्रित कर साँप के बिल पर रखने से साँप निकल जाता है।

४. यदि बवासीर के मस्से फूले हुए हों और वे विशेष कष्ट दे रहे हों, तो गेंडे की जननेन्द्रिय को सुखाकर उसका कंकण बनवा लें और उसे रोगी के दाहिने

हाथ की कलाई में धारण करवायें, तो सभी मस्से सूख जायेंगे तथा बवासीर की पीड़ा भी शान्त हो जायेगी।

हवा आदि रोग दूर करने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी का।। काली चिड़ी चिग-चिग करे। धोला आवे वाते आवे हरे।। यती हनुमान हाँक मारे।। मथवाई और वाई जाये भगाई। हवा हरे।। गुरु को शक्ति। मेरी भक्ति।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को होली या दीपावली की रात्रि को किसी कुएँ के ऊपर श्री हनुमान् जी की प्रतिमा स्थापित कर हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए, इस मन्त्र का अनगिनत जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय पृथ्वी पर मंत्र का जाप करते हुए २१ रेखाएं सीधी खींचे फिर रोगी को उन रेखाओं के पास बिठा कर इन रेखाओं के ऊपर रोगी के दोनों हाथ रखवा दें पुन: इन मंत्र से रोगी का २१ बार झाड़ा मोर पंख से या लोहे की वस्तु से करें, झाड़ा करते समय रोगी अचानक या अंजाने में आगे की ओर खिसक पड़ेगा तो उसकी मथवाय, वाय, हवादि रोग उसी क्षण नष्ट हो जाएँगी और वही सुखी होगा।

दाद झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ हाथ वेगे चलाई। आदि-नाथ, पवन-पूत।। हनुमन्त कर मोरकत। मेरु चाल, मन्दिर चाल।। नव-ग्रह चाल, दोष-चाल। दिनाई चाल, डोरी चाल। इन्द्रहि चाल, चाल-चाल। हनुमन्त बिना, सह-काल।। उठि विषि तरु-वर चाल। हम हनुमन्ते मुगरे।। लिंगडा परोरे वर्ध छले। तरुयरी घानपरि हि।। यष अष्टोत्तर-शत व्याधि। लावरे विशालाव अहरो।। विष आह।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण काल या दीपावली में श्री राम दूत हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए ११ माला जप व दशांश हवन करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर ताँबे के कलश में शुद्ध जल भर कर २१ बार शक्ति-कृत कर दाद-वाले व्यक्ति को पिलायें, यह क्रिया नित्य करें जब तक दाद न दूर हो जाय।

आधा शीशी विनाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ कारी चिरई चौकही। राव तीरे बासा।। या किसी हाँक दे हनुमन्त वीर, आधा-शीश विनाशा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में पवन-पुत्र हनुमान् विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर

आधा-शीशी दर्द से पीड़ित व्यक्ति का उपलों की राख से झाड़ा करने से आधा-शीशी का दर्द दूर होता है।

कान की पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

वनरा गाँठि वानरी। तो डाँटे हनुमान, कंठ।। बिलारी, बाधी, थनैली, कर्ण मूल, सम जाइ।। श्री रामचन्द्र की बानी। पानी पथ होइ जाइ।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान सात दिन का है, साधक अंजनी-पुत्र श्री बीर बजरंगी के समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा। फिर जब कान की पीड़ा से व्यक्ति आये तो मोर पंख और भस्म से २१ बार झाड़ा करें, तो रोगी व्यक्ति की पीड़ा दूर हो, वह सुखी होवेगा।

नकसीर रोग निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरू जी का।। सार-सार। महा-सागरे बाँधूं।। सात बार फिर बाँधूं। तीन बार लोहे की।। तार बाँधूं। सार बाँधेहनुमन्त वीर।। पाके न फूटे। तुरन्त सेखे।। आदेश। आदेश। आदेश।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में ११ माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, साधन में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करें एवं जब किसी व्यक्ति के नाक से रक्त गिर रहा हो तो राख लेकर इस मन्त्र को जपते हुए २१ बार नाक का झाड़ा करें तत्काल ही नकसीर बन्द हो जाएगी और पीड़ित व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा।

समस्त रोग शान्ति का हनुमान् मन्त्र

पर्वत ऊपर पर्वत। पर्वत ऊपर स्फटिक शिला।। स्फटिक शिला पर अंजनी। जिन जाया हनुमन्त।। नेहला-टेहलाकाँख की कखराई।। पीछे की आदटी। कान की कनफेट।। राल की बद। कष्ठ की कष्ठमाला।। गुटने का डहरु। दाढ़ की दढ़शूल।। पेट की ताप, तिल्ली किया। इतने को दूर करे।। भस्मंत न करे तो तुझे माता अंजनी का।। दूध पिया हराम। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु जी का।।

विधि—जो साधक ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो वह इस मंत्र का जप करते हुए रोगी का झाड़ा करे तो रोगी तत्काल रोग से निदान पाएगा।

आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र

बन में ब्याई अंजनी। कच्चे बन फल खाय।। हाँक मारी हनुमन्त ने। इस पिण्ड से आधा।। सीसी उतर जाय।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण काल में १० माला का जप श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को ध्यान रखते हुए करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर जब

4Books.com

आपके पास कोई आधा-सीसी दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो राख लेकर २१ बार इस मंत्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा करें तो वह शीघ्र ही आधा सीसी दर्द से निजात पायेगा।

डिब्बा (पहली) का रोग दूर करने के लिए हनुमान् मन्त्र

ॐ सत्य नामआदेश गुरु जी का।। डंक खारी। खंखरा कहाँ गया? सवा लाख पर्वतो गया। सवा लाख पर्वतो जाय क्या करेगा? सवा भार को कोयला करेगा।। सवा भार कोयला कर क्या करेगा? हनुमन्त वीर नव चन्द्रहास खड्ग घड़ेगा।। नव चन्द्रहास खड्ग घड़ क्या करेगा? जात व ढोख पसली बाय काल कूट खारो समुद्र नखेगा। जगद्गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में ११ माला जप श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को ध्यान में रखकर करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय तिल के तेल में असली सिंदूर मिला कर डिब्बा वाले बालक का झाड़ा करने से वह बालक शीघ्र ही इस रोग से निदान पाता है।

नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो। झल-मल।। जहर भरी तलाई।। अस्ताचल पर्वत ते आई।। तहाँ बैठा हनुमन्त जाई।। फूटे न पाकै करै न पीड़ा यती हनुमन्त राखै हीड़ा।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरो मन्त्र। इश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में सात माला का जप, हनुमान् जी के विषयक सभी नियम मानते हुए करने से यह मंत्र सिद्ध होता है, फिर आवश्यकता के समय में निम्बू की टहनी लेकर २१ बार रोगी के नेत्रों का झाड़ा मंत्र जपते हुए करने से वह नेत्र पीड़ा से मुक्ति पाता है।

बवासीर नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ काका कता। क्रोरी कर्ता।। ॐ करता से होय। यरसना दश हूँस प्रकटे।। खूँनी-बादी बवासीर न होय।। मन्त्र जान के न बताए, द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय। लाख जप करे तो उसके वंश में न होय।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान सात दिन का है, साधक श्री हनुमान् जी के नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय रात्रि का रखा हुआ पानी लेकर, इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित करके गुदा प्रक्षालन करें तो खूनी और बादी बवासीर दोनों ठीक हो जाती है।

बगली दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र

वात् वात्। अकाल वात्।। अन्ध वात्। कुन-कुने वात्। कुट-कुटे वात्। आभार प्रति चक्रे शीघ्र फाट।। तौमार डांके। पवन-पुत्र हनुमान कार आज्ञाय।। राजा श्रीरामेर आज्ञाय।।

विधि—इस मंत्र को होली की रात्रि या मंगल-पुष्य नक्षत्र में हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए सात माला जप करें, तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता होने के समय में २१ बार झाड़ा करने तथा शुद्ध पीली सरसों का तेल को लेकर २१ बार अभिमंत्रित कर दर्द वाले स्थान पर मर्दन करने से रोगी शीघ्र रोग से मुक्ति पायेगा, रोगी के ठीक हो जाने पर रोगी व्यक्ति से सात बालकों को मीठा भोजन तथा हनुमान् जी को चोला व लंगोट चढ़वायें।

आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश-। गुरु जी का।। काली चिडी चिग-चिग करे।। घोली आवै वासे हरै। जती हनुमन्त। हाँक मारे।। मथवाई और। आधा-सी सी नाशै।। गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को ध्यान रख सात माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर रोगी का माथा पकड़ कर इस मंत्र से २१ बार झाड़ा करने सेरोगी व्यक्ति का आधा-सीसी का दर्द थोड़ी देर में दूर हो जाएगा।

उखड़ी नाभि ठीक करने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो नाड़ी-नाड़ी। नौ से नाड़ी।। बहत्तर कोठा। चलै अगाड़ी।। डिगै न कोठा। चले नाड़ी।। रक्षा करे यती। हनुमन्त की आन।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री पवनतनय के सभी नियमों को मानते हुए ११ माला का जप करें, तो मंत्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय रोगी व्यक्ति जिसकी नाभी उखड़ी होवे, उसे लिटा करके उसकी नाभि के ऊपर एक ऐसा बाँस का पोला, जिसमें कि नौ गाँठ हों, खड़ा कर दें और इस मंत्र को जपते हुए २१ बार फूँक बाँस के छेद में जोर-जोर से मारें तो उखड़ी हुई नाभि ठीक हो जायेगी।

बाला झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वारा रे। तू सदा बलवन्ता।। बाला ने खोदे। हनुमन्ता।। शब्द साँचा। पिण्ड काँचा।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

4ABooks.com

विधि—इस मन्त्र को होली, दीपावली या पर्व-काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय साँभर नमक की कंकड़ी को २१ बार शक्तिकृत कर बाला वाले स्थान पर २१ बार झाड़ा करें, जब तक पीड़ा न दूर होवे तब तक रोज ही झाड़ा करें।

नोट—यंत्र-मंत्र-तंत्र सिद्ध करने के लिए किसी भी तांत्रिक या पहुँचे हुए व्यक्ति की सलाह अवश्य लें। अन्यथा फायदे की जगह आपको नुक्सान हो सकता है।

सिर दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र

लंका में बैठ के। माथ हिलावे हनुमन्त।। सो देखि के राक्षस। गण पराय दूरंत।। बैठी सीता देवी। अशोक वन में।। देखि हनुमान को। आनन्द भई मन में।। गई उर विषाद देवी। स्थिर दरशाय।। "अमुक" के सिर। व्यथा पराय।। "अमुक" के नहिं कछु। पीर नहिं कछु भार।। आदेश कामाख्या हाड़ी। दासी चण्डी की दोहाई।।

विधि—इस मंत्र का सात दिन का अनुष्ठान है, साधक श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा और जब आवश्यकता हो तो रोगी व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें और उसके सिर को हाथ से पकड़ कर इस मंत्र को जपते हुए राख द्वारा २१ बार झाड़ा करें तो उसका सिर-दर्द दूर हो वह सुख का अनुभव करे।

(अमुक की जगह पीड़ित का नाम उच्चारण करें)

आधा-सीसी दर्द नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वन मे। ब्याई बानरी।। उछल वृक्ष पर। जाय, कूद-कूद।। शाखा नरी। कच्चे वन।। फल खाय। आधा तोड़े।। आधा फोड़े। आधा देय गिराय।। हंकारत हनुमान जी। आधा सीसी जाय।।

विधि—इस मंत्र की सिद्धि के लिए ग्रहण काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए १० माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। फिर जब कभी आवश्यकता हो तो राख (भस्म) लेकर आधा-सीसी से पीड़ित व्यक्ति का झाड़ा करे तो वह शीघ्र ही सुख का अनुभव करेगा।

नेत्र रोग नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वने बिआई। बानरी जहाँ-जहाँ।। हनुमन्त। आँखि पीड़ा।। कषावरि गिहिया। लाइ चरिउ जाइ।। भस्मन्तन। गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति।। फुरो मन्त्र।। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए १० माला का जाप करें तो यह सिद्ध होगा। फिर जब आवश्यकता हो तब नेत्र रोग से पीड़ित व्यक्ति के आँख पर हाथ फेरते हुए २१ बार इस मन्त्र को जपते हुए फूँक मारें तो रोगी की व्यथा मिट जाएगी और वह सुखी होगा।

दन्त पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ राई-राई। तू मेरी माँई।। धरती नी धूलि। मसानी छाई।। सात खवाई। सो हनुवन्त।। की दुहाई। मारा गुरु।। जपत जलत बाई। हालि मन्त्र गुरु खवाई।। मेरी भक्ति। गुरु की शक्ति।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, श्री हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है फिर जब दाँत के दर्द वाला कोई व्यक्ति आये तो इस मंत्र को जपते हुए २१ बार झाड़ा करने से शीघ्र ही दाँत दर्द से पीड़ित व्यक्ति आराम पायेगा।

स्त्री सर्व-रोग नाशक हनुमान् मन्त्र

हनुमान हठीले। लोहे की लाट।। वज्र का खीला। भूत को बाँध।। प्रेत-को बाँध। मैली कुचमैली।। कूँख मैली, रक्त मैली। ऐसी चौदा मैली। पकड़ चोटी न निकाले। तो अंजनी का दूध।। हराम करे। महादेव की जटा। में आग लगे। ब्रह्मा के वचन से।। राम चन्द्र के वचन से। मेरे वचन से।। मेरे राजगुरु। के वचन से।। इसी वक्त भाग जा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान २१ दिन का है, साधक केशरी नन्दन बजरंग बली विषयक सभी नियमोंका ध्यान रख कर प्रतिदिन १ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय रोगी व्यक्ति का झाड़ा लोहे की वस्तु से इस मंत्र को जपते हुए करें तो रोगी रोग से निदान पायेगा।

सर्व-शूल नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो भगवते। चिन्तामणि हनुमान?। अंग-शूल, अति-शूल। कटि-शूल, कुक्षि-शूल।। गुद-शूल, मस्तक-शूल। सर्व-शूल, निर्मूलय।। निर्मूलय, कुरु-कुरु स्वाहा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में केशरी-नन्दन हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप व दशांश हवन करने से यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय-शूल-ग्रस्त रोगी व्यक्ति को अभिमन्त्रित जल पिलायें या भस्म अभिमन्त्रित कर खाने को दें अथवा एक निम्बू शक्ति-कृत कर शूल-ग्रस्त भाग के ऊपर फिरायें, बाद में उस निम्बू को नदी या तालाब में विसर्जित

कर दें इन तीनों प्रयोगों से रोगी की शूल-व्याधि नष्ट होगी, शूल रोग जब अच्छा हो जाय तब यथा शक्ति दान-पुण्य अवश्य करवायें।

रोग-दोष नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरु जी को।। अहल बाँधूँ। जहल बाँधू।। अंबर तारा अस्सी। कोस की विद्या बाँधूँ।। बाँधूँ नदी की धारा। बाँधू तर्कशास्त्र का तीर।। मस्तक बैठा। हनुमन्त वीर।। वीर हनुमन्त से। क्या-क्या चले?।। चौंसठ चक्र चलै। चौंसठ चक्र से।। क्या-क्या चले? भूत-चले। प्रेत-चले।। राक्षस चले। ब्रह्म-राक्षस चले।। चुड़ैल चले। सोखा तपोखा चले।। पर्वतऔ धरणी चले। चौंठ योगिनी चलै।। ताप-तिजारी चलै। नव नाड़ि, बहत्तर।। कोठां माँहि सो निकाले। "अमुक" को आराम करे।। न निकाले, तो राजा। राम चन्द्र की दुहाई।। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री हनुमान विषयक सभी नियमों को मान कर प्रतिदिन १ माला जप तथा दशांश हवन करें तो यह सिद्ध होगा, आवश्यकता के समय मोर पंख द्वारा रोगी का २१ बार झाड़ा करने में समस्त रोग-दोष दूर होते हैं।

दुर्बलता दूर करने का हनुमान् मन्त्र

तू है वीर। बड़ा हनुमान।। लाल लंगोटी। मुख में पान।। एर-भगावै। वैर-भगावै। "अमुक" में। शक्ति जगावै।। रहे इसकी काया। दुर्बल तो माता।। अंजनी की आन। दुहाई गौरा। पार्वती को।। दुहाई राम की। दुहाई सीता की।। लै इसके पिण्ड की खबर। न रहै इस पे कोई कसर।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री बजरंग बली के सभी नियमों का पालन करते हुए १ माला प्रतिदिन जपें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, आवश्यकता के समय इस मंत्र को जपते हुए मोर पंख द्वारा २१ बार झाड़ा करें तो रोगी व्यक्ति की दुर्बलता दूर हो एवं उसके सभी रोग-दोष दूर होते हैं।

रोग लकवा ठीक करने का मंत्र

"ॐ नमो गुरुदेवाय नमः, ॐ नमो महादेवाय नमः, ॐ नमो उस्ताद गुरु कूं, ॐ नमो आदेश गुरु कूं, आदेश जमीन आसमान कूं, आदेश पवन पाणी कूं आदेश चंद्र सूरज कूं, आदेश नवनाथ चोरासी सिद्ध कूं, आदेश गूंगी देवी, बहरी देवी, लूली देवी, पांगुली देवी, आकाश देवी, पाताल देवी, उलूझणी देवी, पूकंनी देवी, टकंटुकी देवी, आरीदेवी, चंद्रगेहली देवी, हनुमान जाति अंजनी का पूत, पवन का व्याती, वज्र का कांच, वर्ज का लंगोटा ज्यू

चले, ज्यू चल, हनुमान जति की गदा चले ज्यू चल, राजा रामचंद्र का बाण चले ज्यू चल, गंगा, जमना का नीर चले ज्यू चल, दिल्ली आगरा का गैलो चले, ज्यू चल, कुम्हार का चाक चले ज्यू जल, गुरु की शक्ति हमारी भक्ति, चलो मंत्र ईश्वरी वाचा।''

विधि—चदंन का धूप लगाकर, मोरपंख से दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) झाड़ा देना, प्रत्येक झाड़े में मंत्र को सात बार बोलना २१ दिन तक लगातार यह प्रयोग करने से लकवा ठीक ही जाता है। परंतु २१ दिन तक नित्य तीन बार खेजड़ी सींचनी जरूरी हैं। व्यक्ति के ठीक हो जाने पर 'उतारा' करना भी जरूरी है।

रोग बिच्छू का विष उतारने का मंत्र

ॐ नमो सुरह पर्वत पर जाप हरी दूव खाती फिरे, ताल-तलैय्या पानी पीएं, सरह गाय ने गोबर किया, जा में उपजे बिच्छू सात काले पीले, धौले लाल रंग बिरंगे और हराल उतर रे उतर बिच्छू का जाया नहीं तो गरुड़ जी डडके आया, सत्य नाम आदेश गरु का, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

उपर्युक्त मंत्र का झाड़ा मोर पंख से पीड़ित व्यक्ति को २१ बार देने पर बिच्छू का विष उत्तर जाता है।

रोग दन्त शूल नाशक मंत्र

अग्नि बांधौ अनिश्वर बांधौ सौलाल विकराल, बांधौ लोहा लुहार बांधौ वज्र के निहाय वज्र घन दांत विहाय तो महादेव की आन।

इस मंत्र को नौ दिन तक रात्रि में नित्य २१०० बार जाप करके सिद्धि कर ले, तब प्रयोग करना हो तो तर्जनी अंगुली से २१ बार मंत्र पाढकर जार देने से दूर हो जाता है। दांत वज्र के समान मजबूत हो जाते हैं।

पूर्व स्नानादि से पवित्र होकर करे। साधना करते समय एक समय भोजन करें तो साधना शीघ्र ही फलीभूत होती है।

रोग प्रेमिका (पत्नी) को वशीभूत करने मंत्र

ॐ शिवे भगवे भगे-भगे भंग, क्षोभय-क्षोभय, मोहय, मोहय, छादय-छादय, क्लेदय क्लेदय क्लीं शरीर ॐ फट् स्वाहा।

यह मंत्र एकांत में जिस किसी भी स्त्री की फोटो के सामने १०८ बार पढ़ा जाएगा, वह युवती काम के वशीभूत होकर दौड़ी चली आएगी यदि ७ दिन तक सोते समय बराबर प्रयोग किया जाए तो अभीष्ट स्त्री कामातुर होकर रात्रि में सेज पर आवेगी, ध्यान रहे, सावधान। इस मंत्र का गलत प्रयोग न करे। मंत्र से गलत कार्य न करे, वरना जातक का भयंकर अहित हो सकता है।

रोग बवासीर (खूनी) दूर करने का मंत्र

ॐ नमो हनुमंत, मेरी पीड़ा तेरी पीड़ा हर ले हनुमंत मेरी पीड़ा, बवासीर को ठीक कर, तुझे शपथ लक्ष्मण भाई की, तुझे शपथ सीता माई की:

इस मंत्र के १,००० जाप करने पर खूनी बावासीर बंद हो जाएगा। जब भी बवासीरर की तकलीफ बढ़ने लगे तो इस मंत्र का जाप आपको निश्चित रूप से लाभ प्रदान करेगा। जब तकलीफ बढ़ जाए तो २१ बार मंत्र जाप करते हुए एक मौली पीड़ित व्यक्ति के हाथ में बांध दे। खूनी बवासीर बंद हो जाएगा।

रोग नेत्र पीड़ा नाशक मंत्र

नमो रामजी धनी लक्ष्मण के बान। आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कँवर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र का जाप किसी शुभ मुहूर्त (पुष्य नक्षत्र, रवियोग, अमृत सिद्ध) योग के समय आरंभ करके २१ दिवस तक १०००० जाप रोज करके, धूप, दीप और नैवेध आदि से पूरे मन से लक्ष्मण जी की पूजा करे तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग की आवश्यकता पड़ने पर केवल १०८ बार मंत्र पढ़कर जार देने से कैसा भी नेत्ररोग या नेत्र सम्बन्धी पीड़ा दूर हो जाती है।

रोग शिरः शूलादिशामक मंत्र

वन में ब्याही अजंनी कच्चे फूल फूल खाय। हाक मारी हनुमंत ने इस पिण्ड से आधा सीस उतर जाय।

कृष्ण पक्ष की चौदस (चतुद्रशी) तिथि को श्मशान में जाकर इस मंत्र के १०००० दस हजार जाप करके कुछ राख (भस्मी) अभिमन्त्रित कर ले। फिर रोगी के मस्तक पर राख (भस्मी) मलते हुए इस मंत्र के सात बार जाप करने से सिरदद्र ठीक ही जाता है।

रोग गांठ या फोड़े को ठीक करने के मंत्र

ॐ नमो हनुमंताय नमो ॐ नमो विष कटा नख फटा सिर कटा अस्थि मेद मज्जा फोड़ो फनसो आदी‿ हुंबल। रेल्या रोग रींघण वाय जावे चौसठ जोगनी बावन पीर, रक्षा कीजै भैख आय रक्षा कीजै। शब्द साँचा पिण्ड काच फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण काल में उक्त मंत्र सिद्ध होता है। सूर्य ग्रहण के समय विशेष रूप से फलदायी है। जब ग्रहणकाल में प्रयोग करना हो तो उस समय मोर की पंख को लेकर, मोरपंख से पृथ्वी साफ करते हुए, व उक्त मंत्र पढ़ते हुए सात बार जाड़े और

4Books.com

जमीन की धूल को प्रभावित स्थानों या फोड़े, फुँसी आदि पर लगावे, इससे निश्चित रूप से गांठ, फोड़े, फुन्सी आदि ठीक होगी।

मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र

ॐ नमः आज्ञा गुरु को केश में कपाल, कपाल में भेजा बसै भेजी में कीड़ा करै न पीड़ा कंचन की छेनी रूपे का हथौड़ा पिता ईश्वर गाड़ इनको थापे श्री महादेव तोड़े शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो उवाच।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पहले १०८ बार पढ़कर सिद्धि कर लें, फिर प्रयोग करते समय राख को सात बार पढ़कर काटें तो मस्तक पीड़ा दूर हो जाता है।

सर्वाङ्ग वेदना हरण मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर इक्कीस बार झाड़ने से समस्त शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

ॐ नमो कोतकी ज्वालामुखी काली दोबर रंग पीड़ा दूर कर सात समुद्र पार कर आदेश कामरु देश कामाक्षा माई हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

आधा शीश का दर्द दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो बन में बिआई बंदरी। खाय दुपहरिया कच्चा फल कंदरी। आधी खाय के आधी देती गिराय। हूकत हनुमंत के आधा शीशी चलि जाय।।

प्रयोग विधि—भूमि पर छुरी से सात रेखा खींच कर रोगी को सम्मुख बैठाकर सात बार मन्त्र पढ़ कर झाड़ने से आधा शीश का दर्द दूर होता है।

उदर वेदना निवारक मन्त्र

ऊं नून तूं सिन्धु नून सिंधु वाया। नून मन्त्र पिता महादेव रचाया।। महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया। गुरु ज्ञान से हम देऊं पीर भगाया।। आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई। आदेश हाड़ी रानी चण्डी का दुहाई।।

प्रयोग विधि—दाहिने हाथ की केवल तीन उँगलियों से सेंधा नमक का एक टुकड़ा लेकर ऊपर लिखे मन्त्र से तीन बार पढ़कर, अभिमन्त्रित करें बाद में यह टुकड़ा रोगी को खिलाने से पेट की पीड़ा शान्त होती है।

नेत्र पीड़ा निवारक मन्त्र

ॐ नमः झिलमिल करे ताल की तलइया। पश्चिम गिरि से आई करन भलइया।। तहँ आय बैठेउ वीर हनुमन्ता। न पीड़ै न पाकै नहीं फूहन्ता।। यती मनुमन्त राखे होड़ा।।

प्रयोग विधि—सात दिन तक नित्य सात बार नीम की टहनी द्वारा झाड़ने से नेत्र पीड़ा शान्त होती है।

4Books.com

रोग निवारण मन्त्र

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिक शिला फटिक शिला ऊपर अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त नेहला टेहला काँख की कखराई पीछे की आदटी कान की कनफटे रान की बद कंठ की कंठमाला धूटअने का डहरु डाढ़ की डढ़ शूल पेट की ताप तिल्ली किया इतने को दूर करे मस्मन्त नातर तुझे मा का दूध पिया हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

सिद्ध करने की विधि—सात शनिवार हनुमान् जी की मूर्ति के सम्मुख धूप दीप प्रज्वल्लित कर नैवेद्यादि अर्पित कर नित्य एक सौ आठ बार मन्त्र का जाप करें, मन को सर्वथा शुद्ध रखें, कामेच्छा आदि विकार मन में न आने पावे, इस प्रकार सिद्धि प्राप्त हो जाने पर कखबारी, बद, कंठमाला, दाढ़ शूल, कन फेर, अदीठ, रोगों को राख से एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ कर मन्त्र पढ़ कर झाड़ें तथा ताप, तिल्ली को छुरी से एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़कर झाड़ने से उपरोक्त रोग दूर होते हैं।

विशेष—रोग दूर हो जाने पर रोगी से हनुमान् जी को प्रसाद चढ़वा कर वितरित करें और किसी से कोई द्रव्य ग्रहण न करें।

ऋतु वेदना निवारण मन्त्र

ॐ नमो आदेश देवी मनसा माई बड़ी-बड़ी अदरख पतली-पतली रेशे बड़े विष के जल फाँसी दे शेष गुरु का बचन जाय खाली पिया पञ्च मुण्ड के बाम पद ठेली विषहरी राई की दुहाई फिरै।।

प्रयोग विधि—अदरख को तीन बार मन्त्र पढ़ कर रोगिनी को खिलाने से ऋतुमती को वेदना शान्त होती है।

मासिक विकार दूर करने का मन्त्र

आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु को तोड़ू गाठ औंगा ठाली तोड़ दूँ लाय तोड़ि देऊँ सरित परित देकर पाय यह देखि मनुमन्त दौड़ कर आय अमुक का देह शांति वीर भगाय श्री गुरु नरसिंह की दुहाई फिरै।

प्रयोग विधि—एक पान का बीड़ा ले तीन बार मन्त्र पढ़ कर खिलाने से समस्त प्रकार के मासिक विकार दूर होते हैं।

प्रसव कष्ट निवारण मन्त्र

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा। आं मुक्ता पाशा विपाशश्च मुक्ता सुर्य्येण रश्यमः।। मुक्ता सर्ध्व फयादर्भ एहि मारिच स्वाहा। एतन्मत्रेणाष्ट वार जयनभि मनय पितम तत्क्षणात सुख प्रसवो भवति।।

प्रयोग विधि—केवल एक हाथ से खींचा हुआ कुएँ का जल लाकर आठ बार मन्त्र पढ़कर पिलाने से प्रसव वेदना दूर होती है तथा बालक सुखपूर्वक होता है।

विशेष—एक हाथ से कुएँ का जल खींचने के बाद जमीन पर न रखना चाहिये अन्यथा प्रभाव निष्फल होगा।

मृगी रोग हरण मन्त्र

ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्री राम जी फूँके। मृगी बाई सूखे, सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा।।

प्रयोग विधि—भोजपत्र पर अष्टगन्ध से इस मन्त्र को लिखकर गले में बाँधने मात्र से मृगी रोग चला जाता है।

रतौंधी विनाशक मन्त्र

ॐ भाट भाटिनी निकली कहे चलि जाई उस पार जाइब हम जाऊं समुद्र। भाटिनी बोली हम बिछाइब हग उपसमाशि पर मुन्डा मुन्डा अंडा।

नैन वेदना विनाशक मन्त्र

नमो राम जी धनी लक्ष्मण के बार। आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कुवंर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मन्त्र का किसी शुभ मुहूर्त में जाप प्रारम्भ करके इक्कीस दिवस तक दस हजार बार नित्य जाप कर धूप दीप और नैवेद्य आदि से मनोयोग पूर्वक लक्ष्मण जी की पूजा करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग की आवश्यकता होने पर केवल एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ झार देने से नेत्रों का दर्द दूर हो जाता है।

मस्तक शूल विनाशक मन्त्र

''निसुनीह रोई बद कर मेघ गरजहि निसु न दीपक हलुधर फुफुनिबेरि फूनि डमरु न बजै निसुनहि कलह निन्न पुटु काच मई।''

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि को इक्कीस सौ बार जाप कर सिद्ध कर लेना और प्रयोगावसर पर केवल इक्कीस मन्त्र को पढ़कर फूँक मार देने से दर्द देवता भाग जाते हैं।

आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र

''सातों रीदा सातो भाई भातों मिल के आँख बराई दुहाई सातों देव की, इन आंखिन पीड़ा करै तो धोबी को नाँद चमार के चूल्हे परै। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

इस मन्त्र को दीपावली या होली की रात्रि से प्रारम्भ कर इक्कीस दिवस तक नित्य एक सौ आठ बार जाप कर पूजन करने से यह सिद्ध हो जाता है और

आवश्यकता के समय केवल इक्कीस बार मन्त्र पढ़ फूँक मार देने से दर्द देवता विदा हो जाते हैं।

दन्त शूल नाशक मन्त्र

अग्नि बांधौ अग्नीश्वर बाँधौं सौलाल बिकराल बाँधौ लोहा लुहार बाँधौ बज्र के निहाय वज्र घन दाँत विहाय तो महादेव की आन।।

इस मन्त्र को केवल नौ दिन तक रात्रि में नित्य इक्कीस सौ बार जाप करके सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना हो तो तर्जनी उंगली से इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर झाड़ देने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है।

तपेदीक (टी० बी०) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र

ओम् कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिन्ना नन्द मावद। ज्वरं मृत्यु भयं घोरं विषं नाशय में ज्वरम्।।

आम के एक सौ आठ ताजे पत्ते तोड़ शुद्ध गाय के घी में डुबा दें, यदि घी कुछ कम हो तो पत्तों पर चुपड़ दें और जिस स्थान पर रोगी की शय्या पड़ी हो आम, बेरी अथवा पलाश की लकड़ी की समिधा में अग्नि प्रज्जवलित करके उपरोक्त मन्त्र से एक सौ आठ आहुति दें, यदि रोगी बैठने योग्य हो तो उसे हवन कुण्ड के समीप बैठा दें यदि रोगी बैठने के योग्य न हो तो उसकी चारपाई हवन कुण्ड के समीप ही डलवा दें और हवन के समय रोगी का मुँह खुला रखें। इस प्रकार की क्रिया से साधारण ज्वर तो केवल तीन या पाँच दिन में ही दूर हो जाते हैं और पन्द्रह या इक्कीस दिवस में टी० बी० जैसे राज रोग भी सदैव के लिये दूर हो जाते हैं।

हवन सामग्री में निम्न वस्तुयें बराबर-बराबर लेकर मिला लेना चाहिये। मण्डूक पर्णी, गूगल, इन्द्रायण की जड़, अश्वगन्ध, विधारा, शालपर्णी, मकोय, अडूसा, बांसा, गुलाब के फूल, शतावरी, जटामांसी, जायफल, बंशलोचन, रास्ना, तगर, गोखरू, पाण्डरी, क्षीर काकोली, पिश्ता, बादाम की गिरी, मुनक्का, हरड़ बड़ी, लौंग, आँवला, अभिप्रवाल, जीवन्ती, पुनर्नवा, नगेन्द्र वामड़ी, खूब कला, अपामार्ग, चीड़ का बुरादा उपरोक्त सब चीजें बराबर भाग तथा गिलोय चार भाग, कुष्ठ १।४ भाग, केशर, शहद, देशी कपूर, चीनी, दस भाग तथा गाय का घी सामर्थ्य के अनुसार जितना डाल सकें। समिधा ढाक, शुष्क बांस या आम की ही होनी चाहिये। हवन काल में अन्य कोई औषधि न देना चाहिये।

पसली झारने (दूर करने) का मन्त्र

हं मन्दिर के किनारे सुरहा गाय सुरहा गाय के पेट में उच्छा बच्छा के

पेट में कलेजा कलेजा के पेट में डब डब कर उमा बढ़े दुहाई लेना लोना चमारी की।

इस मन्त्र को होली, दीपावली की रात्रि या ग्रहण के अवसर पर पवित्रता पूर्वक १००८ बार लोहबान की धूनी देते हुए जाप कर सिद्धि कर लेवे और जब प्रयोग की आवश्यकता हो तो एक सेर लकड़ी और उंगली के नाप की सात सींकें लेकर इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर झारने से पस़ली रोग से मुक्ति मिल जाती है।

बिच्छू का विष झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो गुरह गाय पर जाप हरी दूब खाती, फिर ताल तलैया पानी पीवे, गुरह गाय ने गोबर किया, जिसमें उपजे बिच्छू सात, काले, पीले, भूरे और हराल, उतरे रे जहर बिच्छू का जाय, नहीं गरुड़ उड़कर आया सत्य नाम, आदेश गुरु का, शब्द साँचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—दीवाली के दिन इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर जिसे बिच्छू ने काटा हो इस मन्त्र को पढ़ कर (फूँक कर) पानी पिलावें तो विष उतर जायेगा।

दूसरा मन्त्र (डंक झाड़ने का)

ॐ सुमेर पर्वत नोना चमारी सोने रायी, सोने के सुनारी हुकबुक वाद-विलारी, धारिणी, नला, कारि-कारि समुद्र पार बहायो दोहाई नोना चमारी की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर लें। जब किसी को बिच्छू काटे तो इस मन्त्र से इक्कीस बार पढ़ कर झाड़ें तो बिच्छू का विष उतर जायेगा।

मन्त्र—ओम् सुखं शिर, काली माई स्याहा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को प्रात:काल चारपाई पर से उठते ही और जैसे ही पृथ्वी पर पैर रखा जाये तब इस मन्त्र को पढ़ लें तो आपका सारा दिन ठीक रहेगा और सर्प-बिच्छू आदि से बचेंगे। (सर्प-बिच्छू नहीं काटेगा)।

पीलिया (कँवर) का मन्त्र

ॐ नमो वीर वैताल असुराल नाहर सिंह देव जी स्वादी तरवादी सुभाल तुभाल, पीलिया को काटे, झारे पीलिया रहे न नेक निशान, जो रह जाय तो हनुमान की आन।

प्रयोग विधि—शुद्ध सरसों का तेल एक कटोरे में लेकर रोगी के मस्तक पर सफेद चन्दन से सात बार मलें और प्रत्येक बार मन्त्र का उच्चारण करता जायें और कम-से-कम दिन भर में दो बार प्रयोग करें।

ज्वर नाशक तन्त्र धूप

देवदारू, इन्द्रावणी, लोहबान, गोदन्ती, हींग, सुगंध वाला, कुटकी, नींबू के पत्ते, वच, दोनों कराई, चव्य, सूखा बिनौला, जौ, सरसों, शुद्ध घी, काले बकरे की बाल, गोर शिखा इन सब चीजों को लेकर बैल के मूत्र में पीस कर मिट्टी के कोरे बरतन में रख छोड़ें। इसे माहेश्वर धूप कहते हैं। इसकी धूनी देने से सब प्रकार के ज्वर तथा उन्मत्त रोगी को यह धूप देने से ग्रह, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल, नाग, पूतना, शाकिनी, डाकिनी आदि तथा अन्य विघ्न भी क्षण में दूर होते हैं। यह परीक्षित है।

ज्वर नाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये। पिशाचाधिपतये आवश्य कृष्ण पिंगल फट् स्वाहा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को कागज के ऊपर कोयले से लिख कर दाहिनी भुजा पर बाँधे तो नित्य आने वाला ज्वर दूर हो।

ज्वर नाशक अन्य मन्त्र

श्रीकृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च। ऊषा स्मरण मन्त्रेण ज्वर व्याधि विमुच्यते।।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को कागज पर लिख कर धूप-दीप देकर गले में बाँधने से ज्वर दूर होता है तथा उसका जाप करने से भी ज्वर दूर होता है।

बाई झारने का यन्त्र

ओम् मूलनमः धुक्षतमः जाहि जाहि ध्वांक्ष तमः प्रकीर्ण अंग प्रस्तार प्रस्तार मुंच मुंच।

प्रयोग विधि—मंगलवार या रविवार को तिलोई पक्षी के पंख से झारें तो बाई दूर होती है।

बालकों को रोना दूर करने का मन्त्र

वावति-वावति-छोटी वावति, लम्बी केश वावति, चलली कामरु देश, कामरु देश से आइल भगाना सिर लोट पर चढ़े मसाना, ठोकर मारी तीन, दीख लेब छीन सत्य नाम कामरु के, विद्या नोना योगिनी के, सिद्ध गुरु के वन्दौं पाँव।

प्रयोग विधि—जो बालक अधिक रोता हो या दीठ लग गई हो तो उस बालक के सिर पर हाथ रख कर मन्त्र पढ़कर फूँक मारें।

जानवरों के कीड़ा झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो कीड़ा रेकुण्ड कुण्डालों लाल पूँछ, तेरा मुँह काला। मैं

तोंहि पूँछा कंह से आका, तूने सब माँस खाया। अब तू जा, भस्म हो जाय, गुरु गोरख नाथ की दुहाई।

प्रयोग विधि—नीम की हरी ताजी डाली से मन्त्र पढ़ कर सात-बार झाड़े तो सब कीड़े मर जायेंगे।

वायु गोला का मन्त्र

ओम् ऐ चा चा।

प्रयोग विधि—चाकू से बीस आड़ी और चालीस खड़ी लकीरें खींच कर इस मन्त्र को पढ़ कर उसे फूँकें तो वायु गोला का रोग जाता है।

वायु गोला झाड़ने का मन्त्र

कान्हपुर हाई कहाँ चले वनही चले वागहे के कोयला कोयला का करवेह सारी पत्रखण्ड कर बेहु अष्टोत्तर दाँत व्याधि काटे के सिर रावण का दश, भुजा बीस, ककुही वर वटी वायु गोला बाँधू गुल्म महादेव गौरा पार्वती के नीलकंठ लोना चम्माइन की दुहाई।

इस मन्त्र से वायु गोला झारे तो लाभ होता है।

कान का दर्द झाड़ने का मन्त्र

आसमीन नगोट वन्ही कर्म हीन न जायते, दोहाई महावीर की जो रहे कान की पीर अंजनी पुत्र कुमारी वायु पुत्र महाबल को मारी ब्रह्मचारी हनुमन्ताई नमो नमो दोहाई महावीर की जो रहे पीर मुण्ड को।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पढ़कर कान तथा माथे पर फूंक मारें।

मृगी (मिरगी) का मन्त्र

ओम् हाल हलं स्मगत मंड़िका पुड़िया श्रीराम फुंकै मिरगी वायु सूखे।। ओम् ठः ठः स्वाहा।।

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर किसी ताँबे के यन्त्र में भरकर बाँधने से मृगी रोग दूर होता है।

प्रसव आसानी से होने का मन्त्र-यन्त्र

मन्त्र—**अस्ति गोदावरी तीरे जम्भला नाम राक्षसी। तस्याहः स्मरण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्।।**

प्रसव वेदना से गर्भिणी बहुत परेशान हो तो वट (बरगद) के पत्ते पर ऊपर लिखा यन्त्र तथा मन्त्र लिखकर उसके (गर्भिणी) के मस्तक पर रखने से सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

दूसरा प्रसव मन्त्र

गंगा तीरे तसेत काशी चरतेय हिमालये। तस्याः पक्षच्युतं तोयं पा येच्चैव तत् क्षारणात्।। ततः प्रसूयते नारी काक रुद्रो वचो यथा।

प्रयोग विधि—श्वांस को रोककर जितनी बार यह मन्त्र जपा जा सके उतनी बार जप कर, गुड़ या गरम जल अथवा गरम दूध को अभिमन्त्रित करके गर्भिणी को खिलाने तथा पिलाने से प्रसव बालक सुखपूर्वक पैदा होगा। यह परीक्षित है।

आँख दुखने का मन्त्र

ओम् नमो झल मल जहर नली तलाई अस्ताचल पर्वत से आई जहँ जा बैठा हनुमान जाई, फूटे न पाके करे न पीड़ा यती हनुमन्त की दोहाई।

प्रयोग विधि—नीम की हरी पत्तीदार डाली से सात बार मन्त्र पढ़कर झाड़ना चाहिये।

जानवरों के खुरहा रोग का मन्त्र

अर्जुन फलानी जिस्न सेत बाजी कपिध्वज, गिरिउ विकामुक पार्थर्व सव्य साची धनंजयः इति अर्जुन दश नामानि पशु पीड़ा हराणिचः।

प्रयोग विधि—नीम की डाली से मन्त्र द्वारा (मन्त्र पढ़ कर) झारना चाहिये।

आधा शीशी झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो वन में बसी बानरी, उछल, पेड़ पर जाय, कूद-कूद डालन पर फल खाय, आधी तोड़े-फोड़े आधा शीशी जाय।।

प्रयोग विधि—जमीन पर हाथ से सात सीधी लकीरें खींचे तथा फिर सात आड़ी रेखाओं से उन्हें काटते जायें। इस प्रकार सात बार करके रोगी के माथे पर फूंक मारते जाये और हाथ फेरते जायें तो आधा शीशी जाये।

रतौंधी झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र पढ़-पढ़ के फूँके भाट भाटिन संग चली कहाँ जाव, जायेउ समुद्र पार, भाटिन कहा मैं विआयेऊ कुश की छाली विआयेऊ उपसमा छीकर मुद्रा अंडा धों सो हिलतारा सोहिल तारा राजा अजैपाल तर कर केदार पानी भरत रहै उन देखे पावा बालाउ गोडिया मेला उजाल तोके मैं अधोखी ईश्वर महादेव की दोहाई, हनुमान कै दोहाई यही समय उतरि जाइ।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पढ़कर सात बार झाड़े।

बवासीर झाड़ने का मन्त्र

ओम छई छलक कलाई आहुम आहुम कं कां कीं हूँ फद् फुरो मंत्र ईश्वरो वाचः।

प्रयोग विधि—इतवार और मंगलवार के दिन इस मन्त्र से पानी फूक कर आबदस्त लेने से बवासीर का रोग जाता है।

द्यूत विजय मन्त्र

गृहीत्वा पुष्पनक्षत्रे श्वेतगुञ्जां च मूलकम्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते द्यूतकार्ये जयो भवेत्।

दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि पुष्य नक्षत्र मे श्वेत गुञ्जा की जड़ लेकर दाहिने हाथ में बाँधने से जूए में विजय होती है।

अन्यत्। धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम्। हरितालसमायुक्तं तिलकं सुदिन कृतम्। अजाक्षीरेण संपेष्य क्षणे राजकुले जयी। विरोधे द्यूतकार्ये च नान्यथा शङ्करोदितम्।

अन्य प्रयोग : धतूरा, कनेर तथा अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़ के साथ हरिताल को बकरी के दूध में पीसकर उत्तम दिन तिलक करने से राजकुल में, शत्रु के विरोध में तथा जूए में तत्काल विजयी होती है। यह शंकर का वचन है, अन्यथा नहीं हो सकता।

अन्यत्। हस्तनक्षत्र होय रवि, तादिन ऐसा करै उपाय। न्योतै पेडपवाण्डको, दिन पहेलेही जाय। रविदिन ताकूं ल्यायके, बांध दाहिनी बांह। खेलै जूवा जो कोई, जीतै संशय नाहि।

अन्य प्रयोग : निम्नलिखित यन्त्र को रेड के पत्ते पर कौवे के पंख से स्याही द्वारा रात के समय शुद्ध होकर लिखे। इस ६४ कोष्ठ के यन्त्र में :

मेखैरकन्दयेरूपाजिजनंदनीचनः छदावींयमंत्रंषहेष्ठिवामोक्षिणपात्रम्।

इस ३२ अक्षर के मंत्र को अनुलोम और विलोम रीति से लिखकर भुजा में धारण करे। फिर जूआ खेलने पर साधक सदैव जीतेगा।

अन्य प्रयोग : मन्त्र इस प्रकार है :

याअववाविर्रिज्कुल्फतूहदूकानअमुकस्यवसतनअमुकस्यजारीगद्दीवहक्व-याफताहोयावा सितो। इति मन्त्रः।

गोमहिषी दुग्धवर्धन उपाय

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं करालिनि पुरुषसुखं मुखं ठं ठः। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अनेन मन्त्रेण तृणादिकं अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य गोमहिष्यादीनां दातव्यं अति क्षीरदास्ता भवन्ति।

इस मन्त्र से तृण आदि को १०८ बार अभिमन्त्रित करके गाय और भैंस आदि को खिलाना चाहिये। इससे ये पशु अधिक दूध देंगे।

भूत-प्रेत बाधानाशक मंत्र

"ओम नमो आदेश गुरू को ओम अपर के या कट मेष खम्ब प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखे पाँव देवी जंघा राखे काली का मस्तक राखे महादेव जी कोई या पिण्ड प्राण को छोड़े-छोड़े तो देवदानव भूत-प्रेत-डाकिनी-शाकिनी गण्डा ताप तिजारी जूड़ी एक पहरु दो पहरु सांझ को सबेरे को किया को कराया को उलट वाही के पिण्ड परे इस पिण्ड की रक्षा श्री नरसिंह जी करे शब्द सांचा पिण्ड कांचार फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

विधि—सूर्य या चन्द्र ग्रहण अथवा दीपावली की महानिशा में इस मंत्र को सिद्ध कर लिया जाये। सिद्ध के समय पूजा, प्रसाद, धूप, दूप, फूल, नैवेद्य आदि का ध्यान रखना चाहिए।

आवश्यकता होने पर इस मंत्र से सात बार जल से अभिमंत्रित करके रोगी को वह जल पिला दें साथ ही बाधाग्रस्त व्यक्ति को मोरपंख से मंत्रोच्चारण करते हुए सात बार झाड़ दें।

प्रेतादि दोष नाशक मंत्र

'ओम नमो आदेश गुरू को, लड़गढ़ी सों मुहम्मद पठाण, चढ्या श्वेत घोड़ा, श्वेत पलाण, भूत बाँधि, प्रेत बाँधि, चौसठ जोगिनी बाँधि, अड़सठ स्थान बाँधि, बाँधि, बाँधि रे चोखी तुरकिनी का पूत, बेगि बाँधि, जोतू न बाँधे तो अपनी माता की शैय्या पर पाँव धरे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

यदि किसी को भूत-प्रेत-जिन्न इत्यादि ऊपरी बाधा का रोग लग गया हो तो इस गण्डे को रोगी के बांध देने से समस्त ऊपरी बांधाओं का नाश होता है। परन्तु ध्यान रखें कि यह प्रयोग आमजनों या साधारण मनुष्य के करने के लिए नहीं अपितु किसी आमिल या तांत्रिक द्वारा ही सम्पन्न किया जाना चाहिए।

इस प्रयोग को करते समय आमिल (तांत्रिक) को अपने पास दीपक जलाकर रखना चाहिए, लोबान की धूनी देवें तथा सीप में थोड़ी मिठाई अवश्य रखें।

अब रोगी के सिर से लेकर पाँव तक की लम्बाई का सात रंग वाला डोरा माप कर लेवें और उक्त मंत्र को पढ़ते हुए उस सूत के डोरे में ३१ गाँठें लगाकर गण्डा तैयार कर लें।

इस प्रकार से तैयार गण्डे को उस रोगी के गले में पहना देवें। गण्डे के प्रभाव से रोगी की समस्त ऊपरी बाधाएँ दूर हो जाती हैं।

ध्यान रखें कि पृथक्-पृथक् रोगी के लिए पृथक्-पृथक् ही गण्डा तैयार

किया जाता है। इस **'चमत्कारी गण्डे'** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केंद्र से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

भूत-प्रतों को भगाने का तन्त्र

अन्य भूतों की अपेक्षा प्रेत अधिक शक्तिशाली और दुष्ट होता है। अगर आपके घर में लोग बार-बार बीमार पड़ते हों, स्त्री-पुरुष भयानक स्वप्न देखकर भय से चौंक उठते हों, कोई स्त्री पागल की तरह अनाप-शनाप बकती हुई भूत खेलती हो अथवा घर के छप्पर और हाते में ढेले, रोड़े अथवा हड्डियों के टुकड़े बरसते हों, तो समझना चाहिए कि आपके घर में भूतों के साथ ही प्रेत की भी बाधा है। ऐसी हालत में इस भयंकर भूत-प्रेत बाधा दूर करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र का प्रयोग कीजिए।

सर्वप्रथम एक मरे हुए कौवे को तलाश कर ले आइए। फिर मंगलवार को एक कच्चा बांस काटकर ले आइए। उस बांस को करची सहित आंगन में गाड़ दीजिए और उसकी चोटी पर उस मरे हुए कौवे को टांग दीजिए। बांस गाड़ने के पहले ही उस कौवे को उसकी चोटी से बांध देना चाहिए, जिससे गाड़ने के बाद चोटी पर टांगने में कठिनाई न पड़े।

इसके बाद अमावस्या की आधी रात को किसी कौवे के घोंसले से सात लकड़ियाँ, पांच पंख और कुछ बीट ले आइए, फिर आंगन के अन्दर तिकोना होम-कुंड खोदकर उसमें बेल, आम और नीम की सूखी लकड़ियाँ, चिड़चिड़ी, धूप, गुग्गल, जौ, तिल और घी के योग से निम्नलिखित काक-मन्त्र का पाठ करते हुए होम कीजिए।

ॐ काक-पच्यै नमः स्वाहा श्री फट्।

उपर्युक्त मन्त्र का पाठ करते हुए एक सौ आठ बार आहुतियाँ देकर होम-यज्ञ समाप्त कीजिए। याद रहे, होम के समय कौवे के घोंसले की लकड़ियाँ अन्यान्य लकड़ियों में मिला देंगे और पंख एवं बीट साकल में। इस प्रकार होम-यज्ञ समाप्त करने पर घर की सभी प्रेत-बाधाएं दूर हो जाएंगी।

इस होम की भस्म उठाकर मिट्टी के पके हुए पात्र में हिफाजत से रख दीजिए। जब कभी कोई स्त्री भूत-प्रेत खेले, तो कुछ भस्म उसके सिर पर छिड़ककर जरा-सी भस्म उसे चटा दिया कीजिए। उसी समय उसके शरीर से भूत-प्रेत की बाधा दूर हो जाएगी।

भूतप्रेत भगाने का मन्त्र

किसी उल्लू पक्षी को पकड़कर उसके दाएं डैने का एक बड़ा पंख निकाल

लें तथा उल्लू को छोड़ दें। फिर उस पंख को पानी से धोकर रख लें। अगले दिन प्रात:काल स्नानादि से पवित्र होकर पूर्व की ओर मुंह करके पद्मासन लगाकर बैठें और पंख को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार जप करें—

ॐ नमः रुद्राय, नमः कालिकायै, नमः चंचलाय, नमः कामाक्ष्यै, नमः पक्षिराजाय, नमः लक्ष्मीवाहनाय, भूतप्रेतादीनां निवारणं कुरु कुरु ठं ठं ठं स्वाहा।

हर बार मंत्र जप पूरा होने पर पंख के ऊपर एक फूंक मारते जाना चाहिए अथवा गंगाजल छिड़कना चाहिये। इससे पंख अभिमंत्रित हो जाता है। जब मंत्र जप पूरा हो जाए तो अभिमंत्रित पंख को लकड़ी की किसी पेटी के भीतर रेशमी वस्त्र में लपेटकर रख दें तथा आवश्यकता के समय उसे निकालकर प्रयोग में लाएं। जिस स्त्री अथवा पुरुष को भूत-प्रेत आदि लगा हो, उसे अभिमंत्रित पंख द्वारा १०८ बार झाड़ते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते रहने से भूत-प्रेत आदि दूर भाग जाते हैं। इस अभिमंत्रित पंख को तावीज में बंद करके भुजा अथवा कंठ में धारण करने से भूत-प्रेत कभी पास नहीं फटकते।

रविवार की अमावस्या को कहीं से एक उल्लू पकड़ लाएं। उल्लू को पकड़ते समय निम्नलिखित मंत्र का ७ बार उच्चारण करें—

ॐ नमो पक्षिराजाय नमो लक्ष्मी वाहनाय मम अभिलाषा पूर्ति कुरु कुरु स्वाहा।

फिर उस उल्लू के दाएं डैने तथा पूंछ का एक-एक पंख नोचकर अपने पास रख लें और उल्लू को उड़ा दें। दूसरे दिन प्रात:काल स्नानादि से निवृत्त होकर कुश के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर उल्लू के दोनों पंखों को अपने सामने रख लें। अब धूप, दीप, गंध, अक्षत एवं पुष्प आदि से उनका पूजन करके निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार जप करें—

ॐ नमः शिवाय, नमः कमलासनाय, नमः लक्ष्मी वाहनाय, नमः मनोभिलाषा पूर्ति करणाय, मम दुष्ट ग्रहं शान्तं कुरु कुरु स्वाहा।

इस विधि द्वारा २१ दिनों तक नित्य प्रात:काल उल्लू के पंखों का पूजन तथा मंत्र का जप करें। फिर उन पंखों को लाल रंग के किसी रेशमी कपड़े में लपेटकर अपनी दाईं भुजा में बांध लें। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों में अभिचार कर्म, दुष्ट ग्रहों और भूत-प्रेत का प्रभाव दूर हो जाता है तथा मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

भूत-प्रेत से स्वयं मुक्ति

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतंगाय नमो रुद्राय नमः सिद्धाय स्वाहा।

भूत बाधा से पीड़ित व्यक्ति द्वारा स्वयं इस मन्त्र का अपनी सामर्थ्य भर अधिक से अधिक संख्या में जप करते रहने से ही भूत-प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

भूत-प्रेत हटाने हेतु शक्तिशाली यन्त्र व मन्त्र

रवि, पुष्य, रवि मूल नक्षत्र अथवा किसी शुभ मुहूर्त में नीचे दिये यन्त्र को अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम द्वारा बनाएं और चांदी के तावीज में बंद

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय जंभय जंभय अंघय अंघय वधिरय वधिरय मूकवत् कारय कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

करके, १२५०० बार मन्त्र का जप करें। फिर तावीज को काले डोरे की सहायता से दाएं बाजू पर धारण कर लें। यदि शत्रु आक्रमण करने आए तो तावीज पर बायां हाथ रखकर उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ना प्रारंभ कर दें। शत्रु भाग खड़ा होगा अथवा पराजित हो जाएगा। किसी के भूत, पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो, तो तावीज को दाएं हाथ की मुट्ठी में बंद करके, मन्त्र-जप करें और तावीज से झाड़ा दे दें, भूतादि का उपद्रव शांत हो जाएगा। यन्त्र को बाजू पर बांधकर और मन्त्र-जप करके किसी यात्रा पर जाएंगे, तो मार्ग में किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं होती है।

भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी निवारण यन्त्र

इस यन्त्र को आंकडां नामक पौधे के हरे पत्ते पर गोरोचन, हरताल, हिंगुल और मैनसिल के मिश्रण से लकड़ी की कलम द्वारा लिखा जाता है। यन्त्र लिखने के बाद दीप और धूप जलाकर इसकी पूजा करें और फिर पत्ते को लपेटकर कलावे अथवा कच्चे सूत की डोरी से गले, भुजा अथवा कमर से बांध दें। कितना भी शक्तिशाली भूत हो इस यन्त्र के प्रभाव से स्वयं छोड़कर भाग जाता है।

भूतादि दुष्ट आत्माओं के निवारण के मन्त्र

ऐ सरसो पीला सफेद और काला। तू चलना-फिरना भाई-सा चाला।। तोहरे बाण से गगन फट जाय। ईश्वर महादेव के जटा कटाय।। डाकिया, योगिनी व भूतपिशाच। काला, पीला, श्वेत, सुसांच।। सब मार-काट करूं खेत खरिहान। तेरे नजर से भागे भूत लै जान।। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी दोहाई।।

थोड़ी-सी सरसों लेकर उपर्युक्त मन्त्र का ३ बार उच्चारण करके भूत-बाधा से ग्रस्त रोगी पर फूंकें और उसमें से थोड़ी-सी बचाकर अग्नि में डाल दें।

ओं नमो भसाणं वरसिने भूत-प्रेतनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का प्रयोग करने से पहले इसकी सिद्धि आवश्यक है। सिद्धि प्राप्त

करने के लिए इसका १००० जप करना चाहिए। उसके बाद ही इसके प्रयोग का अधिकार प्राप्त होता है। भूत-ग्रस्त रोगी को ७ बार झाड़ना चाहिए।

जीरा जीरा महाजीरा जिरिया चलाय। जिरिया की शक्ति से फलानी चलि जाय।। जीये तो रमटले मोहे तो मशान टले। हमरे जीरा मन्त्र से अमुख अंग भूत चले।। जाय हुक्म पाडुआ पीर की दोहाई।।

ऊपर्युक्त मन्त्र से थोड़ा-सा जीरा ७ बार अभिमंत्रित कर रोगी के शरीर से स्पर्श कराएं और उसे अग्नि में डाल दें। रोगी को इस स्थिति में बिठाना चाहिए कि उसका धुआं उसके मुख के सामने लगे। इस प्रयोग से भूत-बाधा की निवृत्ति होगी।

भूत सबको भई काहे आमन्द अपार। जिसको गुमान से अमुको को भार।। हमरे संइको पऊं करो सलाम हजार। जाते होय भूत आवेश किनार।। जितनी मेथी छोर बड़े और आदि से अन्त। तिसके ध्रूम ग्रन्थ ते जल में भूत भगते।। अमुक अंग भूत नहीं, यह मेथो के लाय। उठी के आगे रत क्षण में जाय पराय।। आलेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई।।

थोड़ी-सी मेथी को ७ बार अभिमंत्रित करके रोगीके शरीर से स्पर्श कराएं और उसे अग्नि में डाल दें। रोगी को इस स्थिति में बिठाना चाहिए कि उसका धुआं उसके मुख के सामने लगे। इस प्रयोग से भूत-बाधा की निवृत्ति होती है।

तह कुठठ इलाही का बान। कूडूम की पत्ती चिरावन। भाग भाग अमुक अंग से भूत। मारूं धुलावन कृष्ण वर पूत। आज्ञा कामरू कामाख्या हारि दासी चण्डी दोहाई।

एक मुट्ठी भर धूल लेकर उसे ३ बार अभिमंत्रित करें और भूत-बाधा ग्रस्त रोगी पर फेंकें। इससे भूत-बाधा की निवृत्ति होती है।

ओं नमः आदेश गुरु को हनुमंत बीर बीर बजरंगी वज्र धार डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत जिन्न सबको अब मार मार, न मारे तो निरंजनि निराकर की दोहाई।

इस मन्त्र के प्रयोग से पहले हनुमान्जी की पूजा-उपासना करना आवश्यक होता है। इसका शुभारम्भ शनिवार से करना चाहिए। निरन्तर २१ दिन तक श्रद्धापूर्वक पूजा, उपासना व २२१ मन्त्र नित्यप्रति जप करने के पश्चात् किसी चौराहे की कंकड़ी लें, उस कंकड़ी और उड़द को ७ बार अभिमंत्रित करके रोगी को झाड़ा दें।

हल्दी गीरी बाण वाण को लिया हाथ उठाय। हल्दी बाण से लीनगिरी

पहाड़ थहराय।। यह सब देख बोलत बीर हनुमान। डाइन योगिनी भूत प्रेत मुंड काटौ तान।। आज्ञा कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि की चंडी की दोहाई।।

थोड़ी-सी हल्दी लेकर उसे ३ बार अभिमंत्रित करके अग्नि में छोड़ें ताकि उसका धुआं रोगी के मुख की ओर जाए। इसे हल्दी बाण मन्त्र कहते हैं।

डाइन-चुड़ैल दोष की निवृत्ति के लिए मन्त्र

बैर बैर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुं तुझे सुनु सबं नासी मेरी गांसी।। वर बैल करे तूं कितना गुमान। काहे नाहीं छोड़ती यह जान स्थान।। यदि चाहै तूं रखना अपना मान। पल में भाग कलाश लै अपनो प्रान।। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।।

डाइन, चुड़ैल व प्रेतनी आदि से प्रभावित रोगी को स्वस्थ करने के लिए २१ बार इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए फूंक मारनी चाहिए। स्मरण रहे इस मन्त्र का प्रयोग इसे सिद्ध करने के बाद ही करना उपर्युक्त रहेगा। दशहरे में १०८ बार मन्त्र जप से इसकी सिद्धि हो जाती है।

चुड़ैल भगाने की दूसरी विधि

बैर वर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुं तुझे सुनु सर्वनासी मेरी मांसी।।

इस मन्त्र को दीपावली, होली, दशहरा या ग्रहण के दिन सिद्ध करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर मन्त्र पढ़कर रोगी पर फूंक मारें। यह क्रम तब तक करें जब तक कि रोगी चुड़ैल बाधा से पूरी तरह मुक्त न हो जाए।

मसान

सफेदा मसान, गुरु गोरख की आन। यमदण्ड मसान काल भैरों की आन। सुकिया मसान, नोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरों की आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन। कमेदिया मसान, कालिका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मद पीर की आन।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१ बार झाड़ा करने से मसान दोष समाप्त हो जाता है।

डाकिनी मन्त्र

ॐ नमो नारसिंह पार्डहार भस्मना। योगिनी बंध डाकिनी बंध चौरासी दोष, बंध अष्टोत्तर शत व्याधि बंध, खेदी खेदी, भेदी भेदी, मारे मारे, सोखे सोखे, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, कुरों नारसिंह सवीर की शक्ति।।

4Books.com

किसी भी ग्रहण में जपकर उपरोक्त मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर इस मन्त्र का सस्वर उच्चारण करते हुए बाधाग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा देवें। तुरन्त लाभ होगा।

चुड़ैल हेतु मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। कवलाछरी बावन वीर। कलू बैठनो जल के तीर। तीन पान का बीड़ा खवाऊं। जैठे बैठा जतलाऊं। वाचा चूके तो कंकाली की दुहाई। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा मेरे गुरु का वचन सांचा।।

इस मन्त्र से झाड़ा करने से बाधाग्रस्त सभी चुड़ैल दोषों से मुक्त हो जाता है।

औपरा हेतु मन्त्र

उलटंतं देह, पलटंतं काया। उतर आव गुरु ने बुलाया। शेष सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मन्त्र का जप करते हुए बाधाग्रस्त व्यक्ति को ३१ बार झाड़ा करें तो रोगी स्वस्थ हो जाता है।

डायन हेतु मन्त्र

जल बांका। जल बांका। अमुकेर, काया बांका। डाइनेर दृष्टि पढ़न पानी। सुनो गोमाया अधर कहानी। समन काटि के माता दिहली। बार उज्जान छोड़े भाठी। घर धूला बान। धूसर बान। शब्द भेदी महाबान। ऐहि मन्त्र पढ़ें से। ॐ हानिः श्री राम हुंकारे।

इस मन्त्र का जप करते हुए धूल-राख, सरसों पीड़ित व्यक्ति को मारने से बाधाग्रस्त व्यक्ति शीघ्र ठीक हो जाता है।

भूत-प्रेत आदि निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च, वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च-मम वांछितं पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

पीले वस्त्र, पीला आसन, पीली माला का उपयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर जप शुरू करें। ११००० जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध होने पर भूत-प्रेत आदि के भय के समय एक माला फेरने से संकट टल जाएगा। अनार की कलम से अष्टगन्ध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधने से ज्वर जायेगा। रवि पुष्य नक्षत्र में लिखकर पास में रखने से यात्रा में किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

श्री मणिभद्र भूत-प्रेत-बाधा निवारण-मन्त्र

श्री मणिभद्र देव एषः योगः फलतु।

यह मन्त्र एक बार प्रतिदिन में ही बोला जाता है।

ओं नमो भगवते मणिभद्राय, क्षेत्रपालाय, कृष्णारूपाय, चतुर्भुजाय, जिन शासन भक्ताय, नव नाग सहस्त्रवलाय, किन्नर किं पुरुष गन्धर्व राक्षस भूत प्रेत पिशाच सर्व शाकिनीनां निग्रहं कुरु कुरु स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

उत्तर दिशा की ओर मुंह करके, लाल रंग की माला से तीन दिन में १२५०० जप करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें और दीपक अखंड रखें तब मन्त्र सिद्ध हो। फिर रोज एक माला का जप करें, भूत-प्रेत आदि की सर्व बाधाएं दूर होंगी।

भूत-प्रेत व दुष्टभय निवारक मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय जंभय जंभय अंधय बधिरय बधिरय मूकवत् कारय-कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

किसी को भूत, पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो, मुट्ठी बंद करके इस मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें व झाड़ें तो उपद्रव निश्चय ही शान्त हो। ईशान कोण की तरह मुंह करके आधी रात के समय आठ रात्रि तक इस मन्त्र की साधना करें, धूप-दीप करें, ११०० जप करें तो व्यन्तर-देवका उपद्रव शान्त हो। यही नहीं जिस समय शत्रु सामने आक्रमण करने आए तो मुट्ठी बंद करके इस मन्त्र का १०८ बार जप करें। वह मुट्ठी शत्रु के सामने करें तो शत्रु स्वयं परास्त हो जाएगा।

आप एक सद्‌गृहस्थ हैं अतः ऊपरी हवाओं से लोगों को बचाने और छुड़ाने का कार्य तो अवश्य करें परन्तु इसे अपना व्यवसाय न बनाएं। दूसरों का भला करने के लिए निःस्वार्थ भाव से जो यह कार्य करता है, उसे समाज में सम्मान और परमपिता परमेश्वर की कृपा से सभी सुख स्वयं ही मिलते रहते हैं। परन्तु जो इस कार्य को पेशा बना लेते हैं, उनका तो लोक और परलोक दोनों ही खराब हो जाते हैं, अतः इस बारे में विशेष सावधान रहें।

सुख-समृद्धि दायक कालिका मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। साथ भवानी कालिका।। बारह वर्ष कुमार। एक माई परमेश्वरी।। चौदह भुवन द्वार। दो पक्ष निर्मली।। तेरह देवी-देव। अष्ट भुजी परमेश्वरी।। ग्यारह रुद्रकर सेव। सोलह कला सम्पूर्णा।। तीन नयन भरपूर। दश अवतारी।। पाँच देव रक्षा करें। नव नाथा-चौरासी सिब्द्ध।। षट्-दर्शन पाइए। पन्द्रह तिथि जान।। चार वेद वखानिए। काली कर कल्याण।।।

विधि—इस मन्त्र का जो साधक नित्य सच्चे मन से माँ कालिका का ध्यान कर जप करता है वह संसार के सम्पूर्ण सुख प्राप्त करता है। उसको जीवन में किसी तरह का अभाव नहीं रहता है।

4ABooks.com

इस मन्त्र में महा कालिका के चौंतीस के यन्त्र की सम्पूर्ण विधि समाई हुई है इस लिए इस मन्त्र का जप कर झाड़ा करने से भूत-प्रेतादि दोषों का निवारण होता है।

भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र

तह कुष्ठ इलाही का बान कूडूम की पित्ती चिरावत भाग भाग अमुकं अंग से भूत मारूँ धुनवान कृष्ण वर पूत आज्ञा कामरुकामाख्या हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।।

एक मुट्ठी धूल तीन बार मन्त्र पढ़कर मारने से भूत भय दूर होते हैं।

चुड़ैल भगाने का मन्त्र

बैर बर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुँ तुझे सुनु सर्व नासी मेरी गाँसी।।

किसी भी शुभ रात्रि को १००१ बार जप करके सिद्ध कर लें फिर रोगी पर प्रयोग करना हो तो ११ बार पढ़कर जल छिड़कें।

भूत भय नाशन मन्त्र

ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।।

प्रयोग विधि—दीपावली की रात्रि को एक हजार आठ मन्त्र जाप कर सिद्धि कर लें फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को दिन में कुत्ता और घुग्घु का मल (विष्ठा) ऊँट के बाल, सफेद घुघुंची, गन्धक, गोबर, कड़ुवा तेल, सिरस नामक वृक्ष के फल तथा पत्ते लाकर हवन कर उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जाप करने से भूत-प्रेत-वैताल-राक्षस, डाकिनी, शाकिनी, प्रेतनी, आदि समस्त बाधायें दूर होती हैं।

डायन, पिशाचिनी भगाने का मन्त्र

वर बैल करे तू कितना गुमान काहे नहीं छोड़ता यह जान स्थान यदि चाहै तूँ रखना आपन मान पल में भाग कैलाश लै अपनी प्रान आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई आदे हाड़ी दासी चण्डी की दुहाइ।

सिद्धि करने की विधि—इस मन्त्र को विजयादशमी की रात्रि को एक सो आठ बार जाप कर सिद्धि करें, फिर रोगिणी पर इक्कीस बार पढ़कर फूँक मारें तो डायन चुड़ैल पिशाचिनी आदि से छुटकारा प्राप्त हो।

भूत भय नाशन

ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु-कुरु स्वाहा।

मंत्र प्रयोग करने की विधि—दीपावली की रात्रि को १००८ बार मंत्र का जाप कर मंत्र को सिद्ध ले, फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को कुत्ता, बिल्ली

और चूहा का मल (विष्ठा) ऊंट के बाल, गंधक, गोबर कड़वातेल लाकर मिश्रण तैयार कर उक्त मंत्र से १०८ बार हवन करने से भूत-प्रेत-बेताल डाकिनी, शाकिनी, प्रेतनी आदि समस्त बाधाएं स्वत: ही दूर हो जाती हैं।

भूत बाधा नाशन प्रयोग

गुग्गुल, धूप बत्तीसा, सरसों आदि लावे। इसे पीसी हुई लालमिर्च के साथ मिलाकर-घर में धूप के रूप में जलावें। भूत-प्रेत आपके घर के आस-पास भी फटक नहीं पाएंगे।

चामुण्डा मन्त्र प्रयोग

३२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ चामुण्डे अमुकीं वशमानय स्वाहा। इति द्वात्रिंशत्यक्षरो मन्त्रः।

पुष्ये पुष्पं च संग्राह्य भरण्यां तु फलं तथा। शाखां चैव विशाखायां हस्ते पत्रं तथैव च।। मूले मूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्य तत्क्रमात्। पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनासमम्।। तिलकात्स्त्री वशं याति यदि साक्षादरुन्धती। काकजङ्घा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम्।। तैर्दत्ते भोजने बाला श्मशाने रोदिति ध्रुवम्। प्रातर्मुख तु प्रक्षाल्य सप्तवाराभिमन्त्रितम्। यस्या नाम्ना पिबेत्तोऽयं सा स्त्री वश्या भवेद ध्रुवम्।।

काले धतूरे का पुष्य नक्षत्र में फूल, भरणी में फल, विशाखा में शाखा, हस्त में पत्र और मूल में जड़ का क्रमश: संग्रह करके उन्हें पीसकर कपूर, केसर तथा गोरोचन को समभाग मिलाकर उससे तिलक करने पर यदि साक्षात् अरुन्धती के समान पतिव्रता ही कोई स्त्री क्यों न हो वह साधक के वंश में हो जाती है। काकजङ्घा वचा, कूठ तथा शुक्र और शोणित को मिश्रित करके भोजन में देने से बोला निश्चित रूप से श्मशान में रोती है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से प्रात:काल सात बार मुख धोकर जिसके नाम से जल का पान साधक करेगा वह स्त्री निश्चित रूप से उसके वश में हो जायगी।

नजर उतारने का मंत्र-१

मुर्गे की चोंच के ऊपरी भाग को दूध में धोने के बाद सोने या चांदी के तावीज में भरें। फिर तावीज में काले रंग का रेशमी डोरा पिरोकर उसका मुंह बंद कर दें। सोमवार के दिन प्रात: काल पूर्वाभिमुख बैठकर तावीज को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार उच्चारण करके उसे अभिमंत्रित करें अर्थात् प्रत्येक बार मंत्र पढ़ने के बाद तावीज पर एक-एक फूंक मारते चले जाएं। फिर तावीज को बालक के गले में पहना दें। इसके प्रभाव से बालक को किसी की नजर नहीं लगेगी।

44Books.com

ॐ नमः शिवाय दुष्टिदोषविनाशनाय नमः रुद्राय, नमः उमामहेश्वराय, कं खं गं घं ङं डिम डिम स्वाहा।

एक पूरा नीबू लेकर श्री हनुमान्‌जी का स्मरण करके निम्न मंत्र का जप करते हुए नजर से पीड़ित बच्चे के सिर से पैर तक उतारें। फिर उस नीबू को ले जाकर किसी चौराहे पर काटकर प्रत्येक मार्ग पर फेंक दें। छुरी भी चौराहे पर ही छोड़ आएं। बुरी नजर दूर हो जाएगी। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ श्री हनुमते नमः।

नजर उतारने का मन्त्र-२

सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, दीपावली, होली में सिद्ध करके निम्नलिखित मन्त्र से नजर झाड़े।

गुरु चरण दिया मन, श्री हरि मोक्ष कारण, देव-दानव-दैत्यादि, खाई नरसिंह वीर आसी सब उड़ाई आलाली पालाली चोटी चोटी हंकारे फूंकारि उड़ाव मारी शलि लेकर पांव पांव टुकरियां जाए, अनुकार आए, डाईनेर दृष्टि, पलायकरा अक्षा वीर नरा सिंह आज्ञा।

नजर उजारने का मन्त्र-३

ओं नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्र पद्मावति सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा।

इस मन्त्र को दीपावली के दिन, इसकी एक माला फेरकर सिद्ध कर लें, फिर शुद्ध जल को इस मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर, रोगी को पिलाने से कैसी भी नजर लगी हो, तुरन्त उतर जाएगी।

नजर उतारने का मन्त्र-४

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरु को। ॐ नमो नजर जहां पर वीर न जानी, बोले छल सो अमृत बानी। कहो नजर कहां से आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरी का ठाम, किसकी बेटी कहो तेरा नाम। कहां को जाया, अब ही बस कर ले, तेरी माया, मेरी बात सुनो चित लगाओ, जैसी होय सुनाऊं आय, तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी राजा की रानी, जाको दोष तुम्हारे सिर पर पड़े। हनुमंत वीर नजर से रक्षा करें। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण के समय मन्त्र जप कर सिद्ध करें और बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से झाड़ें। इससे लाभ होगा।

नजर उतारने का मंत्र-५

मोर का पंख या मोर पंख का झाड़ू लेकर बालक के सिर से पांव तक झार दे और झारते हुई इस मंत्र को पढ़ते जाए।

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु का, ॐ नमों हनुमंत वीर नजर को बांधे, बावन वीर कहुरे, नजर कहां से आई। यहां की राह तोहे कौन बताई। क्या है जाति तेरा क्या है नाम किस तरह की लड़की, कहां है तेरा धाम, कहां से आई कहां तक जाए, अबहि बस करले तेरी माय। मेरी जाति सुनो चितलाय। जैसी सुनाऊ आए। तेलिन, तमोलिन, चुड़ि चमारिन, कायथिन, कथरानी, कुम्हारीन्, मेहतरानी, राजा रानी, जिसकी नजरे उसी के जाए पड़े प्रत्यक्ष देव दृष्टि रक्षा करे।

उक्त मंत्र द्वारा झार से नजर उतर जाएगी। यदि मोर पंख नही हो तो जलती हुई अगरबत्ती और चाकू से भी झारा जा सकता हैं।

दृष्टिदोष (नजर) नाशक मन्त्र

मंत्र को दीपवली के दिन इसकी एक माला फेरकर सिद्ध कर लें। फिर शुद्ध जल को इस मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर रोगी को पिलानेसे कैसी भी नजर लगी हो, तुरन्त उतर जाएगी।

ओं नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्र पद्मावति सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।

नजर लगने पर इन मन्त्रों का प्रयोग करें

ग्रहण के समय प्रस्तुत मन्त्र को जप कर सिद्ध करें और बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से झाड़े। इससे फायदा होगा।

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरु को। ॐ नमो नजर जहां पर वीर न जानी, बोले छल सो अमृत बानी। कहो नजर कहां से आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरी का ठाम, किसको बेटी कहो तेरा नाम। कहां को जाया, अब ही बस कर ले, तेरी माया, मेरी बात सुनो चित लगाओ, जैसी होय सुनाऊं आय, तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी राजा की रानी, जाको दोष तुम्हारे सिर पर पड़े। हनुमंत वीर नजर से रक्षा करें। मेरी भवित, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

नजर झाड़ने का मन्त्र-१

ॐ नमो सत्य आदेश गुरु को, ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी, बोले छलसों अमृतवानी, कहो नजर कहा ते आई, यहां की ठौर तोहि कौन

44Books.com

बताई, कौन जात तेरो कहां ठाह, किसकी बेटी कहा तेरो नाम, कहां से उड़ी कहां को जाया, अब ही बसकर ले तेरी माया। मेरी बात सुनो चित लाय, जैसी होय सुनाऊं आय। तेलन, तमोलन, चुहड़ी, चमारी, कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी, जाको दोष ताही के शिर पड़े, जाहर पीर नजर से रक्षा करे, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र का जप मंगलवार से प्रारम्भ कर शनिवार को समाप्त करना चाहिए, ५१ मालाएं फेरनी चाहिए। साधक को दक्षिण की तरफ मुंह कर तेल का दीपक जलाकर इस मन्त्र को सिद्ध करना चाहिए। शनिवार की शाम को जब मालाएं पूरी हो जाएं, तब एक किलो गेहूं उबालकर जंगल में फेंकने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। इस प्रकार से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर मोर-पंख से मात्र तीन बार इस मन्त्र को पढ़कर नजर झाड़ दें तो निश्चय ही नजर उतर जाती है। चाहे वो बालक या स्त्री हो अथवा मकान या दुकान।

नजर झाड़ने का मंत्र-२

कई बार बच्चों को नजर आदि लगने की समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे बच्चा बीमार हो जाता हैं, उलटी, दस्त, बुखार, जुकाम आदि समस्या उत्पन्न हो जाती है। निम्न मंत्र से २१ बार झाड़ा देने पर नजर उतर जाती है।

हरि हरि स्मरिके हय मन करुं स्थिर चाउर आदि फेक के पाथर आडिवीर डायन दूतिन दानवी देवी के आहार बलक गण पहिरे हाड़ गला हार राम लखण दूनो भाई धनुष लिए हाथ देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माय गई पराय सब डायरी योगिनी सात समुद्र पार में खावे खारी पानी आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई आदेश नैना योगिनी के दोहाई।

उपरोक्त मंत्र को २१ बार पीड़ित व्यक्ति (जो नजर या टोकार आदि से पीड़ित हो) के सामने पढ़े। पढ़ते समय अगरबत्ती अवश्य ही लगा लेवे।

नजर दोष दूर करने का मंत्र

ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी। बोले छल सों अमृत बानी।। कहीं नजर कहां ते आई? यहां की ठोरि तोहि कौन बताई? कौन जात तेरी कहां ठाम? किसकी बेटी क्या तेरी नाम? कहां से उड़ी कहां की जाया? अब ही बस कर दे तेरी माया? मेरी जात सुनो चितलाय। जैसी होय सुनाऊं आय। तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कामथनी खातरानी कुम्हारी।। महतरानी राजा की रानी। जाको दोष ताहि सिर पड़े। हनुमन्त वीर नजर के रक्षा करें। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।।

इस मंत्र को पढ़ते हुए रोगी को सिर से पैर की तरफ झाड़ा करे तो दृष्टि का दोष नजर लगना समाप्त हो जाता है। सूर्य-चंद्र ग्रहण के समय जप करके इस मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से ११ बार झाड़ दें। सुख व शांति होगी।

डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र

हरि हरि स्मरिके हम मन करुँ स्थिर चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर डायन दूतिन दानवी देवी के आहार बालक गण पहिरे हाड़ गला हार राम लषण दूनों भाई धनुष लिये हाथ देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माथ गई पराय सब डायनी योगिनी सात समुद्र पार में खावे खारी पानी आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई आदेश नैना योगिनी के दोहाई।

प्रयोग विधि—उपरोक्त मन्त्र विधि के अनुसार सिद्धि कर झाड़ने से दृष्टि बाधा दूर होती है।

नजर झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

हनुमान चलै। अवधेसरिका।। वृज-मण्डल। धूम मचाई।। टोना-टमर। डीठि-मूठि।। सबको खैचि बलाय। दुहाई छत्तीस।। कोटि देवता की। दोहाई लोना।। चमारिन की।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में, पवन पुत्र हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए १० माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय मोर पंख से २१ बार झाड़ा करने से बालकों को लगी नजर दूर हो जाती है।

अतर मोहिनी

मन्त्र—**अलहम्दोगवानीवो मेरेपर हो दिवानी जो न हो दिवानी तो सैयाद कादर अब्दुल जलानी चुट्टा पकडकर करो दिवानी। इति मन्त्रः।**

उत्कृष्ट अतर (इत्र) को शीशी में डालकर १०८ बार मन्त्र पढ़े और शीशी के भीतर फूँक मारे। इसी तरह प्रत्येक माला पूरी होने पर फूँक मारता रहे। जब १ हजार मन्त्र पढ़ चुके और शीशी में दश फूंके लग चुकें तब शीशी को किसी स्वच्छ स्थान में रख दे। इसी प्रकार २१ दिनों तक करने से शीशी का अतर चक्कर देने लगेगा। जब अतर चक्कर देने लगे तब जान ले कि वह सिद्ध हो गया है। अगर २१ दिन में अतर चक्कर न मारे तो फिर ४० दिन तक मन्त्र का जप करे। तदुपरान्त जिस स्त्री की इच्छा से यह कार्य किया हो उसे अतर सुँघाने से वह वशीभूत हो जाती है। यह अत्यन्त चमत्कारी और अनुभूत मन्त्र है, इसे मिथ्या नहीं जानना चाहिये।

लूणमोहिनी

मन्त्र—**ॐ नमो हयलूण सुहावय लूण अईसा लूण मसाणां हमां पाया अमुकादिद अमुक खाय तरुवाचाटत जन्म जाय। इति मन्त्रः।**

इस मन्त्र से २१ बार नमक को अभिमन्त्रित कर खिलाने से वशीकरण होता है।

सुपारीमोहिनी

मन्त्र—**पीर मैं नाथ पीर तूं नाथ जिस्को खिलाऊं तिस्को वश करना फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

ग्रहण के समय नाभि पर्यन्त जल में खड़ा होकर एक सुपारी को सात बार अभिमन्त्रित करके निगल जाय। जब वह (मल के साथ) निकले तब उसे जल से धोकर फिर दूध से धोवे और १०८ बार मन्त्र पढ़कर गूगल की धूनी दे। तदुपरान्त उस सुपारी का एक टुकड़ा भी जिसे खिला दे वह चाहे पुरुष हो या स्त्री, अवश्य वश में हो जायगा।

इलायचीमोहिनी

मन्त्र—**ॐ नमो काला कलुवा काली रात निसकी पुतली मांझी रात काला कलुवा घाटवाट सोतीको जगाय ल्याव बैठीको उठाय ल्याव खड़ीको चलाय ल्याव वेगी धर ल्याव मोहिनी जोहिनी चल राजाकी ठाव अमुकीके तनमें चटपटी लगाव जियाले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची कभी न छोड़ै हमारा साथ घरको तर्ज बहेरको तजै घरके साईको तजै हमे तज और कनेजाय तो छाती फाड तुरत मरजाय सत्य गुरू आदेस गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ईश्वर महादेवकी वाचासे टरै तो कुम्भी नरकमें पड़ै। इति मन्त्रः।**

२१ दिन में इसे सिद्ध कर ले। फिर इस मन्त्र से अभिमन्त्रित इलायची जिसे खिला दे वह अवश्य वश में हो जायगा।

लौंग मोहिनी

मन्त्र—**सत्य नाम आदेश गुरूको लौंकलौंग मेरा भाई इन्हीं लौंगने शक्ति चलाई पहेली लौंग राती माती दूजी लौंग जोवनमाती तीजी लौंग अंग मरोड़ै चौथी लौंग दोऊ कर जोड़ै चारों लौंग जो मेरी खाय फलाने के पाससे फलानेकने आजाय गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

शनिवार से प्रारम्भ करके रात्रि के समय पूजन करे और मन्त्र का नित्य १०८ जप करने से २१ दिन में सिद्ध होता है। फिर ४ लौंग अभिमन्त्रित करके जिसे खिला दे वह अवश्य वश में हो जाता है—यह बिल्कुल सत्य है।

राजवशीकरण

मन्त्र—**हथेली में हनुमन्त बसै, भैरूं बसै कापाल। नारसिंहकी मोहिनी,**

मोहा सब संसार। मोहन रे मोहन्ता वीर सब वीरनमें तेरा सीर सबकी दृष्टि बांधिदे तोहि तेल सिन्दूर चढ़ाऊ तोहि तेल सिन्दूर कहांसे आया कैलासपर्वतसे आया कौल ल्याया अञ्जनीका हनुमन्त गौरीका गणेश ल्याया कालागोरा तोतला तीनू वसै कपाल विन्दा तेल सिन्दूरका दुश्मन गया पताल दुहाई कामियां सिन्दूरकी हमें देख सीतल होजाय मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।

रविवार को नृसिंह का पूजन करके १२१ बार मन्त्र पढ़े। इसी प्रकार सात रविवारों तक करे, तेल का दीपक जोड़े, लोहबान की धूप दे और मोदक चढ़ावे। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। सिद्ध मन्त्र से सिन्दूर को अभिमन्त्रित करके मस्तक पर बिन्दी लगाने से राजा का क्रोध शान्त हो जाता है और वह प्रसन्न होता है।

सभा मोहिनी

मन्त्र—**कालूं मुख धोये करूं सलाम मेरी आंखोंमें सुरमा बसै जो देखै सो पायन परै दुहाई गौसुलआजमदस्तगीरकी छू। इति मन्त्रः।**

सवा लाख गेहूं पर मन्त्र पढ़े, फिर उसे पिसवाकर उसके आटे में घी और चीनी मिलाकर हलवा तैयार करे। गौसुल आजमदस्तगीरकी नियाज दिलावे और उस हलवे को स्वयं खाकर सिद्ध हो। पदुपरान्त जब राज दरबार में जाने का काम पड़े तब सुरमें को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नेत्रों में लगाकर जाय तो सम्पूर्ण सभा वशीभूत होकर साधक की हाँ में हाँ मिलायेगी।

नग्न मोहिनी

मन्त्र—**पद्मनी अञ्जन मेरा नाम इस नगरीमें पैसके मेहेसगरागाम राज करन्ता राजा मोहूं फरस बैठा पञ्चमोहूं पनघटकी पनिहार मोहूं इस नगरीमें पैसके छत्तीस पवना मोहूं जो कोई मारमार करन्ता आवै ताहि नारसिंह बाया पगके अंगूठा तरे घेरघेर ल्यावै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।**

रवि-शनि की रात को धूप, दीप, चन्दन, पुष्प, रोली, चावल, गूगल, पान सुपारी और लौंग से नृसिंह का पूजन करे और १०८ बार मन्त्र का जप करे। प्रत्येक मन्त्र से पान, सुपारी, शक्कर, घृत और गूगल का हवन करे। इससे सिद्धि प्राप्त हो जाने पर नन्दन वन के कपास की रूई में ओंगा की जड़ लपेटकर बत्ती बनावे और तेल से दीपक भरकर उस बत्ती को जलाकर काजल पारे। उस काजल को सात बार अभिमन्त्रित करके नेत्रों में लगा लेने पर सम्पूर्ण पुरुष, बालक, वृद्ध और तरुण वश में हो जाते हैं। जिस ग्राम में साधक जायेगा वहाँ सब ग्रामवासी उसकी सेवा करेंगे।

शत्रु मोहिनी

मन्त्र—ॐ नमो उच्छिष्टचाण्डालिनि कङ्कालमालाधारिणि साधुसाधु त्रैलोक्यमोहिनि प्रकाण्डक्षोभिणि शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

यह क्षोभणी देवी का मन्त्र है। इसके जप तथा हवन से शत्रुओंको क्षोभ होता है। यदि बट और शमी वृक्ष की समिधा से घी के साथ एक हजार नित्य हवन करे तो स्त्री वशीभूत होती है—इसमें सन्देह नहीं।

मूली मन्त्र प्रयोग

२५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मूली मूली महामूली सर्वं संक्षोभय संक्षोभय उपद्रवेभ्यः स्वाहा। इति पञ्चविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अंजलि में जल लेकर इस विद्या का जप करने से एक मास में वस्त्राभूषणों से अलंकृत सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है।

वशीकरण तन्त्र

यह १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः सर्वलोकवशङ्कराय कुरु कुरु स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री सर्वयोगान् साधयेत्। तथा च। ईश्वर उवाच। नृकपाले रविदिने तण्डुलैः पायसं कृतम्। छायाशुष्कं तु तच्चूर्णं खाने पीने च दीयते। यावज्जीवं वशं याति नारी वा पुरुषोपि वा। अदासो दासतां याति प्राणैरपि धनैरपि।

१०८ बार जप स सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक सभी भोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : ईश्वर बोले : रविवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी में चावल से खीर बनाये फिर छाया में सुखाकर उसका चूर्ण बना ले। उसे खान-पान में देने से चाहे नारी हो या पुरुष वह यावज्जीवन वशीकृत रहता है तथा प्राण और धन सहित दास हो जाता है।

अन्यत्। पल्लीपुच्छं गृहीत्वा तु वर्तिं ऋतुमतीस्त्रियः। ज्वालितां यं रवौ वारे दर्शयेत्स वशो भवेत्। ब्रह्मदण्डीवचाकुष्ठचूर्णं ताम्बूलमिश्रितम्। रवौ वारे कृतं चेत्स सर्वलोकेवशंकरः।

छिपकली की पूंछ को ऋतुमयी स्त्री के वस्त्र में लपेटकर बत्ती बनाकर रविवार के दिन उसे जलाकर जिसे दिखाये वह वशीकृत होता है। ब्रह्मदण्डी, वचा तथा कुष्ठ के चूर्ण को ताम्बूल के साथ रविवार के दिन मिश्रित करने से वह सर्वलोकवशंकारी होता है।

4ABooks.com

गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत्। विभूत्या संयुतं तस्य तिलको लोकवश्यकृत्।

बरगद की जड़ लेकर उसे जल से घिसे। उसकी विभूति के साथ उसका तिलक संसार को वश में करनेवाला होता है।

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभि मन्त्रितम्। यस्यास्ते स भवेत्पूज्यो वधूभिः सर्वमोहकः।

पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को सात बार अभिमन्त्रित करके जो अपने हाथ में रखता है वह वधुओं से पूज्य होता है और सबको मोहित करता है।

अपामार्गरय मूलं तु कपिलाक्षीरपेषितम्। ललाटे तिलकस्तस्य वशीकुर्यां ज्जगत्त्रयम्।

अपामार्ग की जड़ को कपिला गाय के दूध में पीसकर जो अपने ललाट पर तिलक करता है वह तीनो लोकों को वशीकृत करता है।

गृहीत्वा सहदेवीं वै छायाशुष्कं तु कारयेत्। ताम्बूले निहितं तस्याश्चूर्णं लोकवशङ्करम्।

सहदेवी को लेकर उसे छाया में सुखा ले। उसका चूर्ण ताम्बूल में रखकर देने से वह लोकवशंकारी होता है।

गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकः कृतः। प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टिमात्रान्न संशयः। ताम्बूले या प्रदातव्यं सर्वलोकवशङ्करम्।

गूलर की जड़ को लेकर उसका तिलक ललाट पर लगाकर साधक दर्शन मात्र से सर्वप्रिय हो जाता है—इसमें संशय नहीं है। इसे ताम्बूल में देने से भी सर्वलोकों का वशीकरण होता है।

देवदालीं च सिद्धार्थगुटिकां कारयेदबुधः। मुखनिक्षेपमात्रेण सर्वलोकवशङ्करः।।

बुद्धिमान साधक देवदाली तथा सिद्धार्थ (पीली सरसों) की गुटिया बनाकर उसे मुख में डालकर समस्त संसार को वश में कर लेता है।

कुंकुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिलां। अनामिकाया रक्तेन तिलकः सर्ववश्यकृत्।।

कुंकुम, तगर, कूठ, हरिताल तथा मैनसिल को अनामिका अंगुली के रक्त से मिलाकर तिलक लगाते ही साधक सभी को वश में कर लेता है।

गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगु रक्तचन्दनम्। एकी कृत्य जपेन्मन्त्रं सर्वलोकवशङ्करम्।।

4ABooks.com

गोरोचन, पद्मपत्र, प्रियंगु तथा रुक्तचन्दन को एकत्र कर मन्त्र का जप करने से साधक सर्वलोकों को वश में कर लेता है।

गृहीत्वा श्वेतगुञ्जायाच्छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन तिलको लोकवश्यकृत्।।

श्वेतगुंजा को लेकर उसे छाया में सुखा ले। उनका आधा कपिला गाय का दूध उसमें मिलाकर तिलक बनाने से साधक समस्त लोकों को वश में करने वाला होता है।

तन्मूलं पत्रताम्बूलं सर्वलोकवशङ्करम्। तन्मूलाल्लेपयेद्देहं सर्वलोकवशङ्करः।।

श्वेतगुंजा की जड़ तथा उसके पत्तों को ताम्बूल के साथ खाने से साधक सर्वलोकों को वश में करता है। श्वेतगुंजा की जड़ को देह में लेप लगाना भी सर्वलोकवश्यकारी है।

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलाक्षीरपेषिताम्। तल्लेपनाद्भवेन्मन्त्री सर्वलोक-वशङ्करः।।

सफेद दूब को लेकर कपिला गाय के दूध में पीस ले। इस लेप को लगाकर साधक सर्वलोकों को वश में करता है।

श्वेतार्कं वै गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धन तिलकः सर्ववश्यकृत्।।

सफेद मदार को लेकर छाया में सुखाकर उससे आधा कपिला गाय का दूध उसमें मिलाकर उससे तिलक लगाना सर्वलोकवश्यकारी होता है।

बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलिङ्गं तथैव च। अजादुग्धेन संपेष्य तिलको लोकवश्कृत्।।

बिल्वपत्र तथा बिजौरा नीबू एकत्र करके बकरी के दूध में पीसकर तिलक लगाना सर्वलोकवश्यकारी होता है।

कौमारीकंदमादाय विजयाबीजसंयुतम्। तिलकं धारयेद्भाले सर्वलोक-वशङ्करम्।।

हरताल, अश्वगन्धा, सिन्दूर तथा केले का रस एकत्र पीसकर तिलक करना सर्वलोकवश्यकारी है।

अपामार्गस्य बीजानि छागीदुग्धेन पेषयेत्। तल्लेनाद्भवेन्मन्त्री सर्वलोक-वशङ्करः।।

अपामार्ग के बीच को बकरी के दूध के साथ पीसकर लेप बनाये। इस लेप को धारण करने से साधक समस्त लोकों को वश में करता है।

44Books.com

हरितालं च तुलसी कपिलादुग्धपेषिता। अनेन तिलको भाले सर्वलोक-वशङ्करः।।

हरताल तथा तुलसी को कपिला गाय के दूध से पीसकर ललाट पर तिलक लगाना समस्त लोकों को वश में करनेवाला है।।७६।।

धात्रीफलरसे भाव्यमष्टगन्धं मनःशिला। अनेन तिलको भाले सर्वलोक-वशङ्करः।।

आँवले के रस में अष्टगन्ध और मैनसिल को पीसकर भाल पर तिलक लगाना समस्त लोकों को वश में करने वाला है।

राजावशीकरण तन्त्र

यह २८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा चः ईश्वर उवाच। कुंकुमं चन्दनं चैव कर्पूरं तुलसीदलम्। गोक्षीरघर्षितं तस्य तिलको राजमोंहनः।।

१०८ मन्त्र के जप से सिद्धि होती है। इस प्रका मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे। कहा गया है : ईश्वर बोले : कुकुंम, चन्दन, कपूर और तुलसीदल को गाय के घी में घोंटकर तिलक लगाना, राजवशीकरण करता है।

करे सुदर्शनामूलं बध्वा राजप्रियो भवेत्।

हाथ में सुदर्शना की जड़ बाँधकर साधक राजप्रिय हो जाता है।

सिंहीमूलं रहेत् पुष्ये कटिं बध्वा नृपप्रियः। हरितालं चाश्वगन्धा कर्पूरं च मनःशिला। अजाक्षीरेण तिलको राज्यवश्यकरः परः।।

पुष्य नक्षत्र में सिंही (भटकटैया) की जड़ को कमर में बाँधने से मनुष्य राजप्रिय होता है। हरिताल, अश्वगन्दा, कपूर तथा मैनसिल को बकरी के दूध से पीसकर तिलक लगाकर साधक राजा को वश में कर लेता है।

गृहीत्वा सुदर्शनामूलं पुष्यनक्षत्रवासरे। कर्पूरं तुलसीपत्रं पेषयेल्लिप्तवस्त्रके। विष्णुक्रान्तानि बीजानि तैलं प्रज्वाल्य दीपके। कज्जलं पातयेद्रात्रौ शुचिः पूर्व समाहितः कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे राज्यवश्यकरो भवेत्। चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोकस्य का कथा।।

पुष्य नक्षत्र में सुदर्शना की जड़ को कपूर और तुलसी के पत्र के साथ पीसकर वस्त्र पर उसका लेप करे। विष्णुक्रान्ता के बीजों को उसमें लपेटकर दीपक में

तेल डालकर रात में पवित्र और शान्तचित्त हो उसका बत्ती जलाकर काजल पारे। उस काजल को आँख में लगाने से साधक राजा को वश में करता है! इससे चक्रवर्ती राजा भी वश में हो जाता है, फिर अन्य लोगों की बात ही क्या?।

अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे। खाने पाने प्रदेयानि राजवश्य कराणि हि।।

पुष्य नक्षत्र में रविवार को अपामार्ग के बीजों को लेकर उसे खान-पान में देना चाहिये। ये बीज राजा को भी वश में करनेवाले हैं।

पति वशीकरण तन्त्र

यह १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो महायक्षिणि पतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा चः ईश्वर उवाच। गोरोचनं योनिरक्तं कदलीरससंयुतम्। एभिस्तु तिलकं कृत्वा स्वपतिं वशमानयेत्।।

१०८ जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को सिद्ध करे। कहा भी गया है ईश्वर बोले : गोरोचन और योनिरक्त को केले के साथ मिलाकर तिलक करने से नारी अपने पति को वश में करती है।

पञ्चाङ्गदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेत सर्षपसंयुताम्। योनिलेपात्पतिं दासं करोत्यपि च दुर्भगा।।

अनार के पंचांग को पीसकर श्वेतगुंजा तथा सरसो के साथ योनि में लेप करके दुर्भगा नारी भी पति को दास बना लेती है।

जिह्वामलं लवङ्गं च खाने पाने प्रदापयेत्। पतिवश्यकरं देव पतिर्दासस्तु जायते।

जिह्वा का मैल तथा लौंग खान-पान में दे। हे देव! यह पति को वश में करनेवाला है। इससे पति दासवत हो जाता है।

स्त्रीवशीकरण तन्त्र

दत्तात्रेय तन्त्र में २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कामक्षीदेवि अमुकीं मे वश्यां कुरुकुरु स्वाहा। इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि साधयेत्। तथा चः रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूर पुष्पकम्। शाखालतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं

तथैव च। पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम्। तिलकेन वशे कुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती।।

१०८ बार जप से मन्त्र सिद्ध होता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि रविवार को काले धतूरे का फूल, शाखा, लता, पत्र और मूल लेकर उसमें कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन समान भाग डालकर पीसे। इस लेप का तिलक लगाकर मनुष्य स्त्री को वश में कर लेता है चाहे वह साक्षात् अरुन्धती ही क्यों न हो।

अथाकर्षण तन्त्र

यह २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नम आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतं जपेत्। सिद्धिर्भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा च। ईश्वर उवाच। आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः। राज्ञां प्रजानां सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत्।

१०८ बार जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे। कहा भी गया है: ईश्वर बोले: मैं आकर्षणविधि को कहता हूँ, प्रयत्नपूर्वक उसे सुनो। इससे राजा तथा प्रजा सबका आकर्षण होता है।

कृष्णधत्तूरपत्रस्य सरोचनरसेन तु। श्वेतकर्वीरलेखन्या भूर्जपत्रे लिखेन्मनुम्। यस्य नाम लिखेन्मध्ये खदिराङ्गारतापितम्। शतयोजनमायाति नान्यथा शङ्करोदितम्।।

काले धतूरे के पत्ते के रस के साथ गोरोचन को पीस कर उस रंग से सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र पर उक्त मन्त्र को लिखे। मन्त्र के 'अमुकस्य' पद के स्थान पर साध्य का नाम लिखे। फिर खैर के कोयले पर उसे तपाने पर सौ योजन दूर रहने वाला भी साधक को पास आ जाता है। शंकर का यह कथन अन्यथा नहीं हो सकता।

पगच्छेदन

मन्त्र—**ॐ नमो गण्डियाभैरो गलत हाथ माथे गघरी मसकदारू जहां भेजूं तहां जाय अमुकाकी गांड मार गांड में लोही चलाव न चलावै तो लोनाचमारीकी कुण्ड में जाय फुरो मन्त्र फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।**

सवासेर मद्य, सवा पाव काला उहद, तिल दो पैसे भर—इन सबको भैरव को भेंट देकर सर्प की हड्डी की माला से नित्य ५०० मन्त्र का जप करने से बैरी की गुदा से रुधिर गिरने लगेगा।

एक अन्य ३८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सूर्यवरण निर्मल तारा साहीका कांटा नींबू मांरा अक्कासमे तारा टूटा अमुकिया तेरा पैर छूटा।

44Books.com

रविवार, शनिवार या मंगलवार को अर्धरात्रि के समय कुएँ में पैर लटकाकर नंगा बैठ जाय और मुख उस ओर करे जिधर वांछित स्त्री का घर हो। बायें हाथ में नीबू और दाहिने में सेहनर (नर साही) का काँटा लेकर आकाश की ओर देखता हुआ मन्त्र पढ़ता रहे जब तारा टूटने लगे तब मन्त्र द्वारा उस काँटे को नीबू के भीतर इस प्रकार चुभाये कि काँटा केवल आधे नीबू में चुभे, पार न हो। पार ही जाने पर प्राणनाशक का भय होता है। यह कृत्य करने से स्त्री को तत्काल रुधिर गिरने लगेगा, इसमें सन्देह नहीं है। उस नीबू को लाकर जल के समीप शीतल स्थान में रखने से रुधिर गिरता रहेगा। परन्तु उसका शरीर क्षीण नहीं होगा। किन्तु यदि उस नीबू को धूप में रक्खे तो शरीर भी सूखने लगेगा। उक्त प्रकार से तारा टूटने पर ही काँटे को नीबू के बाहर निकालकर नीबू के छिद्र को किसी वस्तु से बन्द करने से रुधिर का निकलना बन्द होकर आराम होगा।

कुछ अन्य प्रयोग

मन्त्र—**उलटा पुलटा नारा चलै, अर्जुन मारा बान। अमुकिया तेरा गर्भ चलै, कंसासुरकी आन। इति मन्त्रः।**

सफेद फूलवाले हुलहुल के १२१ बीजों को १२१ मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके पान में रखकर मुंह में चबाये और पीक थूके। जो स्त्री उस पीक का उल्लंघन करेगी उसको (योनि से) रक्त गिरने लगेगा। फिर उस पान सिट्टि खिला देने से रुधिरस्राव बन्द हो जायगा यह सर्वथा सत्य है।

मन्त्र—**ॐ हकालूं चौंसठ योगिनी हकालूं बावन वीर घस घट लोही झिरै नैर झिरै वानी मरैरे रक्तिया वीर हियो धरै ना धीर रक्तियो रक्तियो रङ्गकी रक्तियो मांगै मासकी बड़ी चावै चणा चलावै पीड़ मसाणकी माटी भौराके बिलमें लपेटी जिस्के ऊप करूं सही स्त्री झरती दीखै शब्द साचा पिण्डकाचा चलो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

श्मशान की ७ कंकड़ियाँ लेकर कूएँ के जगत् के ऊपर २१ बार अभिमन्त्रित करके धूप दे और उनसे स्त्री को मारे। इससे उसको रक्तस्राव होने लगेगा—यह सत्य है।

मन्त्र—**ॐ नमो आदेस गुरुको काला कलवां तूं अवधूत हकालूंगा दडाव लाऊ भूत हाड काट चटपटी लगाव छाती छोल पैर चलाव हिये पैठि हूल चलाव चलावचलवा रे कालाभैरूं कालिकाके पूत चलावेगी हुकम साथ न चलावै तो माता चामुण्डाका तीर चूकै। इति मन्त्रः।**

रविवार के दिन काला चिड़ा पकड़े, रेशम का सवा दो हाथ का और सूत

का दो हाथ का डोरा बनावे। दो दीपक—एक घी का और दूसरा तेल का जलावे। तेल के दीपक में ढाई पाव तेल और घी के दीपक में सवा पाव घी डाले। सवा पैसा भर उड़द घी के दीपक में डाले, सवा पैसा भर उड़द और उक्त सूत का डोरा (धांगा) तेल के दीपक में डाले और मन्त्र पढ़े।

रेशम के डोरे से चिड़े को फाँसी लगावे और गला काट डाले, जो रक्त गिरे उसे तेल के दीपक में एकत्र करे। चारों पहरों में सात-सात मन्त्र पढ़े और गूगल की धूप देता जाय। जब रात व्यतीत होने पर दिन निकल आये तब सिद्ध हुआ जानना चाहिये। फिर तेल के दीपक की १ उड़द सात बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को मारा जाय और रेशम का डोरा स्पर्श कराया जाय उसको रक्तस्राव होने लगेगा। घी के दीपक का उड़द उसे देने से रक्तस्राव शान्त होगा।

४. सत्यानासी का बीज २ माशा और चीनी ४ माशा खिलाने से मासिक धर्म के पूर्व ही रक्तस्राव होने लगेगा इसमें सन्देह नहीं है। यह सिद्ध प्रयोग है।

५. खटमल में दो विशेष गुण हैं। उसे नीचे-ऊपर के दो भागों में विभक्त करके यदि नीचे के भाग को स्त्री को खिला दिया जाय तो तत्काल रक्तास्राव होने लगेगा। फिर ऊपर के भाग को खिला देने से रक्तस्राव रुक जायगा॥१४॥

६. कौवे की चोंच से रविवार को मार्ग में रेखा खींच दे। यदि स्त्री उस रेखा का उल्लंघन करेगी तो उसको रक्तस्राव होने लगेगा। फिर उसी चोंच को धोकर उसके धोवन को पिलाने से रक्तस्राव बन्द होगा।

शत्रु मूत्रबन्धन मन्त्र

भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः। कृकलाया मुखे क्षिप्वा कंकवृक्षे च बन्धयेत्।। मूत्रबन्धो भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी। बिना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धियोगः उदाहृतः।।

मंगलवार को शत्रु द्वारा मूत्रत्याग किये स्थान की मिट्टी लेकर गिरगिट के मुख में डालकर उसे धतूरे के वृक्ष से बाँध दे तो शत्रु का मूत्रबन्धन हो जायगा। उसको खोल देने से पुनः शान्ति होगी। इसमें बिना मन्त्र के ही सिद्धि होती है यह सिद्ध योग कहा गया है।

बुदे वा शनिवारे वा कृकलां गृह्य यत्नतः। शत्रुर्मूत्रयते यत्र कृकलां तत्र निक्षिपेत्। निखनेद्भूमिमध्ये च उद्धृते च पुनः सुखी। नपुंसको भवेत्सत्यं नान्यथा शङ्करोदितम्।।

बुधवार को या शनिवार को गिरगिट को यत्न से पकड़ ले। शत्रु जहाँ मूतता हो वहाँ गिरगिट को खोदकर गाड़ दे तो शत्रु का मूत्र—बन्ध होगा। गिरगिट को

निकाल लेने से सुखी होगा। इससे शत्रु नपुंसक भी हो जाता है—यह शंकर का कथन असत्य नहीं हो सकता।

प्राकृत ग्रन्थ का प्रयोग : रविवार के दिन मरे हुए छछून्दर की खाल में शत्रु के मूत्र की मिट्टी भरकर ऊँचे स्थान में लटकाने से मूत्र बन्द हो जाता है और वह गूंगा तथा पागल हो जाता है। उस मिट्टी को छछून्दर की खाल से निकाल देने से सुख होता है। शत्रु के मूत्र में बिच्छू का डंक गाड़ने से भी शत्रु को अत्यन्त पीड़ा होती है। फिर डंक निकालने से शान्ति होती है।

शत्रुशिरसि पादुकाहनन

मन्त्र—**ॐ नमो हनुमन्त बलवन्त माता अञ्जनी पुत्र हलहलन्त आवो चढन्त आवो गढ़किला तोड़न्त आवो लङ्का जालि वालि भस्मकरि आवो ले लङ्का लंगूरते लपटाते सुमेरते पटकावो चन्द्री चन्द्रावली भवानी मिलगावो मङ्गलचार जीते राम लक्ष्मण हनूमानजी आवोजी तुम आवो सात पानका वीडा चावत मस्तक सिन्दूर चढ़ावो आवो मन्दोदरीके सिंहासन डुलन्ता आवो यहां आवो हनुमान आया जागते नृसिंह माया आगे भैरूं किलकिलाय ऊपर हनुमन्त गाजै दुर्जनको डार दुष्टको मार संहार राजा हमारे सतगुरु हम सतगुरुके बालका गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

मन्त्र की सिद्धि के लिये २१ दिन या ४१ दिन में दश हजार जप करे, पान का बीड़ा तथा मोदक का भोग लगावे, नैवेद्य द्वारा हनुमान्जी का पूजन करे और सिन्दूर तथा सुगन्धित पुष्प चढ़ावे। फिर भूमि पर शत्रु की एक प्रतिमा बना कर यथोचित बीजों को लिखे। उसके वक्ष पर शत्रु का नाम लिखकर उस पर मन्त्र से दो जूते मारे। यदि प्रतिमा के सर पर जूता मारा जाय तो शत्रु का सर फूट जाता है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह पागल हो जाता है—इसमें सन्देह नहीं है।

शत्रुपीडन

मन्त्र—**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरभैरव त्रिपुरवीर मम शत्रोरमुकस्य पीडां कुरुकुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।**

वृश्चिक के चन्द्रमा में गधे की खाल पर नीचे दिये तन्त्र को लिखे। उसमें नीचे शत्रु का नाम और उसकी माता का नाम लिख कर यन्त्र को गूगल की धूप देकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु के चौखट के नीचे या आँगन में अथवा मार्ग में गाड़ दे। जब शत्रु इस मन्त्र का उल्लंघन करेगा तो उसे अत्यन्त पीड़ा होगी अथवा शत्रु के पाँव के नीचे की मृत्तिका को सात करेलियों में भरकर प्रत्येक करेलों के ऊपर सात बार मन्त्र पढ़कर चरखे के टेकुये में पिरोये और फिर उन्हें अग्नि में तपाये। इससे बैरी को अवश्यमेव अत्यन्त कष्ट होगा।

4Books.com

मन्त्र—ॐ कालाभैरूं झङ्कालका तीर मार तोड दुश्मनकी छाती घोर हाथ कलेजो काढ बत्तीस दांत तोड यह शब्द नाचलै तो खड़ी योगिनी का तीर छूटै गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्यनाम आदेश गुरुको। इति मन्त्रः।

कनेर का २१ फूल और गूगल की २१ गोली सरसों के तेल सहित मन्त्र पढ़-पढ़कर होम करे तो ११ दिन अथवा २१ दिन में शत्रु को पीड़ा प्राप्त होगी।

मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरूको लाल पलङ्ग औरङ्गी छाया काढ कलेजा तूही चख। इति मन्त्रः।

चौका देकर दीपक जलावे और तीन बार कहे कि 'आओ महावीर पहलवान् हनुमान्जी।' फिर तीन बार कहे 'आओ कलुवा वीर रणधीर।' ऐसा कहने के बाद गूगल की धूप देकर नैवेद्य चढ़ावे, नित्य १ हजार मन्त्र पढ़े तथा घी, लौंग, सुपारी, जायफल, गूगल और मिश्री का १२५ बार होम करे। ऐसा करने से ११ दिन में सिद्धि होती है। फिर ब्राह्मण भोजन कराकर २१ दिन तक प्रतिदिन मन्त्र का १ हजार जप करे तो शत्रु का नाश होता है।

एक अन्य प्रयोग

मन्त्र—ॐ नमो आगिया वैताल पैठ सातवें जाहु पाताल लावो अग्निकी जलती झाल बैठजाहु ब्रह्माके कपाल पहेरौ लाल फूलकी माल चडौ ठोकके अपनी ताल चलौ चलौ जलावो आग न जलावो तो माता कालिकाकी आन। इति मन्त्रः।

होली से आरम्भ करके मन्त्र का १ लाख जप करके मछली का नैवेद्य लगाने और गन्धक का धूप देने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर जहाँ आग प्रकट करनी हो वहाँ मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से आग प्रकट करनी हो वहाँ मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से आग प्रकट होती हैं।

मूठचालन मन्त्र

मन्त्र—ॐ नमो कालाभैरों मसाणवासा चौसठ जोगनी करै तमासा उड़दकी मुट्ठी रक्तावाण चल रे भैरों कचियामसाण मै कहूं तोसों समझाय सवापहेरमें धुवा दिखाय मूवा मुरदा मरघटवास माता छोडै पुत्रकी आस जलती लकड़ी धिकै मसाण भैरों मेरा वैरी तेरा खान सेलीसिङ्गीं रुद्रबाण मेरे वैरीको नहीं मारै तो राजारामचन्द्रलक्ष्मणजतीकी आन शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।

किसी मुर्दे को देखकर श्मशान में आकर उसकी हड्डी लेकर चिता में खूब

लाल करे और उसमें एक मुट्ठी उड़द डाले दे। इन उड़दों में जो जल जायँ उन्हें अलग कर ले और जो खिल जाय उन्हें अलग कर ले जले उड़दों पर २१ बार मन्त्र पढ़कर प्रात:काल बिना मुंह धोये शत्रु को मारे तो वह यमलोक चला जायगा।

सर्वकार्य सिद्धि भैरव मन्त्र प्रयोग

मन्त्र—**ॐ काली कङ्काली महाकालीके पुत्र कङ्कालभैरुं हुकम हाजिर रहै मेरा भेजा काज करै मेरा भेजा रक्षा करै आन बान्धूं वान बान्धूं चलते फिरतेके औसान बान्धूं दसोंसुर बान्धूं नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बान्धूं फलमें भेजूं फूलमें जाय कोठे जो पड़ै थरथर कांपै हलहल हलै गिरगिर पड़ै उठउठ भागै बकबक बकै मेरा भेजा सवाघड़ी सवापहेर सवादि सवामास सवावरसकूं बावल न करै तो माता कालीकी शय्यापर पग धरै वाचा चूकै तो ऊभा सूखै वाचा छोड़े कुवाचा करै तो धोबीकी नाद चमारके कुण्डेमें पड़ै मेरा भेजा बावल न करै तो रुद्रके नेत्रसे अग्निकी ज्वाला कढे सिरकी लटा टूटि भूमिमें गिरै माता पार्वतीके चीरपर चोट पड़ै विना हुकुम नहीं मारना हो कालीके पुत्र कङ्कालभैरू फुरो मन्त्र इश्वरोवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।**

कालरात्रि अथवा ग्रहण की रात्रि को तिकोना चौका लगाकर दक्षिणमुख बैठे और लाल कनेर के फूल, मोदक, सिन्दूर, लौंग का जोड़ा तथा चौमुखा दीपक रखकर इस मन्त्र का १ हजार जप तता दशांस हवन करे। जब भयङ्कर स्वरूप में भैरव सम्मुख आवे तब भयभीत न हो और तत्काल फूलों की माला उसके गले में डालकर मोदक अर्पण करे। इससे भैरव प्रसन्न हो जायगा और फिर उससे जो कार्य कहा जाय वह तत्काल कर देगा।

कुछ अन्य प्रयोग

२७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवति दुर्वचने किलिकिलि वाचोभञ्जिनि मुखस्तम्भिनि स्वाहा। इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः।**

इसके जपमात्र से सभी के मुख का स्तम्भन होता है॥२॥

मन्त्र—**ॐ नमो याचली याचली उस्का चश्मा कुलफ उस्का बाजू कुलफ दुश्मनको जेर कर हमको सेर। इति मन्त्रः।**

हनुमानजी का विधिपूर्वक पूजन करके मन्त्र का १ हजार जप और १ हजार गुगल की गोली का होम करने से सिद्ध होता है। तदुपरान्त सात बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की ओर फूंके तो वह बड़बड़ाने नहीं पावेगा।

मन्त्र—**ॐ अलफ अलफ अलफ दुसमनके मुहमें कुलफ मेरे हाथ कुञ्जी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर। इति मन्त्रः।**

शनिवार की रात्रि में घृत का दीप जलाकर फूल, बताशा चढ़ाकर गूगल की १ हजार आहुति देने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर हाकिम के सामने १०८ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की ओर फूंक मारकर यदि उससे बात किया जाय तो वह बोल नहीं सकेगा। यदि आवेदन पत्र पर १०८ बार पढ़कर लोहबान की धूप देकर वह आवेदन पत्र अधिकारी को दे तो निश्चित रूप से मनोरथ सिद्ध होगा।

मन्त्र—**ॐ ह्रीं श्रीं खेतलवीर चोसठयोगिनी प्रतिहार मम शत्रू अमुकस्य मुखबन्धनं कुरुकुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।**

घी, शहद और मद्य की १ हजार आहुतियाँ देकर लोहे की ४ अंगुल की कील श्मशान में गाड़ने से शत्रु का मुख स्तम्भन हो जाता है।

मेघ स्तम्भन

यह १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हूं ह्रीं क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः हूं फट् ठः ठः। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

पूवाभिमुखो भूत्वा लक्षं जपेत्। वैश्वानरसमीपे वेतसमिदा घृताक्तयाऽयुतं जुहुयात्। सिद्धो भवति। पुनः मन्त्रं पठित्वा मेघावलोकनेन सर्वे मेघाः प्रणश्यन्ति वासवो न वर्षन्ति। नदीं समुद्रगां शोषयति। मेघशब्दो न भवति। उदकमध्ये स्थित्वा जपेत्। आनावृष्टिर्भवति।।

पूर्वाभिमुख होकर एक लाख जप और अग्नि मेंघी से सिक्त बेंत की समिधा का दश हजार होम करे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। पुनः मन्त्र पढ़कर मेघ को देखने से सभी मेघ नष्ट हो जाते हैं और इन्द्र वर्षा नहीं करते। यहाँ तक कि समुद्रगामिनी नदियों को साधक सुखा देता है और मेघों का गर्जन भी नहीं होता। पानी में खड़े होकर जप करने से अनावृष्टि के समय वर्षा होती है।

सेना स्तम्भन

२८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कालरात्रि त्रिशूलधारिणि मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ मन्त्र जप से सिद्ध होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

स्नापलायन

यह २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यं पलायनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकोनत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

4Books.com

अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ जप से सिद्ध होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधको तन्त्रों को करे।

अग्नि स्तम्भन

निम्नलिखित मन्त्र को बजनपत्र पर पीले द्रव्य से लिखकर पूजा करे। फिर इसे भूमि में गाड़कर पानी की धार डालता रहे। इससे घर में अग्नि का भय नहीं रहता।

यह २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमोऽग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ मन्त्रजप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

कुछ अन्य प्रयोग

१. प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वज्रयोगिनी वज्रकिवाड़, वजरी बांधू दसूं दुवार। झाड़ो झड़ै न लिङ्गी करै, तो वज्रजोगनीका वाचा फुरै।

२. अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेस गुरूको चार घाटी चार वटी रक्त चुवै चोरासी घाटी रक्त चुवै भील धीर थांभ हनुमन्त वीर लङ्कासा कोट समुदरसी खाई इस नारीके रक्त चुवै तो सोषिया वीरका दुहाई लूणा चमारीका दुहाी अजैपाल जोगीकी दुहाई लूंणा चमारीकी दुहाई अजैपाल जोगीकी दुहाई इति मन्त्रः।

उक्त दोनो मन्त्रों का विधान समान है।

कुमारी कन्या का काता हुआ ढाई पूणी सूत लेकर उसका डोरा बनाकर मन्त्र द्वारा सात गाँठ देकर उसे कमर में बाँधने से गर्भपात रुक जाता है। यह सत्य है।

पदस्तम्भन

मन्त्र—**ॐ नमो आदेस गुरूको चार आंटी चार वाटी नीर चढ़ै चौरासी घाटी आवै नीर भीजै चीर बांधगाय सोखता वीर सोखता वीर लङ्का वसै सोला कुण्डा रक्तका भर्यै शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

आधी रात को मन्त्र पढ़कर २१ बार लोहबान जलावे। २१ दिन तक ऐसा करने से सिद्धि होती है। फिर कुमारी कन्या द्वारा काते सूत का डोरा बनाकर कमर में बाँधने से पदस्तम्भन होता है।

यह २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो नारायणाय अमुकं अमुकेन सह विद्विष्टं कुरुकुरु स्वाहा। इति

4Books.com

षड्विंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ बार जप से सिद्धि होती है और सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे। प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ बारा सरसो तेरा राई यारकी मारी मसाणकी छाई पढ़के मारू कार दलवार अमुका कढ़े न देखै अमुकीका द्वार मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

सरसों, राई और श्मशान की भस्म इन तीनों को मङ्गलवार के दिन आक की लकड़ियों की अग्नि में १०८ बार होम करे। इस होम की भस्म को स्त्री या पुरुष के द्वार पर डाल दे तो दोनों में अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जायगा।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

सत्य नाम आदेस गुरूको आकढाक दोनों वन राई अमुका अमुकी ऐसी करै जैसे कूकर और विलाई। इति मन्त्रः।

शनिवार से प्रारंभ करके ७ दिन इस मन्त्र को आक के पत्तों पर लिख अर्ध रात्रि के समय प्रत्येक पत्ते को सात मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके ढाक की लकड़ी के अङ्गारों में जलावे तो साध्यों के बीच अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जाता है।

कुछ अन्य प्रयोग

वस्त्र पुर्षसिलवालमें हरिया मङ्गलके दिन जारै। तेहिकी राख खवावै उनको वैर बन्धै या मारै।। गधामुत्र लेवै शनिरविदिन, धरतीपड़न न पावै। तामें राई रखे तीन दिन, फिरले ताहि सुखावै। रविदिन धूनी दे लेजावै, जहांमित्र दोपावै। उनके मध्य डारकर आवै, वैरबाव होजावै।।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवति श्मशानकालिके अमुकममुकेन सह विद्वेषय विद्वेषय हनहन पचपच मथमथ हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।**

इस मन्त्र से कड़वा तेल में नीम के पत्ते, तिल और चावल मिलाकर होम द्रव्य तैयार करे। फिर श्मशान की अग्नि से खैर की लकड़ियाँ जलाकर उसमें उक्त द्रव्य की १० हजार आहुतियाँ दे। इससे दो साध्यों में अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जाता है।

व्यापार वृद्धि मंत्र-१

व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यदि इस मंत्र का १०८ बार उच्चारण करके दुकान खोलें और व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करें तो उस दिन ब्रिकी बढ़ती है और किसी प्रकार का कोई उपद्रव या परेशानी नहीं आती। इस मंत्र

को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है। नित्य दुकान खोलने से पूर्व एक माला जपना ही पर्याप्त है।

श्री लुल्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे महालक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना करो तो समुद्र की दुहाई ऋद्धि-सिद्धि खावोमीट तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहीई।

व्यापार वृद्धि मंत्र-२

भंवरवीर तू चेला मेरा खोल दुकान कहा कर मेरा उठै जो डंडी बिकै जो माल भंवरवीर की सौंह नहि खाली जाय।

बिक्री बढ़ाने के लिए यह अनुभूत मंत्र है। इसका प्रयोग केवल रविवार के दिन ही माना जाता है और ३ रविवार तक लगातार करने से सफलता मिलती है। प्रयोग इस प्रकार से है कि काले उड़द को २१ बार अभिमंत्रित कर व्यापार स्थल पर डालें। बिक्री में वृद्धि होगी।

व्यापार बंधन मुक्ति का मंत्र

कभी-कभी अचानक ही व्यवसाय चौपट होता हुआ प्रतीत होता है। सम्भव है धन्धे की बरकत तन्त्र-तन्त्र से बाँध दी गई हो। अगर ऐसा हो तो इस मन्त्र का प्रयोग किया जाना चाहिए। तुरंत लाभ मिलने लग जाता है।

'' ओम नमो आदेश गुरू को वावन वार चौसठ सातऊ कलवा पांचऊ वड़वा जिन्न भूत परीत देव दानव दुष्ट मुष्ठ मैली मशाण इन्हीं को कील कील नजर दीठ मूँठ टोना टारे लोना चमारी गाजे या धन्धे दुकान की बरकत को बन्धन न छुड़ावे तो माता हिंगलाज की दुहीई।''

विधि—नवरात्रि में एक हजार जप से उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्धि के समय धूप जलाना चाहिए। मन्त्र सिद्धि के बाद बालकों और कन्याओं को भोजन कराना चाहिए।

बंधित दुकान में पाँच नीबुओं को इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर एक सूत्र में पिरो कर दुकान में टाँगना चाहिए। सरसों के कुछ दानों पर २१ मन्त्र पढ़कर दुकान में डालें।

रोजगार बाधानाशक एवम् व्यापार वृद्धि कारक मन्त्र

'ओम नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा सुलेमान पैगम्बर के चार मुवक्किल पूर्व को धाया देव दानवों को बाँधि लाया दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया भूत-प्रेत कूं बाँधि लाया तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया अयुत पितृ को बाँधि लाया चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ि लाया चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें छलछिद्र

44Books.com

कोऊ रहन न पावें रोग-दोष को दूर भगावें शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

यदि किसी का धंधा ठप्प पड़ गया हो, दुकान चलती नहीं हो, व्यवसाय मंदा पड़ गया हो अथवा चलते व्यापार में विघ्न आने लग गये हों तो उक्त शाबर मंत्र का विधिपूर्वक प्रयोग करने से अप्रत्याशित रूप से रोजगार चलने लगा जाता है और व्यापार की समस्त बाधाएं नष्ट हो जाती हैं।

एक बुर्जुग फकीर बाबा ले मुझे यात्रा प्रवास के दौरान रेल में बातचीत के समय विशिष्ट प्रयोग बताया था। उनका कहना था कि यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साध इस प्रयोगल को सम्पन्न कर लिया जावे तों कोई भी ताकत व्यापार को वृद्धि करने से नहीं रोक सकती हैं इस प्रयोग को करने वाले साधक का व्यवसाय दिन-दूनी-रात-चौगनी तरक्की करने लग जाएगा।

प्रयोग इस प्रकार है कि इस कपड़े के चार पुतले बनावें और इस मंत्र को पढ़कर उन चारों पुतलों पर फूंक मारकर उन्हें अभिमंत्रित कर लेवें। तत्पश्चात् अपने व्यावसायिक स्थल के चारों कोनों में एक-एक पुतला उक्त मंत्र को पढ़ते हुए गाड़ देवें। इसके बाद प्रतिदिन प्रातः व्यापार स्थल पर जाने से पूर्व एक माला इस मंत्र की अवश्य जपें।

इस प्रकार करते रहने से रोजगार की समस्त बाधाएँ नष्ट होकर आश्चर्यजनक रूप से व्यापार चल निकलता है यह एक सिद्ध प्रयोग है। इन चमत्कारी पुतलों को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

धन प्राप्ति का मंत्र-१

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः स्वाहा।

व्याघ्र चर्म, मृग चर्म अथवा किसी भी चर्मासन पर बैठ कर या किसी नदी या जलाशय के तट पर वट वृक्ष के नीचे बैठकर इस मन्त्रं की साधना करने से साधक को अनायास धन प्राप्त होता है। साधना २१ दिन में एक लाख पच्चीस हजार मंत्र जाप द्वारा ही सम्पन्न की जा सकती है। परंतु मंत्र सिद्ध होने पर अकस्मात् धन प्राप्त होता है। यह निश्चित है।

धन प्राप्ति का मंत्र-२

ॐ सरस्वती ईश्वरी भगवती माता क्रां क्लीं, श्रीं श्रीं मम धनं देहि फट् स्वाहा।

धन की प्राप्ति में यदि बराबर रुकावट आ रही हो, तो इन मंत्र का एक सौ आठ-आठ बार (१०८) जप ४० दिन तक करें। लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर धन देगी,

यदि किसी की उधारी बाकी हो, व्यक्ति की नियत रुपया वापस नहीं देनी की हो, तो इस मंत्र के जप द्वारा व्यक्ति की बुद्धि निर्मल व शुद्ध हो जाती है तथा आपका रुका हुआ रुपया मंत्र बल से मिलने लगता है।

धन प्राप्ति का मंत्र-३

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी, महासरस्वती ममगृहे आगच्छ-आगच्छ ह्रीं नमः।

इस मंत्र को दीपावली की रात्रि को कुमकुम या अष्टगंध से थाली पर लिखें तथा उसी रात्रि को १८०० या यथेष्ट जप करें। तो उस वर्ष में साधक बहुत अधिक दौलत या ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त करता है, यह अद्भुत प्रयोग है।

धन का भंडार प्राप्त करने का मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय, धन धन्याधिपतये धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।

यह देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर का अमोघ मंत्र है। इस मंत्र के तीन माह तक रोज १०८ बार जाप करे, जाप करते समय एक कौड़ी (धनलक्ष्मी कौड़ी) अपने सन्मुख अवश्य ही रखे। तीन माह बाद प्रयोग पूरा होने पर उस कौड़ी को आप अपनी तिजोरी, गल्ले या लॉकर में स्थापित कर दे। आपके धन का भण्डार हमेशा भरा हुआ रहेगा।

धन वृद्धि करने का मन्त्र

ॐ नमो भगवती पद्म पदमावी ॐ ह्रीं ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय आष पूरय सर्वजन वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

सिद्धि करने की विधि—विधान पूर्वक दीपावली की रात्रि को सिद्धि कर लें, पत्पश्चात् प्रातः शय्या त्याग से पूर्व एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़कर चारों दिशाओं के कोणों में दस-दस बार फूँकें तो साधक को सभी दिशाओं से धन प्राप्ति हो।

अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र

"ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा"

प्रयोग विधि—सर्वप्रथम इस मन्त्र को दस सहस्त्र बार जाप कर सिद्धि करें, फिर जब प्रयोग करना हो तो जब पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो बहेड़े नामक वृक्ष का बाँदा लेकर एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करें तथा जिस खेत की उपज बढ़ानी हो उस खेत में गाड़ देने से अन्न की उपज अधिक होती है।

गाय भैंस आदि को दूध बढ़ाने का मन्त्र

"ॐ नमो हुंकारिणी प्रसव ॐ शीतलम्"

प्रयोग विधि—उपरोक्त मन्त्र एक सौ आठ बार पढ़कर पशुओं को चारा खिलाने से दूध की वृद्धि होती है।

4Books.com

अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र

''ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधि दर्शन कुरु कुरु स्वाहा''

प्रयोग विधि—शुभ दिवस तथा नक्षत्र में इस मंत्र को सहस्त्र बार जप करे, सिद्धि हो जाने पर जब प्रयोग करना हो तब जिस स्थान में धन गड़े होने की सम्भावना हो उस स्थान पर धतूरे के बीज, हलाहल, सफेद घुघुंची, गन्धक, मैनसिल, उल्लू की विष्ठा तथा शिरीष वृक्ष का पंचांग बराबर-बराबर लें सरसों के तेल में पकावें तथा इसी से धूप करने दस सहस्त्र बार मन्त्र का जाप करने से भूत-प्रेत तथा पितृ आदि का साया उस स्थान से हट जाता है और भूमि में गड़ी धनराशि साधक को दृष्टिगोचर होने लगती है।

ऋद्धि करण मन्त्र

ॐ नमो पदमावती पद्मानने लक्ष्मी दायिनी बाछां भूत-प्रेत विंध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहनी सिद्ध ऋद्धि वृद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमः क्लीं श्री पद्मावत्यै नमः।

प्रयोग विधि—छार छबीला, कपूर, कचरी, गूगुल, गोरोचन समभाग ले मटर के समान गोलियाँ बनाकर रविवार या शनिवार की आधी रात से जाप प्रारम्भ करें और बाईस दिन तक एक सौ आठ बार मन्त्र जाप करें तथा एक सौ पाँच बार मन्त्र जाप कर हवन करें तथा पूजन में लाल वस्तु ही रखें तथा लाल वस्त्र ही पहने तो बाईस दिन पश्चात् लक्ष्मी जी की अनुकम्पा से ऋद्धि प्राप्त होगी।

आकस्मिक धन प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः।।

प्रयोग विधि—मृगशिरा नक्षत्र में वध किये श्याम मृगचर्म पर आसीन हो किसी सरिता के तट कनकागुदी वृक्ष के नीचे बैठ श्रद्धा विश्वास पूर्वक इक्कीस दिन में एक लाख बार मन्त्र जपने से अनायास धन प्राप्त होता है।

नवग्रहजन्य दोष-उत्पात शान्ति के यन्त्र-मन्त्रादि

इस जन्म तथा उस जन्म के असत् कर्मों के फलस्वरूप नौ ग्रहों की अशुभ दृष्टि से मानव को नाना प्रकार के अनिष्टों की उपलब्धि होती है अथवा यों मानिये कि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आकाश मण्डल में स्थित ग्रह पिण्डों के प्रभाव से उत्पन्न उत्पात दो प्रकार के होते हैं।

१. सम्पूर्ण राष्ट्र पर प्रभाव डालने वाले ग्रह, उत्पात ग्रह, युद्ध, भूकम्प, तूफान, रक्त वर्षा, केतूदय आदि। २. व्यक्ति विशेष पर होने वाले नाना प्रकार के ग्रह युतियों द्वारा परिलक्षित होते हैं, जिनका विवेचन ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में किया गया है।

तन्त्र शास्त्र के अन्तर्गत यन्त्र मन्त्रों का विशिष्ट महत्त्व है। इस विषय पर कई स्वतन्त्र ग्रन्थ भी निर्मित किये गये हैं, मगर तन्त्र-मन्त्र गुरु परम्परा वैशिष्टय के कारण गुह्य हैं, इसलिये सर्वसाधारण बहुत से विषयों से अपरिचित रहते हैं। हमने परम्परा प्राप्त ग्रह दोष निवारणार्थ यन्त्रों आदि का विशेष अनुभव किया है, जिन्हें जन साधारण के लिये बहुत ही सरल रीति से यहाँ उद्धृत कर रहे हैं। इन यन्त्रों को प्रारम्भ में सिद्ध करना पड़ता है, तदुपरान्त ही कोई व्यक्ति इन्हें किसी दूसरे को बनाकर दे सकता है। इन्हें सिद्ध करने की विधि संक्षेप में आगे लिख रहा हूँ।

प्रयोग विधि—प्रारम्भ में जिस ग्रह मन्त्रादि को सिद्ध करना ही उस ग्रह के देवता के बार (दिन) व्रतोपवास करें और विधिवत आठ हजार या बत्तीस हजार (ग्रह सम्बन्धित) मन्त्रों का जप-हवनादि प्रतिदिन दो हजार के हिसाब से करें, फिर उस ग्रह की काल होरा में यन्त्र निर्माण कर उसका पूजनादि करें, इसके पश्चात् अभिलाषित व्यक्ति को उपवास एवं यन्त्र पूजन कराकर यन्त्र धारण करना चाहिये और ग्रहण, होली, दीपवाली, विजयादशमी (दशहरा), रामनवमी, अमावस्या, बसंत पंचमी आदि शुभ ग्रह नक्षत्रों में यन्त्रों का पूजन करना चाहिये व जिस ग्रह का यन्त्र हो उसके वार (दिन) में प्राय: पूजन धूप-दीप, आदि करते रहना चाहिये तो अति उत्तम होगा।

विशेष ध्यान रखें—

१. यन्त्रों को भोजपत्र पर अष्टगन्ध, केशर अथवा रक्त चन्दन (लाल चन्दन) या केशर मिश्रित सफेद चन्दन आदि से अनार या तुलसी की कलम (लेखनी) अथवा सोने (स्वर्ण) की निब (कलम) से ही लिखना चाहिये।

२. यन्त्र स्वर्ण अथवा रजत (चाँदी) के पत्र पर भी अंकित हो सकते हैं।

३. यन्त्रों को ताँबा-चाँदी अथवा सोने के ताबीज (खोल) में भरकर धारण करना चाहिये।

४. इन यन्त्रों का निर्माण यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण अथवा गुरुधारक व्यक्ति ही कर सकते हैं।

५. सूर्य यन्त्र, चन्द्र, मंगल, गुरु (बृहस्पति) शुक्र इन यन्त्रों को लाल डोरे में, बुध यन्त्र को हरे डोरे में, शनि-केतु-राहु के यन्त्रों को काले रंग में डोरे में पिरोकर दाहिनी भुजा अथवा गले में धारण करना चाहिये।

अष्टगन्ध बनाने की विधि

असली केशर, कस्तूरी, कपूर, काला अगर, गोरोचन, हाथी का मद,

सफेद चन्दन तथा लाल चन्दन इन सबको पीस लें और घोलकर रोशनाई बना लें। हाथी मद के अभाव में पिसी हल्दी लेनी चाहिये।

नवग्रहों के यन्त्रादिकों की जानकारी निम्न प्रकार से हैं—

१. रवि (सूर्य) यन्त्र मन्त्रादि

रसेंदुनागा नगबाणरामा युग्मांववेदा नवकोष्ठमध्ये। विलिख्य धार्ये गद्दनाशनाय वदन्ति गर्गादिमहामुनीद्राः।।

पुराणोक्त रवि मन्त्र

ह्रीं जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

अर्थात्—जपा (अढौल) के फूल के समान जिन सूर्य भगवान् की कान्ति है और जो 'कश्यप' से उत्पन्न हुए हैं, अन्धकार जिनका शत्रु है, जो सभी प्रकार के पापों को नष्ट करते हैं, उन सूर्य-भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक रवि मन्त्र

ॐ आकृष्टोनेत्यस्य मन्त्रस्य हिरण्यस्तुः सविता। त्रिष्टुप् सूर्य प्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ आकृष्णेनन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्य च। हिरण्ययेन सविसार थेनादेवोयाति भुवनानिपश्यन्।।

तन्त्रोक्त रवि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। अथवा **ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।** जपसंख्या सात हजार। कलियुग में अट्ठाइस हजार।

सूर्य गायत्री मन्त्र

ॐ सप्त तुरंगाय विद्यमहे सहस्राय किरणाय धीमहि तन्नोरविः प्रचोदयात्।

अथवा

ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

सूर्य—मध्य भाग, वर्तुल मण्डल, अंगुल बारह, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्तवर्ण, सिंह राशि का स्वामी, वाहन सप्ताश्व, समिधा मदार।

दानद्रव्य—माणिक्य (माणिक) सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, गुड़, लाल फूल, केशर, मूँगा, लाल गऊ, लाल चन्दन, दान का समय अरुणोदय (सूर्योदय काल)।

धारण करने का रत्न—माणिक्य (माणिक रत्न)।

यदि रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो जड़ी बिल्व पेड़ (बेल) की जड़ को गले अथवा भुजा में धारण करना चाहिये।

२. चन्द (चन्द्रमा) का यन्त्र-मन्त्रादि

नगद्विनंदा गजषट् समुद्रा शिवाक्षदिग्बाण विलिख्यकोष्ठे। चंद्रकृतारिष्ट-विनाशयनाय धार्य मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम्।।

पुराणोक्त चन्द्र जप मन्त्र

दधि, शंख, तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।।

अर्थात्—दही, शंख अथवा हिम के समान जिनकी दीप्ति है और उत्पत्ति क्षीरसागर (समुद्र) से है, जो शिव (शंकर भगवान) के मुकुट पर अलंकार की तरह विराजमान रहते हैं, मैं उन चन्द्रदेव को प्रणाम करता हूँ।

वैदिक चन्द्र मन्त्र

ॐ आप्याय गौतमः सोमो गायत्री सोमप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ आप्यावस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्णम्। भवा वाजस्य सगथे।।

तन्त्रोक्त मन्त्र

श्रीं श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।

जपसंख्या—ग्यारह हजार, कलियुग में चौवालीस हजार।

सोम गायत्री मन्त्र

ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय, धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

चन्द्र—अग्निकोण, चतुरस्र मण्डल, अंगुल चार, यमुनातटवर्ती देश, अत्रिगोत्र, श्वेत वर्ण, कर्क राशि का स्वामी, वाहन हरिण, समिधा पलाश।

दान द्रव्य—मोती, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, सफेद बैल, सफेद चन्दन। दान का समय संध्या काल। (गोधूलि वेला)

धारण करने का रत्न-मोती या चन्द्रकान्त मणि (मूनस्टोन), अभाव में सीप अत्यधिक प्रभावशाली। जड़ी-खिरनी वृक्ष की जड़ को, सफेद कपड़े में सीकर गले अथवा भुजा में धारण करें।

३. मंगल का यन्त्र-मन्त्रादि

गजग्निदिश्याथ नवाद्रिबाणा पातालरुद्रारससंविलख्य। भौमस्य यंत्रं क्रमशो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः।।

पुराणोक्त भौम जप मन्त्र

ह्रीं धरणीगर्भसभूतं विद्युत-कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—पृथ्वी के उदर से जिनकी उत्पत्ति हुई है, विद्युत-पुंज (बिजली) के

सदृश (समान) जिनकी (प्रभा) है, और जो हाथों में शक्ति धारण किये रहते हैं, उन मंगल देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक जप मन्त्र

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः रूपोऽङ्गारको गायत्री, अङ्गारकप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

अथवा

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाठं रेताठंसि जिन्वसि।

तन्त्रोक्त भौम मन्त्र

क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

अथवा

ॐ हूँ श्रीं मंगलाय नमः।

जपसंख्या—दस हजार, कलियुग में चालीस हजार।

भौम गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धिमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

मंगल—दक्षिण दिशा, त्रिकोणमण्डल, अंगल ३, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, मेष, वृश्चिक का स्वामी, वाहन मेढा, समिधा-खदिर।

दान द्रव्य—मूँगा, सोना, ताँबा, मसूर, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर का फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, लाल चन्दन।

दान का समय—सबेरे दो घटी तक।

धारण करने का रत्न—मूँगा, अभाव में जड़ी-अनन्त मूल, नागजिह्वा की जड़, लाल डोरा व कपड़ में सिलकर धारण करना चाहिये।

ऋणमोचन मंगल स्तोत्र

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थितसनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।

धरणीगर्भ-संभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् . पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्।।
अङ्गारक महाभाग! भगवन्! भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।
ऋण-रोगादि-दारिद्रयं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।
अतिवक्त्र दुराराध्यं भोग-मुक्त-जितात्मनः।
तुष्टी ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।
विरञ्चि शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः।।
पुत्रन् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋण-दारिद्रय-दुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकर्यः स्तोति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनो युवा।।

।।ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्र सम्पूर्णम्।

४. बुध का यन्त्र-मन्त्रादि

नवब्धिरुद्रा दशनागषट्का बाणार्कसप्ता नवकोष्ठयंत्रे। विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे वदंति यंत्रं शशिजस्य धीराः।।

पुराणोक्त बुध जप मन्त्र

ह्रीं प्रियङ्ग कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—प्रियंग की कली की भाँति जिनका श्याम वर्ण है, जिनके रूप की कोई उपमा ही नहीं है, उन सौम्य और सौम्यगुणी से युक्त बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक बुध मन्त्र

ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टासूर्ते सर्ठं सृजेयायमं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअद्‌ध्यत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

अथवा

ॐ उद्‌बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, बुधप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ

44Books.com

उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिध्वं बहवः सनीलाः। दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावती वसे निह्वये वः।।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र

ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। अथवा ॐ ऐं श्रीं श्री बुधाय नमः।

जपसंख्या—नौ हजार, कलियुग में तैतीस हजार।

बुध गायत्री मन्त्र

ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

बुध—ईशानकोण, बाणकार मण्डल, अंगुल ४, मगधदेश, अत्रिगोत्र, पीतवर्ण, मिथुन, कन्या का स्वामी, वाहन सिंह, समिधा अपामार्ग, चिचिड़ा, लटजीरा।

दानद्रव्य—पन्ना, सोना, काँसी, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सफेद फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र, फल।

दान का समय—सबेरे पाँच घटी तक।

धारण करने का रत्न—पन्ना, अभाव में जड़ी-विधारा (वृद्ध मूल)। हरे रंग के डोरे या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

५. बृहस्पति (गुरु) का यन्त्र-मन्त्रादि

दिग्बाणसूर्या शिवनन्दसप्ता षड्विश्वनागाः क्रमतोंऽककोष्ठे। विलिख्य धार्य गुरुयंत्रमीरितं रुजाविनाशाय वदंति तद्बहुधाः।।

पुराणोक्त गुरु जप मन्त्र

ह्रीं देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

अर्थात्—जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, कंचन (स्वर्ण) के समान जिनकी प्रभा है और जो बुद्धि के अखण्ड भण्डार तथा तीनों लोकों के प्रभु हैं उन बृहस्पति जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

वेदोक्त गुरु मन्त्र

ॐ बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतिप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पति अतियदर्यो अहद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र

ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

अथवा

ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

जपसंख्या—उन्नीस हजार, कलियुग में छिहत्तर हजार।

गुरु गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि, तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

गुरु—उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मण्डल, अंगुल ६. सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण, धनु, मीन का स्वामी, वाहन हाथी, समिधा पीपल।

दानद्रव्य—पुखराज, सोना, काँसी, चने की दाल, खाँड़ घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, पीला फल।

दान का समय—संध्या काल।

धारण करने का रत्न—पुखराज नग। अभाव में जड़ी भारंगी (बमनेठी, पीले डोर या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

६. शुक्र का यन्त्र-मन्त्रादि

रुद्रांगविश्वा रविदिग्गजाख्या नगामनुश्चांकक्रमाद्विलेख्या। भृगोः कृतरिष्ट-निवारणाय धार्यं हि यंत्रं मुनिना प्रकीर्तिता।।

पुराणोक्त शुक्र मन्त्र

ह्रीं हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—तुषार, कुन्द अथवा मृणाल के समान जिनकी आभा (शोभा) है और जो दैत्यों के परम गुरु हैं, उन सब शास्त्रों के अद्वितीय वक्ता श्री शुक्राचार्यजी को मैं प्रणाम करता हूँ।

वेदोक्त शुक्र मन्त्र

ॐ शुक्रं त इत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः शुक्रो देवतास्त्रिष्टु, छन्दः, शुक्रप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ शुक्र ते अन्यद्यजनं ते अन्यद्विषुरुपे अहनीद्यौरिवासि। विश्वादि माया अवसिस्वधावोघद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र

द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

जपसंख्या—सोलह हजार, कलियुग में चौसठ हजार।

शुक्र गायत्री मन्त्र

ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्येदेहाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

शुक्र—पूर्वदिशा, षट्कोण मण्डल, अङ्गुल नौ, भोजकट देश, भृगुगोत्र, श्वेतवर्ण, वृषभ (वृष), तुला का स्वामी, वाहन अश्व, समिधा उदुम्बर।

दानद्रव्य—हीरा, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, सफेद चन्दन।

दान का समय—अरुणोदय काल (सूर्योदय काल)।

धारण करने का रत्न—हीरा। अभाव में जड़ी। मंजीठ की जड़ को सफेद कपड़े या डोरे में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

७. शनि का यन्त्र-मन्त्रादि

अर्कांद्रिमन्वास्मररुद्रअंका नगाख्यतिथ्या दश मन्दयन्त्रम्। विलिख्य भूर्जोपरि धार्यविद्वच्छनेः कृ तारिष्टनिवारणाय।।

पुराणोक्त शनि जप मन्त्र

ह्रीं नीलञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यामग्रजम्। छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनश्चरम्।।

अर्थात्—नील अंजन के समान जिनकी दीप्ति है और जो सूर्य भगवान के पुत्र तथा यमराज के बड़े भ्राता हैं, सूर्य की छाया से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन शनैश्चर (शनि) देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक शनि मन्त्र

ॐ शमग्निरित्यस्यरिंविठिः ऋषिः, शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः।।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र

प्रां प्रीं प्रौं शनये नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

जपसंख्या—तेइस हजार, कलियुग में बानवे हजार।

शनि गायत्री मन्त्र

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नः शौरिः प्रचोदयात्।

शनि—पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अङ्गुल दो, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण, मकर, कुम्भ राशि का स्वामी, वाहन गिद्ध, समिदा शमी।

दान द्रव्य—नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, काला फल, कस्तूरी, काली गौ, भैंस, खड़ाऊँ। दान का समय-मध्याह्न काल।

धारण करने का रत्न—नीलम अथवा कालाश्वपदीय अँगूठी (काले घोड़े के पैर की नाल की अँगूठी), शनिवार के दिन के होरा में बनवा कर उँगली में धारण करना चाहिये। अभाव में जड़ी-अम्लवेत (श्वेत विरैला) की जड़ को काले कपड़े या डोरे में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

८. राहु का मन्त्र

विश्वाष्टतिथ्या मनुसूर्यदिश्या खगमहीद्रैकदशांककोष्ठे। विलिख्य यंत्रं सततं विधार्य राहोः कृतरिष्टनिवारणाय।।

पुराणोक्त राहु मन्त्र

ह्रीं अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहूं प्रणामाम्यहम्।।

अर्थात्—जिनमा केवल आधा शरीर है तथा जिनमें महान् पराक्रम है, जो चन्द्र और सूर्य को भी परास्त कर देते हैं और सिंहिका के गर्भ से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन राहु देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक राहु मन्त्र

ॐ कयान इत्यस्य मन्त्रस्य वामदेवो राहु गायत्री, राहुप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदसावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता।।

तंत्रोक्त मन्त्र

भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।

जपसंख्या—अठारह हजार, कलियुग में बहत्तर हजार।

राहु गायत्री मन्त्र

ॐ शिरो रूपाय विद्महे, अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।।

राहु—नैऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अङ्गुल बारह, राठीनापुर (मलयदेश), पैठीनस गोत्र, कृष्णवर्ण, वाहन व्याघ्र, समिधा दूर्बा (दूब)।

दाद द्रव्य—गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों का तेल, नीला कपड़ा, काला फूल, तलवार, कम्बल, घोड़ा, सूप।

दान का समय—रात्रि।

धारण करने का रत्न—सीलोनी गोमेद नग। अभाव में जड़ी, सफेद चन्दन।

९. केतु का यन्त्र-मन्त्रादि

मनुखेचर-भूपातिथि-विश्व-शिवा दिग्सप्तादशसूर्यमिता। क्रमतो विलिखेन्नवकोष्ठमिते परिधार्य नरा दुःखनाशकराः।।

पुराणोक्त केतु मन्त्र

ह्रीं पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह-मस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—पलाश के फूल की तरह जिनकी लाल दीप्ति है और जो समस्त तारकाओं में श्रेष्ठ माने जाते हैं, जो स्वयं रौद्र रूप और रौद्रात्मक हैं ऐसे रूप वाले केतु को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक केतु मन्त्र

ॐ केतु कृण्वन्नित्यस्य मन्त्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः, केतुर्देवता गायत्रीछन्दः, केतुप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

तन्त्रोक्त मन्त्र

स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं केतवे नमः।

जपसंख्या—अठारह हजार, कलियुग में बहत्तर हजार।

केतु गायत्री मन्त्र

ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

केतु—वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अङ्गुल छह, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण, वाहन कबूतर, समिधा-कुशा।

दान द्रव्य—लहसुनियाँ, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा, शस्त्र। दान का समय-रात्रि।

धारण करने का रत्न—लहसुनियाँ नग या लाजवर्त नग, अभाव में जड़ी, असगन्ध की जड़ी को काले कपड़े या डोरे में गले अथवा दाहिनी भुजा में धारण करें।

नवग्रहों का यन्त्र-मन्त्रादि

जिन व्यक्तियों के कई ग्रह अरिष्ट चल रहे हों उन्हें चाहिये कि ग्रहण, होली, दीपावली, विजयादशमी, रामनवमी, अमावस्या, नागपंचमी, वसंत पंचमी आदि शुभ मुहूर्तों में विधि-विधान पूर्वक यन्त्रों का निर्माण, भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही से पूरा विधान ऊपर नवग्रहों के यन्त्रों में लिखा जा चुका है। निर्माण करके

निम्नलिखित नवग्रह स्तोत्र से कम-से-कम छियानवें हजार मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित करके विधि-विधान पूर्वक धारण करने से नवग्रह दोषों की पीड़ा शान्ति होती है।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्-कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकामगर्भसंभूतं तं राहूं प्रणमाप्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।
नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

अशुभ फलवाले ग्रहों के उपाय

जिस समय कोई अशुभ ग्रह आप को अशुभ फल दे रहा हो उसकी शान्ति हेतु प्राचीन काल के महर्षियों-विद्वानों ने उसके यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि का जपानुष्ठान, व दानादि का विधान किया है, जो आपको उपरोक्त नवग्रह जन्य दोष

4Books.com

शान्ति आदि का पूरा विधान जप-संध्या आदि विस्तृत रूप से लिखकर समझाया गया है। मन्त्र-जपादि स्वयं अथवा किसी कर्मनिष्ठ यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण से करायें। जो महानुभाव असमर्थ हों वे सब ग्रहों के दोष शान्त्यर्थ सामान्य औषधि से स्नान करें।

औषधि स्नान—लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्ला, कंगुनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, लोध, सर्वौषधि (कूट-जटामांसी, दोनों हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, वच, चम्पक और नागर मोथा ये दस औषधि सर्वौषधि हैं।), इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सभी ग्रहों की पीड़ा नाश होती है।

सभी ग्रहों के दुष्ट दोष नाश के सबसे सुलभ उपाय है, पीपल वृक्ष पर जल, दीपदान तथा गौ और ब्राह्मण पूजा आदि से ग्रहों के दोष नाश होते हैं।

मूलमन्त्र

मन्दवारे तु येऽश्वत्थं प्रातरुत्थाय मानवाः।
आलभन्ते च तेषां वै ग्रहपीडां व्यपोहतु।।
यथा ग्रहो द्विजस्तद्वद्विज्ञेयो वेदपारगः।
तोषयन् मृदुवस्त्राद्यैस्तुष्टमेनं विसर्जयेत्।।
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर! ग्रहपापहरं परम्।।

।। इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत तन्त्र-मन्त्र साधना द्वितीय परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ।।२।।

।। शुभमिति ।।

❑❑❑

44Books.com

तृतीय परिच्छेद

रोग चिकित्सा ज्ञान

प्रथम रोग परीक्षा की आवश्यकता

रावण एक महायोद्धा, तपस्वी, महाज्ञानी और एक निपुण चिकित्सक भी था। यहाँ इस परिच्छेद में रावण द्वारा वर्णित रोग और उसके निदान सम्बन्धि यथा उपलब्ध सामग्रियों को हम यहाँ प्रस्तुत करते हैं—

सर्वप्रथम वैद्य के लिए यह आवश्यक है कि वह रोगी के रोग का भली-भाँति परीक्षण कर लेने के पश्चात् ही उसे उपयुक्त औषधियाँ दे। जो वैद्य रोग की परीक्षा पूर्णरूप से न कर औषधियों का प्रयोग प्रारम्भ कर देते हैं उन्हें कदापि सफलता नहीं मिलती। विधि-विधान में कुशल चिकित्सक में स्वयमेव सिद्धियाँ निहित रहती हैं। देश-काल तथा रोग के भेदों का ज्ञान रखने वाला चिकित्सक औषध-प्रयोग में निःसंदेह ही सफल होता है। वैद्य को रोग की साध्यता-असाध्यता का विचार करके साध्य रोगों की ही चिकित्सा करनी चाहिए।

किसी भी रोग की उत्पत्ति पित्तादि दोषों के अभाव में नहीं होती। अत: उन दोष-लक्षणों को भली प्रकार से समझकर ही उपचार करना चाहिए। वैद्य को ऐसे रोगों की भी चिकित्सा करनी चाहिए जिन रोगों के लक्षण स्थायी न रहते हों।

रोग परीक्षा विधि और उसके प्रकार

रोग परीक्षा के निमित्त प्राय: तीन विधियों को अपनाया जाता है, जैसे—रोगी के नेत्र एवं मुखाकृति देखकर, अंगों का स्पर्श करके तथा भोजनादि सम्बन्धी बातें पूछकर। रोग के दो भेद होते हैं—एक साध्य और दूसरा असाध्य। इनमें भी साध्य के दो प्रकार होते हैं, कृच्छ्रोपाय (कठिनता से ठीक होने वाले) तथा सुखोपाय (सरलतापूर्वक ठीक होने वाले)। इसी प्रकार असाध्य के भी दो भेद कहे गये हैं—एक याप्य (निवारणीय) और दूसरा अयाप्य (अनिवारणीय)।

प्राय: सभी रोग प्रकृत्या साध्य होते हैं, किन्तु उनके प्रति असावधानी बरतने से साध्य भी असाध्य में परिवर्तित हो जाया करते हैं। यदि रुग्ण व्यक्ति सावधानीपूर्वक शीघ्र ही चिकित्सक द्वारा उपचार कराये और स्वयं भी देश-काल, प्रकृति तथा अवस्थानुसार चलकर अपनी वाणी एवं जननेन्द्रियादि पर नियंत्रण कर ले तो ऐसे बुद्धिमान् रोगी के असाध्य रोग भी साध्य बन जाते हैं।

रोग, अग्नि, शत्रु और विष आदि का सूक्ष्म रूप भी बढ़कर अनेक विकार पैदा कर देते हैं। असावधानी करने पर ये सभी प्राणियों को मृत्यु की गोद में सुला

देते हैं। कोई भी रोग अपने स्तर से नीचे आने पर अनेक दोषों को उत्पन्न करता है अथवा छूट जाने पर भी अल्प कारणों से पुनः आक्रमण कर देता है।

नाड़ी से रोग ज्ञान विधि

हाथ के अंगूठे की जड़ में चलने वाली नाड़ी जीवसाक्षिणी कही जाती है। उसके प्रयत्न द्वारा ही शारीरिक सुख-दुःख की अनुभूति होती है। वह नाड़ी वातविकार में जोंक और साँप की गति के समान चलती है। पित्तदोष के कारण वह कुलिंग पक्षी, काक और मेढ़क की चाल से चलती है। कफ के कुपित होने पर उसकी गति हंस तथा कपोत के समान रहती है तथा सन्निपातज रोगों में लवा, तीतर और बटेर की चाल से चलती है। दो दोषों के प्रकोप से वह कभी-कभी मंद एवं द्रुत गति से चलती है। अपने स्थान से पतित होने पर वह जीवों के प्राण भी ले लेती है।

रुक-रुककर चलने वाली, मन्दरूपा और शीतल नाड़ी प्राणनाशिनी होती है, ज्वरावस्था में उष्ण होकर वह वेगपूर्वक चलती है। काम-क्रोध के उद्वेगावस्था में वह वेगवाहिनी तथा चिन्ता, शोक, भय आदि की स्थिति में क्षीणप्राय रहा करती है। क्षीणधातु तथा मंदाग्नि वाले व्यक्ति की नाड़ी अत्यन्त धीमी होती है, किन्तु आमदोष के कारण नाड़ी में रक्तपूर्णता, किंचित् उष्णता तथा भारीपन देखने में आता है।

प्रदीप्त क्षुधाग्नि वाले व्यक्ति की नाड़ी हल्की, गहरी तथा वेग से प्रवाहित होती है। स्वस्थ मनुष्य की नाड़ी स्थिर तथा बलवान् होती है। क्षुधातुर व्यक्ति की नाड़ी में चपलता तथा क्षुधा के अभाव में स्थिरता पायी जाती है। इस प्रकार नाड़ीज्ञान को श्रेष्ठ वैद्यों ने कहा है।

चिकित्सा का समय

किसी प्रकार का रोग जब तक क्षीणावस्था में हो, सूक्ष्म दाहक हो या वेग की प्रबलता से रहित हो तभी उसे उपयुक्त औषध द्वारा नियंत्रित कर लेना चाहिए। जब तक रोगग्रस्त प्राणी अपनी प्रकृतिस्थ अवस्था में न आ जाय तब तक चिकित्सक को उसके रोगशमन का उपाय निरन्तर करते ही रहना चाहिए।

वैद्य का दायित्त्व

प्रत्येक वैद्य का यही वैद्यत्व है, वह आयु का स्वामी कदापि नहीं हो सकता। कुछेक रोग ऐहिक तथा कुछेक पूर्वजन्मार्जित कर्मों के फलस्वरूप होते हैं तथा कुछ शीत-पित्तादिक विकार के कारण। कुछ रोग दोषज तथा कर्मज होते हैं। ये द्विदोषज रोग प्राणियों का संहार कर दिया करते हैं।

शास्त्रीय विधानानुसार तथा रोगानुसार चिकित्सा करने के परिणामस्वरूप भी रोग का शमन न होने पर उसे कर्मज रोग समझना चाहिए। जिस रोग में अल्प विकार के साथ गरिष्ठता हो तो उसे दोनों दोषों का परिणाम कहा जाता है। कर्म और

दोषहारक उपायों तथा औषधों के द्वारा कर्मदोष का क्षय होने पर कर्मदोषजनित रोग स्वत: ही नष्ट हो जाते हैं।

विष, शस्त्र, अग्नि तथा वज्रादि से मृत्यु होना कर्मज है। इस प्रकार से मृत्यु के ग्रास बने व्यक्तियों के लिए केवल एक संजीवनामृत ही उपयोगी होता है। शरीरस्थ जितने भी रस, रक्तादि धातुएँ हैं उन सब का प्रक्रिया द्वारा अपनी साम्यावस्था में आ जाना ही रोगदोषों की चिकित्सा तथा चिकित्सकों का प्रशस्त कर्म होता है।

ज्वर क्या है?

जिस प्रकिया के द्वारा रोगों में कठिनता उत्पन्न होती हो उसे अनर्थ कहा जाता है। अत: वह परित्याज्य है,क्योंकि श्रेष्ठ वैद्यों ने उसकी निन्दा की है। ज्वर के सन्दर्भ में ऐसा कहा गया है कि जिस रोग में पसीने का निकलना एकाएक बंद हो जाय, सभी अंगों में ताप होने के साथ ही-साथ पूरा शरीर जकड़ा हुआ-सा जान पड़े तो उसे ज्वर की संज्ञा दी गयी है।

सामान्यज्वर चिकित्सा

समस्त रोगों में सबसे पहले ज्वर की उत्पत्ति हुई और यह सभी रोगों में बलशाली हुआ। भगवान शिव ने इसे पूर्वकाल में वरदान दिया था कि तुम सभी में ज्येष्ठ और श्रेष्ठ बनोगे। अल्प ज्वर के होने पर भी भूख की कमी, मुख के स्वाद का फीका पड़ना, बल और तेज की क्षीणता तथा शीतविकार आदि दोषों के लक्षण इसमें पाये जाते हैं। अतएव इसके शमनार्थ रोगी से लंघन कराना उचित है। यहाँ लङ्घन से तात्पर्य भूखा रखना है।

लंघन करने के फलस्वरूप जब दोष का शमन होकर ज्वर उतर गया होता है तब शरीर में मृदुता और हलकापन आकर क्षुधा प्रज्वलित होने लगती है। विशेषतया आमाशय दोष से उत्पन्न ज्वर में वमनीय रोगी को पथ्य देने के पश्चात् ही वमन कराना उचित होता है, ऐसा वैद्यों से मेरी सलाह है।

लंघन का समय

पहले दिन दोष आमाशयस्थ क्षुधाग्नि के स्थान को आक्रमित कर उसे नष्ट कर देता है जिसके परिणामस्वरूप ज्वरोत्पत्ति हुआ करती है। अत: इसमें क्षुधाग्निवर्धक लंघन उपकारी होता है। यहाँ यह बात स्मरणीय है कि वमन किये हुए रोगी को लंघन न करायें अथवा लंघन किये हुए को वमन न करायें क्योंकि वमन अधिक कष्टकारी होता है। अत: जिस रोगी ने लंघन किया हो उसे वमनकारी औषध न दें।

जिस रोगी को दोषाग्नि पूर्णरूप से आक्रमित न कर सके तो उसके लंघन से दोष निकल जाता है। इसके द्वारा ज्वर का निवारण, क्षुधाग्नि तथा रुचिवर्धन होता है। यह प्रदूषित रक्त का शुद्धिकरण भी करता है, किन्तु दोष और शक्ति का विचार

करके ही लंघन कराना उचित होता है। इसका प्रयोग वातरोग, भूख-प्यास, मुख सूखना तथा मूर्च्छाग्रस्त रोगियों पर करना संगत होता है, किन्तु बाल, वृद्ध, गर्भवती नारी, कृशकाय तथा निर्बल व्यक्ति पर करना अनुचित माना गया है। इसके अतिरिक्त चिन्ता, परिश्रम, क्रोध, शोक, कामविकार तथा क्षयोत्पन्न ज्वर में भी प्रयोग निषिद्ध है।

जिन रोगियों में दोष की अवस्था न रहते हुए भी रोग अपनी तरुणावस्था में जा पहुँचा हो, उनमें वमनकारी प्रयोग से रोगी में हृदयरोग, श्वास, अफरा (पेट फूलना) तथा मूर्च्छा–जैसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं। यदि वमन कराने से शारीरिक बल पर कोई दुष्प्रभाव न पड़े तो वमन कराना उचित है, क्योंकि शक्ति पर ही स्वास्थ्य निर्भर होता है तथा उसी के लिए चिकित्सा का इतना विधान भी किया जाता है।

रोगी को उस दशा में लंघन कराना निषिद्ध माना गया है जब उसके अपानवायु और मल-मूत्र का नि:सरण स्वाभाविक ढंग से हो रहा हो, शरीर में हलकापन हो, मन में उत्साह, मुख तथा कंठ में विरसता का अभाव हो, क्षुधा-पिपासा की प्रबलता और अंतरात्मा में आनंद की अनुभूति हो रही हो।

लंघन के दोष

लंघन के व्यभिचार से रोगी में निम्न प्रकार के दोष उत्पन्न हो जाया करते हैं, जैसे—शरीर की हर एक जोड़ों में शिथिलता, सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा, खाँसी आना, मुख का सूखना, मंदाग्नि, मन में अनुत्साह, बुद्धिनाश, वायु का ऊर्ध्वगमन, मन में तमोगुण की उत्पत्ति, शरीर, क्षुधाग्नि तथा बल का ह्रास।

अलंघन का समय

निम्न लक्षणों के पाये जाने पर रोगी को लंघन कराना निष्प्रयोजनीय होता है, जैसे—मल-मूत्र का नि:सरण, अधोवायु का संचरण, सुखपूर्वक नींद आना, आलस्यराहित्य, शिर का हलकापन, कफादि का नि:सरण, मुख, हृदय तथा उदर का शुद्ध होना, पसीना निर्गत होना, भोजन की इच्छा आदि। उत्तम वैद्य के लिये यह आवश्यक है कि वह रोगी की पूरी तरह से विवेचना करके ही औषध प्रयोग करे।

पथ्य का महत्त्व

ऐसे-ऐसे दोष, देश-काल, अवस्था तथा रोगविकार की समानता के अनुसार चेष्टापूर्वक अनुपान के साथ औषधि और पथ्य की व्यवस्था करनी चाहिए। लंघनीय रोगी को लंघन न कराने के फलस्वरूप उसमें कफोत्पन्न क्लेश, मानसिक न्यूनता, बार-बार थूकने की इच्छा, शरीर में भारीपन तथा आलस्य आदि दोष उत्पन्न हो जाया करते हैं।

कभी-कभी चिकित्सा का सहारा लिये विना केवल पथ्य सेवन से ही शताधिक उपायों से दूर न होने वाले रोग भी दूर हो जाया करते हैं। क्षुधातुर रोगी को

यवागू (षड्गुण जल में पाचित लपसी) के साथ में भुने हुए चावलों के भात सेवनीय होते हैं। यह यवागू अग्निदीपक, अन्न का पाचन करने वाली तथा रुचिकारक होती है। अत: इसे आहारार्थ ग्रहण करना लाभकारी होता है।

सुरापान के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले रोगों में, ग्रीष्मकाल में, कफ-पित्त की अधिकता में, रक्तपित्त के ऊर्ध्वगामी होने पर, जलन और वमन में यवागू का पेय हानिकारक है। शेष के ज्वरावस्था में ज्वरनाशक फलों के रस तथा शक्कर और मधुमिश्रित सत्तू का रस पिलाना हितकर होता है।

श्रमोपरान्त, उपवास तथा सामान्य ज्वर की अवस्था में रसदार मंड और भात का सेवन करना लाभदायक होता है।

मूँग डालकर पकाये गये चावलों का भात कफज रोगी के लिए हितकारक होते हैं।

यही मूँग-चावल मिश्रित भात स्निग्धता के साथ पकाकर खाने से शीतपित्त (जुलपित्ती) के ज्वर में गुणकारी होता है।

मूँग और आँवले का रस वात-पित्त वाले रोगियों के लिए लाभकर होता है।

ज्वर नाशक क्वाथ

पित्त-कफ वाले रोगी में नीम और पटोल का क्वाथ पान करना लाभप्रद है। लाल रंग का गन्ना और मूँग का काढ़ा वात-कफ वाले रोगी के लिए लाभप्रद होता है। परवल के पत्ते, हलदी, नागरमोथा, नीम का छिलका, त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), कुटकी, कटेरी और देवदारु—इनका क्वाथ बनाकर पीने से त्रिदोषज (वात, पित्त, कफ) ज्वर का नाश होता है।

सोंठ, पुष्करमूल, गुरुच तथा कटेरी। इनका काढ़ा पीने से श्वास, कास तथा वात-पित्ताधिक सन्निपातज ज्वर का निवारण होता है। महुआ का फूल, फालसा, अंगूर, त्रायमाण, खस (एक प्रकार का तृणविशेष), कुटकी, त्रिफला और खम्भारी। इन सबका शीतल जूष पान करने से सभी-प्रकार के ताप दूर होते हैं।

यदि कोष्ठबद्धता का रोगी कुटकी, त्रिफला, त्रायमाण, गुड़, और दाख (अंगूर) का काढ़ा बनाकर पी ले तो उसकी कब्जियत दूर हो जाती है। कफ रोग से पीड़ित मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह उक्त पेय को न पीवे। भोजनोपरांत जल और पेया पीने से कफज रोगी में कफ की वृद्धि होती है।

कफाधिक्य के कारण कृश शरीर के रोगी को भूसीरहित यव को अच्छी तरह से पकाकर पीना लाभदायक होता है। रोगियों के प्रति शुभेच्छुक चिकित्सक का यह कर्तव्य है कि वह कुलथी, चना और अनारदाना के साथ पकाये गये हलके यूष

4ABooks.com

अथवा रूक्ष, कटु रसों वाले चिकने और रुचिकारक यूष सेवन करने का परामर्श दे।

दोष का परिपाक भली प्रकार से हो जाने पर घृत का प्रयोग अमृत के समान फलदायक होता है, किन्तु इसके विपरीत वह विष का कार्य करता हैं। प्राय: दश दिनों के पश्चात् कफज ज्वर का परिपाक हो जाता है। अत: उसी समय से कुशल वैद्य घृत का प्रारम्भ करा दे।

यदि रोगी या निरोगी व्यक्ति सायंकाल में हलका भोजन ले तो उसे अभीष्ट सिद्धि मिलती है, क्योंकि यह समय कफ की कमी और जठराग्नि-वृद्धि का काल होता है। कफ-वातजनित ज्वर में तृषातुर रोगी को गरम जल तथा विधिवत् पाचित यूषादि रसों के प्रयोग करने चाहिए।

पित्त और मद्यपान के विष से उत्पन्न ज्वर में तिक्तक (परवल, चिरायता, कृष्णखदिर) का काढ़ा अथवा मोथा, पित्तपापड़ा, खस, कुटकी, चन्दन तथा सोंठ का क्वाथ बनाकर पिपासा एवं ज्वर शमनार्थ प्रयुक्त करें। (इति षडंग:)

तरुण ज्वर (प्रारंभिक अवस्था) में औषधों का प्रयोग वर्जित है, केवल सिद्ध किये गये पेया आदि देने चाहिए। अत: ऊपर कथित षडंग में बतलायी गयी औषधियों का कषाय सोलहगुने जल में पकाये जाने पर जब चौथाई भाग शेष रहे तो उसे तरुण ज्वर में प्रयुक्त करें।

सात दिनों तक रहने वाला ज्वर तरुण, बारह दिनों तक मध्यम तथा इसके बाद बना रहने वाला ज्वर प्राचीन कहा जाता है। जिस समय ज्वर धीमा, शरीर हलका तथा मल चलायमान हो उस समय तरुण ज्वर में भी औषधों का प्रयोग किया जा सकता है।

दोषों की मूलप्रकृति में विकार प्रविष्ट होने पर दोष की परिपक्वता समझनी चाहिए। किसी-किसी विद्वानों का कथन है कि वातविकार सात दिन में, पित्तविकार दश दिन में तथा कफ का विकार बारह दिनों में परिपक्व होता है। चिकित्सक को निर्बल दोष वाले औषधिसाध्य रोगों की चिकित्सा विचारपूर्वक करनी चाहिए। दोष का परिपाक हो जाने के अनन्तर यदि दोष को शरीर से बहिर्गत न किया जाय तो वह दोष रोगी की मृत्यु का कारण बन जाता है। अत: इसके लिए ज्वर को विषम बनाने तथा ज्वर को बलहीन करने की आवश्यकता पड़ती है।

कुछ लोग तीन दिन तथा कुछेक लोग दश दिन के पश्चात् औषधि-व्यवस्था को उचित मानते हैं। किसी-किसी के मत से तरुण ज्वर में कषाय का प्रयोग अनुपयोगी होता है। उनका मानना है कि कषाय-प्रयोग से दोष शरीर में जम जाया करते हैं, जिन्हें बाहर निकालना एक दुष्कर कार्य होता है।

सभी प्रकार के ज्वर में सेवन योग्य द्रव्य

सभी प्रकार के ज्वरों में सबसे पहले रोगी को सोंठ, मोथा, देवदारु, धनिया और बृहतीद्वय (कंटकारी, कटेहरी) का ज्वरनिवारक पाचन प्रयुक्त कराना चाहिए। पथ्य ग्रहण करने से पूर्व सेवित औषधि अधिक बलकारी होती है। अतएव रोग को क्षीण और स्वयं को शक्तिशाली बनाने के इच्छुक बाल, वृद्ध, तरुण, तरुणी तथा कोमल प्रकृति वाले रोगियों को पथ्य लेने से पूर्व ही औषधि का सेवन करना आवश्यक है।

भोजनोपरांत औषधि सेवन से रोगी में क्लान्ति और दुर्बलता आती है। ऐसा करने पर रोग का शमन न होकर उसका वर्धन होता है तथा रोग का प्रकोप बराबर बढ़ता ही जाता है। ठीक इसी प्रकार औषधि सेवन के उपरांत पथ्य न लेने से औषधि फलहीन हो जाती है। तदनन्तर पथ्याक्रान्त औषधि देकर शीघ्र ही दोष का पाचन एवं बल का वर्धन किया जाता है।

पथ्ययुक्त औषध ग्रहण करने से रोगी में जब कुछ स्वस्थता आ जाय तब किसी स्वच्छ, एकांत और वायुरहित स्थान में ले जाकर चिकित्सक को स्वेदन कर्म करना चाहिए। इस प्रकार अवस्थानुसार मात्रा सहित औषधि प्रयोग के द्वारा रोगी रोगमुक्त हो जाता तथा चिकित्सक भी यशस्वी होता है।

मिताहारी-मिविहारी

यदि रोगमुक्त व्यक्ति पुन: ज्वराक्रान्त न होना चाहे तो उसे प्रमाणानुसार आहार-विहार करते हुए नित्यप्रति शक्त्यानुसार व्यायाम भी करते रहना चाहिए। जो व्यक्ति क्षुधारक्षण करते हुए कालोचित और उपयुक्त आहार लेता तथा विकृतिविहीन पदार्थों का अनुसरण करता है वही मिताहारी कहलाता है।

दिन के दोनों सन्ध्याओं में अनिद्रित रहना, समय से सोना-जागना, इन्द्रियों को अपने वश में रखना, मुख्य व्यायाम, मार्गभ्रमण तथा परिश्रम आदि गौण व्यायाम कहे जाते हैं। जो पुरुष सर्वांगसुंदरी और नीरोग भार्या के साथ ऋतुकाल में शक्ति का रक्षण करते हुए रात्रि में रमण करता है वह मितविहारी कहलाता और अजरता-अमरता को प्राप्त करता है।

प्रातःकालीन जलपान से होने वाला लाभ

नित्यप्रति प्रात:काल सोकर उठते ही साक्षात् अमृततुल्य गुणकारी स्वच्छ और शीतल जल का पान करने वाला व्यक्ति अजरत्व तथा अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। प्रतिदिन प्रात:काल सुंदर जल को अच्छी तरह से पीने वाला पुरुष राजयक्ष्मा, खाज-खुजली तथा कुष्ठादि रोगों से रहित हो जाता तथा उसके शरीर का कांतिवर्धन भी होता है।

व्यायाम, भोजन व मैथुनान्त का पान

दीर्घकाल तक जीवित रहने के इच्छुक व्यक्ति को व्यायाम, भोजन तथा मैथुन के अन्त में शक्करमिश्रित मधु और दूध का पान करना चाहिए। जल का व्यवहार बिलकुल ही नहीं करना चाहिए।

परिणाम से अनभिज्ञ रहने वाले मूढ़ बालक यौवनारम्भ काल में ऐसे दुष्कर्म करने लगते हैं जिनसे शरीरस्थ धातुओं का क्षय हो जाता है। ये धातुएँ ही शरीर को विकसित कर बल-बुद्धि को बढ़ाती हैं। धातु को ही शरीर का आधार-स्तम्भ भी माना जाता है।

वीर्यहानि के दुष्परिणाम

वीर्यक्षय के कारण शक्तिहीन प्राणी यौवनान्त में अपने किये हुए दुष्कर्मों पर पश्चात्ताप करके अनेक प्रकार के कष्ट भुगतने के लिए विवश हो उठते हैं। उनके कर्मफल निम्नरूप में उभरकर सामने आते हैं, जैसे—दुर्बलता, मूढ़ता, दीप्ति, बुद्धि और स्मृति का लोप होना।

इस प्रकार के दुर्भाग्य से मन में निराशा, उत्साहहीनता, उत्साहहीनता से रोगग्रस्तता तथा रोगग्रस्तता के परिणामस्वरूप मृत्यु का होना सुनिश्चित रहता है। यदि अल्प वयवाले जीवन-पर्यन्त भाग्यशाली तथा पौरुषवान बने रहना चाहें तो उन्हें इस प्रकार के दुष्कर्मों का परित्याग कर देना ही उचित है।

क्रोध, चिन्ता, अहंकार और ईर्ष्या की ज्वाला में निरन्तर जलने वाला व्यक्ति भी स्वल्पायु होता है। अतः विवेकशील प्राणी को इन सब दोषों से सदैव बचना चाहिए।

वातादिज्वर का उपचार

रावण कहते हैं कि—क्रमानुसार वातज्वारदि रोगों की उन औषधियो का वर्णन करता हूँ जो बल-बुद्धिवर्धक तथा आयुष्य का महान कारण रूप है। चिरायता, मोथा, अमृता (गुरुच, हरड़, छोटी पीपर), सुगंधवाला, दोनों बृहती (कंटकारी, कटेहरी) और गोखरू। इन्हें पकाकर तैयार किया गया कषाय वातज्वर को दूर करता है।

पिप्पली (छोटी पीपर), सारिवा (सालसा), दाख (अंगूर) सौंफ, हरेणु (एक गंधद्रव्यविशेष) तथा गुड़ के साथ इन औषधां का कषाय वातज्वरनाशक होता है। दाख, गिलोय, कम्भारी (खम्भारी), त्रायमाण, सालसा। इन सबका क्वाथ खजूर के रस के काढ़े में मिलाने पर वातज्वरविनाशक हो जाता है।

कुटकी, मोथा और इन्द्रयव। इनके क्वाथ में शहद मिलाकर पीने से

पित्तज्वर में लाभ होता है। लोध, कूठ, गिलोय (गुरुच), पुष्करमूल और सालसा। इनका क्वाथ बना शक्कर मिलाकर पीने से पित्तज्वर में लाभ पहुँचाता है। यह क्वाथ साक्षात् अमृतस्वरूप होता है। नीम, केशर, वंशलोचन और धनिया को घोंटकर पान करना पित्तजज्वर में लाभकारी होता है।

दुरालमा, पित्तपापड़ा, प्रियंगु का फूल, चिरायता, अड़ूसा और कुटकी। इनका काढ़ा शक्कर मिलाकर पीने से प्यास, पित्तज्वर तथा जलन शान्त होती है। परवल के पत्ते और इन्द्रयव का काढ़ा बना उसमें मधु मिलाकर पान करना तेज पित्तज्वर और पिपासा को दूर करता है।

पित्तज्वर विनाश हेतु एक अकेला पित्तपापड़ा ही पर्याप्त होता है। यदि उसमें गौरीसर, हरिचन्दन, सोंठ और मोथा भी मिला दें तो पित्तज्वर दूर होने में देर नहीं लगती। सोंठ, सुगंधवाला, पित्तपापड़ा, खस, मोथा और चन्दन। इन्हें पकाकर काढ़ा करके पीने से प्यास, वमन, ज्वर तथा दाह आदि रोगों का निवारण होता है।

दाख, अमलनास और कम्भारी (गम्भारी) का काढ़ा पीने से पित्तज्वर का नाश होता है। दाख, हरीतकी (हरड़), पित्तपापड़ा, कुटकी और अमलतास। इनका क्वाथ मूर्च्छा, प्रलाप, जलन, पिपासा तथा मुख का सूखापन दूर करता है।

एक दिन तक धनिया को जल में भिंगोये रखकर दूसरे दिन छानकर उसमें शक्कर मिला ले और पान करें तो पित्तज्वर के कारण उत्पन्न होने वाली जलन शान्त हो जाती है। अमलतास, सीसक, पीला चंदन या छोटा प्लक्ष (पाकड़), तमालपत्र (आबनूस का पत्ता) और बहेड़ा। इनको पीसकर हड्डी और मज्जा के दाह में लेप लगाना लाभप्रद होता है।

बेर वृक्ष के पत्तों से निकले हुए झाग से सिद्ध करके बिदारीकंद, अनार, लोध, कैथ (एक फलविशेष) और बीजपूर। इन्हें पीसकर तीन बार मस्तक पर लेप लगाने से जलन नष्ट होती है। इससे पुराने बुखार में होने वाली जलन भी दूर हो जाती है।

केले या नीम के पत्तों पर पीठ के बल लेटे हुए रोगी के नाभिस्थल में एक काँसे का पात्र रखकर शीतल जल की तेज धारा गिराने से शीघ्र ही जलन मिट जाती है। अथवा जिस नारी का कंठप्रदेश गलहार से विभूषित हो, उसके अंग-प्रत्यंग शीतल चन्दन से लिप्त हों तथा उसके स्तन, जाँघें और नितम्ब के भाग परिपुष्ट हों—ऐसी कल्याणमयी नवयौवना नारी का प्रेमालिंगन करने पर तत्काल ही शारीरिक जलन शांत हो जाती है।

कमलपुष्पों तथा हंसों का समूह, फौव्वारे से युक्त वापी तथा चंदन से लेपित

44Books.com

शरीरांगी सुखदायिनी स्त्री भी दाहहारिणी होती है। अथवा पित्तज्वर से ग्रस्त रोगी यदि जलहीन मेघों के समान शुभ्र, निर्मल, चंद्रकिरणों से शीतल तथा चंदनाभिषिक्त स्थान में निवास करें तो भी पित्तज्वर का नाश हो जाता है।

केश, त्वचा, तालु और जीभ की शुष्कता में सेंधानमक के साथ मधु मिलाकर बीजपूर की केशर के सहित मस्तक पर लेपित करने से उत्तम फल मिलता है।

हरड़, प्रियंगु का पुष्प, पिप्पली (छोटी पीपर), लोध, दोनों हलदी (हलदी एवं दारुहलदी) और आँवला। इन सब वस्तुओं से कुल्ला करने पर मुख की कड़ुआहट दूर होती है। मुखशोधन के परिणामस्वरूप भोजन के प्रति रुचि भी बढ़ती है।

कफज्वर का उपचार

कूठ, इन्द्रयव, मरोड़फली और परवल। इन सबका कषाय निर्मित कर उसमें कालीमिर्च और शहद मिलाकर पान करने से कफज्वर का प्रकोप नष्ट होता है। परवल, त्रिफला, गिलोय, कूड़ा, कुटकी, वच (कुलंजन) अथवा दशमूल (शालपर्णी, पृश्निपर्णी, खम्भारी, गोखरू, बेल, श्योनाक (सोनापाठा), पाढल, अरणी, दोनों कटेरी (छोटी एवं बड़ी) और बाँसा—इन्हें दशमूल कहा जाता है।) का काढ़ा बनाकर मधु के साथ पीना कफज्वर में लाभकारी होता है।

स्नेहसंज्ञक क्वाथों में घृत और मधु डालकर एक साथ ही पाक करें। यहाँ यह ध्यान रहे कि कार्तिक मास का निकाला हुआ मधु और घी पुराना होना आवश्यक है। दश साल का रखा हुआ घी पुराना माना जाता है।

आँवला, हरड़, पिप्पली और त्रिफला। इन सबका एकीकृत योग अग्निदीपक, दोषशामक, कफनाशक तथा सम्पूर्ण ज्वरों का निवारक होता है।

कायफल (कट्फल), पुष्पकरमूल, छोटी पीपर और कर्कटशृंगी (काकड़ासिंघी)—इन चार वस्तुओं का लेह मधु के साथ सेवन करने पर श्वास, कास (खाँसी), कफ और ज्वर का विनाश हो जाता है। उक्त रोगों का नाशक होने के अतिरिक्त यह प्लीहा (बरवट, तिल्ली), हिचकी तथा बालरोगों में भी लाभप्रद होता है।

उपर्युक्त औषधों के चूर्णित कल्क की वटिकाओं की मात्रा पाँच रत्ती होनी चाहिए तथा गीले रस को सीपी द्वारा चाटना उपयुक्त होता है। अथवा सुविज्ञ चिकित्सक को इसकी मात्रा का निर्धारण ज्वरदोषबल, औदरिक अग्निबल, शारीरिक बल, अवस्था, औषधबल तथा आमाशयिक बल को ध्यान में रखकर ही करना चाहिए।

छोटी पीपर, करीर, चव्य, चित्रक, अतीस, सोंठ, स्याह एवं श्वेत जीरा, पाठा, हींग, रेणुका, दाख, सफेद सरसों, कुटकी, महानिम्ब, इन्द्रयव, अजमोदा, छोटी इलायची, भारंगी और वायविडंग (भाभीरंग)—इन बीस वस्तुओं से सम्मिलित योग से पाचित किया हुआ यह कृष्णादिगण कफरोगविनाशक माना गया है।

वातपित्तज्वर का उपचार

मिलित दोषों में मिलित औषधों का पाचन (दोषशामक कषाय या काढ़ा) देना लाभकारी होता है। इसके लिए त्रिफला, शाल्मलि (सेमल), रास्ना, अमलतास और बाँसा—इनका क्वाथ पान करने से वातपित्तज्वर तत्क्षण ही नष्ट हो जाता है।

अतीस, गुरुच, मोथा, चिरायता, लघुपञ्चमूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी तथा गोखरू)—इनका पाचित कषाय पीने से शीघ्र ही वात-पित्तज्वर दूर हो जाता है। अथवा चिरायता, गिलोय, दाख, आँवला और कचूर—इनका काढ़ा बना गुड़ मिलाकर पीने से वातपित्तज्वर का शमन होता है।

कटेरी, खिरेंटी, रास्ना, त्रायमाण तथा लाल कचनार। इनका क्वाथ वात-पित्तज्वर को नष्ट कर देता है। अथवा गुरुच, पित्तपापड़ा, मोथा, चिरायता और सोंठ—इनके द्वारा सिद्ध पंचभद्र नामक औषध वात-पित्तज्वर में सेवनीय कहा गया है।

चिरायता, सोंठ, मोथा और गिलोय—इनका क्वाथ कफाधिक्य ज्वर में तथा पाठा, नेत्रवाला, खस या कमलगट्टायुक्त क्वाथ पित्ताधिक्य ज्वर में प्रयोज्य है। इन अवलेहिका का प्रयोग ऊर्ध्वगामी रोग में भोजनोपरांत तथा निम्नगामी रोगों में भोजन से पूर्व करना उचित है।

पाठा, रास्ना, गुरुच, सोंठ, मोथा, चिरायता और पोहकरमूल। इनका काढ़ा संधिशूल, ज्वर, श्वास, खाँसी, हिचकी तथा अरुचि में लाभकारी होता है।

कंटकारी, गुरुच, भारंगी, सोंठ, कूड़ा, जवासा, चिरायता, चंदन, मोथा, परवल और कुटकी। इनका उत्तम कषाय पीने से पित्तकफजन्य ज्वर, जलन, पिपासा, अरुचि, वमन, खाँसी एवं पार्श्वशूल (पसली का दर्द) नष्ट होता है।

गुरुच, नीम, धनिया, चंदन और पुष्करमूल—इन पंच पदार्थों से निर्मित इस गुडूच्यादि क्वाथ के पान करने से जठराग्नि का प्रज्वालन होता है। अत: यह समस्त प्रकार के ज्वर में प्रयोक्तव्य है। गिलोय, चंदन, मोथा, कमलगट्टा, पान, कूड़ा, बासाँ, जंगीहर्रे, सोंठ,खस, पाठा, धनिया, सुगन्धवाला और कुटकी। इनके कषाय को छोटी पीपर और शहद के साथ चाटने से कास, श्वास, ज्वर, वमन, पिपासा तथा जलन दूर होती है।

परवल, चंदन, मरोड़फली, पाठा, कुटकी और गिलोय। इन सब वस्तुओं

को पटोलादिगण कहते हैं। इसके द्वारा पित्तज-कफज ज्वर, वमन, दाह, ग्लानि और पिपासा दूर होती है।

पत्र-पुष्प के साथ निचोड़ा हुआ अड़ूसे का रस, क्षुद्रशर्करा (यावनालशर्करा) को एक साथ पीने से कफ-पित्तजन्य ज्वर, छिन्नपित्त तथा कामला रोग (पीलिया) नष्ट हो जाता है।

केवल एक कुटकी को नियमपूर्वक गरम जल के साथ सेवन करने पर कफ-पित्तज्वर का रोगी रोग से छुटकारा पा सकता है। अथवा परवल, नीम, त्रिफला, मुलेठी और वरुना का कषाय पान करना कफ-पित्तमिश्रित ज्वर में लाभकारी होता है।

गुरुच, इन्द्रयव, नीम, परवल, कुटकी, सोंठ, चंदन तथा मोथा। इन आठ वस्तुओं से निर्मित अमृताष्टक नामक क्वाथ पीने से पित्त-कफ का ज्वर छूट जाता है।

मिट्टी के खप्पर पर गरम की हुई बालुका को बिस्तर के अध:पुट में स्थापित बासी तक्रजल (मट्ठे का पानी) में बिखरने से उत्पन्न होने वाला स्वेद, वात, कफ, शिर:शूल तथा अंग-भंग आदि रोगों को दूर कर देता है।

उक्त प्रकार का बालुकास्वेद नाड़ीस्रोत की कठोरता हटाकर उसे आमाशय में पहुँचाकर वात-कफ के स्तंभ को नष्ट कर देता और ज्वर को दूर भगा देता है।

बिजौरा नीबू के फल का केशर तथा लाल सहिजन के फूल कालीमिर्च के साथ मुख में धारण करने पर वात, कफ, मुखरोग, मुख का सूखापन, जकड़न और अरुचि को दूर करता है।

पिप्पली, पिपरामूल, चव्य, चित्रक और सोंठ। इन पाँच वस्तुओं का समूह क्षुधावर्धक तथा कफ-पित्तज्वर निवारक होता है।

अमलतास, करीर, कुटकी, मोथा और हरड़। इनका निर्मित कषाय आमाशयिक शूल, कफज-वातजज्वरनाशक, पाचक तथा दीप्तिकारक होता है।

पिप्पलियों से निकाला हुआ जल, चक्षु रोगनाशक तथा पाचक होता है जिसके फलस्वरूप यह वात-कफ के दोष, ज्वर एवं प्लीहा (बरवट) के रोगों का नाशक होता है।

मोथा, पित्तपापड़ा, जवासा, गिलोय और सोंठ। इन सबसे सिद्ध किया हुआ जल वात, कफ, भोजन में अनिच्छा, शारीरिक जलन, वमन, सूखापन और ज्वर को हटाता है।

कटेरी, गिलोय, सोंठ और पोहकरमूल। इनका निर्मित कषाय पान करने से कफ-वाताधिक्य ज्वर, श्वास, खाँसी, अरुचि, पार्श्वशूल के कारण उद्भूत ज्वर तथा त्रिदोषज ज्वर नष्ट होता है।

दशमूल (संरिवन, पिठवन, बेल, सोनापाठा, परवल, खम्भारी, अरणी, छोटी एवं बड़ी कटेरी और गोखरू) का रस छोटी पीपर के साथ पीने से कफ-वातज्वर, अरुचि, निद्रालुता, पसली का दर्द, श्वास, कास आदि रोग निर्मूल हो जाते हैं।

सन्निपातज्वर का उपचार

सर्वप्रथम सन्निपात ज्वर में कफ पर नियंत्रण करना अत्यन्त आवश्यक होता है। कफ को नियंत्रित कर लेने पर वात-पित्त पर विजय पाना सरल हो जाता है। वात, पित्त और कफ—इन तीनों के बलवान हो जाने या विलोम की अवस्था में आने पर उसे सन्निपात के नाम से जाना जाता है। गहरे जल में किसी डूबते हुए व्यक्ति के समान सन्निपातग्रस्त रोगी को अपनी बुद्धि के द्वारा आश्रय देकर उसे बाहर खींच लाना ही सुयोग्य चिकित्सक का कर्तव्य माना जाता है।

जिस समय रोगी की पिपासा शान्त होकर उसे नींद आने लगे और शरीर में हलकेपन की अनुभूति हो तो सन्निपातज्वर की निर्बलता समझ लेनी चाहिए। सान्निपातिक ज्वर में लंघन, बालुका स्वेदन, नस्य (नाक द्वारा सूँघने की वस्तु), कुल्ला, अवलेह तथा अंजनादि के प्रयोग करने चाहिए।

सन्निपातज्वर में तीन दिन, पाँच दिन या दश दिन अथवा जब तक आरोग्यता का अवलोकन न हो तब तक उसे लंघन कराना उचित है, क्योंकि लंघनों की सहनीय शक्ति ही दोषों की शक्ति का प्रतीक होता है। दोषों का दमन होने के पश्चात् लंघन-शक्ति में असमर्थता आ जाती है।

कफ और पित्त—ये दोनों ही धातु पदार्थ होने के फलस्वरूप दीर्घकालिक लंघन का सहन कर सकते हैं, किन्तु वायु पर नियंत्रण हो जाने के उपरांत उसे क्षणमात्र भी आमाशय सहन नहीं कर सकता। इसके लिए अदरक के रस में सेंधा नमक और त्रिकटु (सोंठ, कालीमिर्च, पीपर) मिलाकर उसे गले तक रख लें और बार-बार उससे कुल्ला करते रहें।

इस प्रक्रिया के द्वारा रोगी के हृदय में जमा हुआ सूखा कफ धीरे-धीरे पसली, शिर और गले के द्वारा खिंचकर बाहर निकल आयगा और कफ की क्षीणता हो जायगी जिसके परिणामस्वरूप इसके सभी औपद्रविक लक्षण जैसे—ग्रंथिभेद, ज्वर, नींद का अभाव, श्वास, कास, गलरोग, मुख और नेत्रों की भीषणता, अचैन्यता तथा उत्क्लेश आदि शान्त हो जाते हैं।

रोगी के दोषों के बलाबल का विचार कर उससे दिन में एक से चार बार तक उक्त कथित रीति से कुल्ला करायें। सन्निपात ज्वरग्रस्त व्यक्तियों के लिए यह विधि एक परमौषधस्वरूप है।

बिजौरा नीबू, और अदरक के रस को हलका गरम कर उसमें त्रिलवण (सेंधा नमक, सोंचर नमक और काला नमक) मिलाकर सन्निपात रोगी को नाक से सूंघने के लिए दें। अथवा इसके अतिरिक्त किसी अन्य अनुभूत एवं तीक्ष्ण नस्य का भी प्रयोग कर सकते हैं। नस्य प्रयोग के द्वारा शुष्क कफ का भेदन होने से वह गीला हो जाता है। इसके अतिरिक्त इससे शिर, हृदय, कंठप्रदेश, मुख तथा पसली के रोगों का भी शमन हो जाता है।

चिरायता, कालाजीरक, कुटकी, वच और कायफल। इनके चूर्ण को रोगी के शरीर पर मलने से सान्निपातिकज्वर में निकलने वाला पसीना सूख जाता है। अथवा गोपीचंदन, लोध, कालाजीरा, चिरायता, कुटकी, वच, भूरिछड़ीला तथा पंचलवण (सेंधा नमक, साँभरनमक, खारा नमक, सौचर नमक और कचलोन) का सिद्ध गुंडन भी सान्निपातिक पसीने को रोकता है।

शिरीष के बीज, गोमूत्र, पिप्पली, कालीमरिच, सेंधानमक, लहसुन, मैनसिल तथा वच। इनसे सिद्ध किया हुआ अंजन मूर्च्छितावस्था में प्रयुक्त करने से रोगी में चेतनता आती है।

कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, कालीमरिच, पीपर, भूरिछड़ीला इन सबका महीन चूर्ण बनाकर शहद के साथ चाटने से सन्निपात में लाभ होता है।

इस अवलेह के द्वारा कठिनतम सन्निपात का विनाश होने के साथ ही हिचकी, श्वास, खाँसी तथा गला रूँधने में भी लाभ मिलता है। उक्त कथित चूर्ण का प्रयोग कफाधिक्य सन्निपात में अदरख के रस के साथ करना लाभप्रद सिद्ध होता है।

हलदी, भद्रमुस्तक (विशेष प्रकार का नागरमोथा), त्रिफला, कटुकी, नीम, परवल, देवदारु और कटेरी।

उक्त वस्तुओं का कषाय निर्मित कर पीने से सन्निपात दूर होता है। इसके साथ ही अविपाक, पसीना निकलना, खाँसी, सूखापन, अरुचि आदि ज्वरावस्था में पाये जाने पर उन औपद्रविक लक्षणों को भी उसी प्रकार नष्ट कर डालता है जिस प्रकार वज्राघात से पर्वतों के पंख नष्ट हो जाते हैं।

सभी सान्निपातिक ज्वरों में मधु का प्रयोग अनुचित कहा गया है, क्योंकि यह शीतवर्धक होता है। इसी प्रकार दुग्धप्रयोग की भी मनाही की गयी है। त्रिदोष ज्वर में बलाबल के अनुसार उसके समतुल्य क्रियाओं का प्रयोग अच्छा होता है। इसका कारण यह है कि भिन्न रूपवाले औषधों के प्रयोग से दोषवर्धन होता है।

सन्निपात ज्वर की आरंभिक अवस्था में लंघनोपरांत रोगी को कवलग्रह से अच्छा लाभ मिलता है। अतः इसमें सेंधा नमक के साथ लावा का पीसा हुआ सत्तू

हितकर पथ्य होता है। किसी-किसी के मत से जल में सिद्ध लावा का सत्तू भी शीतल होने के कारण पित्त में हितकारक तथा दाहज्वरनाशक होता है।

सन्निपात में पञ्चमुष्टिकयूषपथ्य महत्त्व

सन्निपात में त्रिकंटक (बृहती, अग्निदमनी, जवासा) अथवा केवल गोखरू के साथ पकाया हुआ पंचमुष्टिकयूष ही दोषों के शमन होने तक पर्याप्त लाभकारी होता है।

पंचकोल (छोटी पीपर, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ) तथा कुलथी, मूँग और पुष्करमूल—इनमें से प्रत्येक वस्तुओं को एक-एक मुट्ठी-भर लेकर चूर्ण कर लें। पुनः इन्हें अठगुने जल में पका लेने पर पंचमुष्टिक यूष तैयार हो जाता है। इस यूष को वात-पित्त की अधिकता वाले सन्निपात, गुल्म, श्वास-कास तथा क्षयज्वर (तपेदिक) में प्रयोग करने से उत्तम फल मिलता है।

यहाँ उक्त पंचकोल में सोंठ की मात्रा एक मुट्ठी-भर, शेष अन्य चारों की मात्रा एक मुट्ठी-भर में होनी चाहिए।

द्वात्रिंशाङ्गक्वाथ का योग और उपयोग

द्वात्रिंशांग क्वाथ का निर्माण करने के लिए निम्नलिखित बत्तीस वस्तुएँ प्रयुक्त की जाती हैं जो इस प्रकार से हैं—

कायफल, मोथा, वचा, पाठा, पुष्करमूल, कालाजीरक, पित्तपापड़ा, देवदारु, हरड़, काकड़ासिंगी, बहेड़ा, चिरायता, सोंठ, भारंगी, कूड़ा, कटुकी, कचूर, धनिया, रोहिस नामक तृण, दशमूल, अदरख और हींग।

उक्त प्रकार का द्वात्रिंशाङ्ग क्वाथ गलगण्ड, गण्डमाला, स्वरभंग, कफ, कर्णमूल, सन्निपात, ग्रंथिरोग तथा कण्ठरोग का शमन करने वाला होता है।

चतुर्भद्रकपञ्चमूल का लाभ और योग

लघुपंचमूल, किरातादिगण (चिरायता, मोथा, गुरुच और सोंठ)। इनका क्वाथ पित्त की अधिकता वाले सन्निपात में सौंफ के साथ तथा कफाधिक्य सन्निपात ज्वर में पीपर के साथ सेवन करना प्रशस्त माना जाता है अथवा कफ की अधिकता में काला नमक के साथ भी प्रयुक्त हो सकता है।

सोंठ, अतीस और मोथा—इन तीनों को एक-एक कर्ष की मात्रा में लेकर गुरुच मिला देने पर चातुर्भद्रिक क्वाथ कहा जाता है। बिल्व (बेल), सोनापाठा, खम्भारी, लाल रंग का लोध और अगेयु वृक्ष मिलाकर पकाया हुआ काढ़ा बृहत् पंचमूल नाम से जाना जाता है। यह अग्निदीपक और कफ-वात का नाश करने वाला होता है।

पञ्चमूल का योग एवं लाभ

दशमूल की दश वस्तुओं में से सरिवन, पिठवन, बृहती कंटकारी और गोखरू—इन पंचमूलों को शुष्क गोबर के साथ साधित करने पर यह वात-पित्तहारक तथा वीर्यपुष्टिकारक हो जाता है।

अब दशमूल की शेष बची हुई पाँच वस्तुओं को उक्त पंचमूल में समाविष्ट कर देने पर सन्निपातज ज्वर, श्वास, कास, तन्द्रा (आलस्य) तथा पार्श्वशूल में लाभकारी होता है।

इसके अतिरिक्त इसे नियमित रूप से पीपलचूर्ण के साथ सेवन करने पर कंठग्रह, हृदयग्रह आदि समस्त उपद्रवों का यह शमन कर देता है। एरण्ड (रेंड़, अण्डी) के रस में पिप्पली मिलाकर इसका प्रयोग एकोत्तरवृद्धि (एक-एक की संख्या प्रतिदिन बढ़ाना) क्रमानुसार तीन, पाँच, सात या दश दिनों तक करने पर इससे खाँसी, श्वास, ज्वर, उदर का गर, बवासीर तथ मन्दाग्नि रोग का नाश हो जाता है।

चतुर्दशाङ्ग का योग एवं लाभ

पित्तज्वर, वात-पित्त के औपद्रविक लक्षण तथा सन्निपात के दोषशमनार्थ दशमूल के साथ किरातादिगण को निशोध के साथ प्रयोग करना आवश्यक होता है।

अष्टदशाङ्ग का योग एवं लाभ

दशमूल, कचूर, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, भारंगी, दुरालभा, कूड़ा के बीज, परवल और कटुकी। इन अट्ठारह वस्तुओं का मिश्रित रस अष्टादशांग कहलाता है। इसका रस त्रिदोषज ज्वर, श्वास, कास, हृदयग्रह, पार्श्वशूल, हिचकी तथा वमन को दूर करने वाला होता है।

चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, मोथा, कूड़ा के बीज, धनिया, नागकेशर और छोटी पीपर। इनका कषाय पीने से आलस्य, प्रलाप (व्यर्थ की बकवास), खाँसी, भोजन में अनिच्छा, जलन, मूर्छा तथा श्वासादि लक्षणों वाले ज्वर शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

मुस्ताद्योगण का योग एवं लाभ

मोथा, पित्तपापड़ा, खस (एक प्रकार का सुगंधित तृण), देवदारु, सोंठ, त्रिफला, जवासा, नील, कबीला, निशोथ, चिरायता, पाठा, वच, कटुकी, मुलेठी और पिपरामूल का समायोजन ही मुस्तादिगण कहलाता है।

यद्यपि अष्टादशांग रस तथा मुस्तादिगण सन्निपातनाशक होते हैं, किन्तु आयुर्वेदज्ञों का मानना है कि ये औषधियाँ प्राय: पित्ताधिक्य वाले सन्निपात में ही अपना गुण प्रकट करती है।

शठ्यादि द्रव्य योग के लाभ

कचूर, पोहकरमूल, गुरुच, सोंठ, परवल, त्रायमाण, दुरालभा, पिप्पली, कटेहरी, पित्तपापड़ा, रास्ना, हरीतकी (हरड़), कटुकी, देवदारु और भारंगी—इन्हें सम परिमाण में सिद्ध किया हुआ।

बृहत् शठ्यादिगण सन्निपात को नष्ट करने के साथ-ही-साथ खाँसी, श्वास, दिन में नींद आना, रात्रि में जागना, मुख का सूखना तथा आंगिक जलन में भी लाभकारी होता है।

योगराज रस के योग एवं लाभ

सोंठ, धनिया, भारंगी, पोहकरमूल, चंदन, परवल, नीम, त्रिफला, मुलेठी, खिरेंटी, खांड़, कुटकी, मोथा, गजपिप्पली, गेंठी या अमलतास, चिरायता, गुरुच, दशमूल, कटेरी। इनके सम्मिश्रण से निर्मित क्वाथ द्वारा सन्निपातज्वर नष्ट होता है। इसके द्वारा सन्निपात उत्पन्न करने वाली निकटतम मृत्यु पर भी विजय-लाभ किया जा सकता है।

कारव्यादि द्रव्य योग के लाभ

कारवल्ली, पुष्करमूल, अण्डी, त्रायमाण, वासा (अड़ूसा नामक पौधा), गिलोय, दशमूल, कचूर, काकड़ासिंगी, तेजपात, भारंगी, पुनर्नवा (गदहपूरना नामक घास)। इन सब चीजों को समान भाग में लेकर काढ़ा बना पीने से शोथरोग (सूजन) तथा अत्यन्त प्रवल सन्निपातज्वर निर्मूल हो जाता है।

सान्निपातिक ज्वर में पसीने की उत्पत्ति होने पर कुलथी का चूर्ण बिखेरने से उत्तम फल मिलता है, क्योंकि प्रान्तर भागों में निरन्तर गीला पसीना निकलते रहने से रोगी की मृत्यु अवश्यंभावी होती है। जिस शीतग्रस्त सन्निपात रोगी के ललाट से अतिशीतल स्वेद का निःसरण हो अथवा कण्ठोत्पन्न पसीना वक्षःस्थल की ओर अग्रसर हो रहा हो तो ऐसा रोगी शीघ्र ही काल के गाल में समा जाता है।

निशोथ, इन्द्रायण (इनारुन), त्रिफला, कुटकी और अमलतास। इन सबके साथ पकाया हुआ सर्वज्वरनाशक तथा दोषभेदक क्वाथ जवाखार के साथ पीना लाभकारी सिद्ध होता है। इस क्वाथ को पित्ताधिक्य सन्निपात में दश दिन, कफाधिक्य में बारह दिन तथा वाताधिक्य में सात दिनों तक पीने से त्रिदोष को नष्ट कर दूषित रक्त, मज्जादि धातुओं तथा मल को परिपक्व कर देता है।

निगृहीत व्यक्ति का परित्याग करने या उसके यथार्थ सन्निपात का सीमा-काल ७/९/११/१४/१८ या २२ दिनों का माना जाता है।

सन्निपात में निषेध

जो वैद्य सन्निपात के आवेश में कंपित एवं प्रलपित रोगी को मांस-भक्षण कराता है वह वैद्य कहलाने का अधिकारी नहीं होता। सन्निपातज्वर में जलनयुक्त रोगी को शीतल जल से सिंचित करने वाला भी वैद्य नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसी अवस्था में ज्वरातुर किस प्रकार जीवन धारण कर सकता है?।

सन्निपातरूपी गहरे सागर में निमज्जित हो रहे रोगी को बाहर निकालने वाला चिकित्सक ही धर्मात्मा और पूजनीय होता है। सन्निपात की चिकित्सा करना मृत्यु के साथ युद्ध करने के समान होता है। अत: सन्निपात पर विजय पाने वाला ही समस्त रोगों को पराजित करने में सफल होता है।

सन्निपात उपचार कर्ता का कर्तव्य

सन्निपात रोगी में औषध-प्रयोग की निष्फलता से निराश हुए चिकित्सक को दाहाकुल और पिपासु को शीतलजल का प्रयोग कदापि नहीं कराना चाहिए। सन्निपात ज्वरोपरांत कर्णमूल में अत्यन्त दुर्दमनीय सूजन उत्पन्न हो जाती है जिसकी असहनीय पीड़ा से कोई विरला रोगी ही बच पाता है।

इसके लिए कलिहारी का सेवन या घृतपान कराना उचित होता है। तत्पश्चात् वात-पित्तनाशक लेप और तत्क्षण साधित कवलग्रहों का प्रयोग करना चाहिए। सोंठ, देवदारु, रास्ना और चित्रक—इन्हें पीसकर लेप लगाने से कानों की सूजन दूर होती है।

कुलथी, कायफल, सोंठ तथा कारवल्ली। इनका चूर्ण जटामांसी के साथ गरमाकर कुछ उष्ण रहने पर बार-बार कर्णमूल में लेपित करना आवश्यक होता है।

आभिचारिक प्रयोगों तथा गुरुजनों के शाप से शापित होने के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले ज्वरों को हवनादि, देवार्चन, शुभ कर्मों के द्वारा तथा औत्पातिक ग्रहों में दान, स्वस्तिवाचन एवं अतिथि-सत्कार से दबाना चाहिए। देशकाल के विचारक प्रबुद्ध चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह वानस्पतिक गंध तथा विषोत्पन्न ज्वरों को पित्तोपयोगी एवं विषोपयोगी कषायों का सेवन कराकर विजित करे।

क्रोधोत्पन्न ज्वर मनोरथ की सिद्धि तथा कामज ज्वर कामोपभोग से दूर होते हैं। अथवा काम, क्रोध या भय से उत्पन्न होने वाले ज्वर सान्त्वना देने, इच्छित वस्तु को पाने तथा मन को हर्षोल्लसित करने से नष्ट होते हैं। भूताभिषंग द्वारा प्रादुर्भूत ज्वर को भूतविद्या में कथित बंधन, आवेशन तथा ताड़न आदि प्रयोगों द्वारा विजित करें। किन्तु इस संदर्भ में यह स्मरण रहे कि वातादि दोषों के अभाव में ज्वरोत्पत्ति नहीं हो सकती।

4ABooks.com

माहेश्वरधूप का निर्माण व लाभ

सरलवृक्ष का गोंद, देवदारु, हींग, मोथा, कटुक (एक प्रकार का सुगंधित तृण), कटुकी, सर्षप (सरसों), नीम के पत्ते, मदनफल, दोनों बृहती, साँप की केंचुल, बिनौला, यव, बहेड़ा या धान की भूसी, गाय के गिरे हुए सींग, खुर और बाल, मोरपंख, बिल्ली का मल।

बकरी के रोम तथा घृत—इन सब पदार्थों को गौ के बछड़े के मूत्र के साथ मिलाकर सिद्ध करने से माहेश्वरधूप तैयार होता है। इस धूप की अग्नि में धूनी देने पर सभी प्रकार के भूत-ग्रहादिकों की बाधा दूर हो जाती है।

जीर्णज्वर का उपचार

कटेरी, सोंठ, गुरुच—इनके क्वाथ में छोटी पीपर मिलाकर जीर्णज्वर, श्वास, कास, शूल, जठराग्निमंदता और नासिका रोगों में पान करना हितकारी होता है (इतिनिदिग्धिकादि:)। कास, श्वास, अपच, अरुचि, पांडुरोग कृमिजन्य औपद्रविक रोगों, जीर्णज्वर तथा मन्दाग्नि में गुड़-पिप्पली का सेवन लाभप्रद सिद्ध होता है।

गुरुच के काढ़ा में पीपर का चूर्ण मिलाकर पान करने या पंचमूलीघृत का सेवन करने से पुराना बुखार और कफ का उन्मूलन होता है। काली अगरु का जुलाब शिर के भारीपन और शूल का नाशक होता है। इससे इंद्रियों की सक्रियता तथा जीर्णज्वर में रुचि उत्पन्न होती है। अत: यह प्रयोग करने योग्य है।

निरन्तर बना रहने वाला विषमज्वर तथा दीर्घकालिक जीर्णज्वर में ज्वरहारक पथ्य की व्यवस्था करनी चाहिए। चौलाई, वास्तूक (बथुआ), छोटी मूली, पित्तपापड़ा, गिलोय और परवल का पत्ता—इनका शाक बनाकर खाना जीर्णज्वर में लाभकारी होता है।

सुविज्ञ चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह रोगी को पुत्री (शाकविशेष) के साथ तुम्बी आदि लाभकारी शाकों का भी सेवन कराये। ज्वर से निर्बल होने वाले व्यक्ति में वमन, विरेचन आदि कर्म नहीं करने चाहिए, बल्कि दुग्ध या निरूह कर्म के द्वारा संचित मलों को निकालना ही उचित होता है। भोजन में अरुचि और शारीरिक निर्बलता के फलस्वरूप मल-मूत्र में विवर्णता रहती है।

ज्वरशांति के पश्चात् उसका पुनरावर्तन रोकने के उद्देश्य से रोगी का शोधन करते रहना आवश्यक होता है। ज्वर के जीर्ण और कफ के क्षीण होने की दशा में दूध अमृततुल्य गुणकारी होता है, किन्तु वही दूध ज्वर की तरुणावस्था में विष बनकर रोगी की मृत्यु को आमंत्रित करता है। पिप्पली-चूर्ण मिलाकर दुग्धपान करने से कफ का उन्मूलन होता है।

44Books.com

लघुपंचमूल द्वारा निर्मित दुग्धपान करने वाला व्यक्ति कास, श्वास, शिर:शूल, पार्श्वशूल तथा नासिका रोग से विमुक्त हो जाताहै। गोखरू, वच, कटेरी, गुड़ और मोथा—इनसे पाचित रसदुग्ध शोषनाशक, ज्वरापहारक तथा मल-मूत्रावरोध निवारक कहा गया है।

जीरकपाक के निर्माण हेतु अठगुना जीरा और जीरा से चौगुना जल डालकर आग पर पकावें। जब पकाने पर केवल जीरा ही शेष रह जाय तब जीरकपाक को पककर तैयार समझना चाहिए। उक्त जीरकपाक जीर्णज्वर में वज्रप्रहार के समतुल्य होता है तथा श्वास, खाँसी और मन्दाग्नि को भी दूर करता है।

ज्वररहित होने वाले दुर्बल तथा मिथ्याहारी व्यक्तियों में ज्वर का स्वल्पांश रहने से वायु की प्रेरणावश वे पुन: पूर्ववत् आक्रमण कर देते हैं।

ऐसे दोष प्रतिदिन-रात एक स्थान से दूसरे स्थान को आच्छादित करते हुए परिव्याप्त रहते हैं। ऐसी अवस्था में सुधार लाने के लिए निम्न प्रकार के पंचकषायों के प्रयोग विभिन्न रीतियों से करने चाहिए—

१. इन्द्रयव, परवल के पत्ते और कटुकी, २. परवल, सरिवन, मोथा, पाठा और कटुकी, ३. नीम, परवल, त्रिफला, दाख, मोथा तथा कूड़ा, ४. चिरायता, गिलोय, चंदन तथा सोंठ एवं ५. गिलोय, आँवला और मोथा।

उक्त प्रकार का कषाय ऐकाहिक (एक दिन के अंतर पर आने वाला), द्वयाहिक (दो दिन के अन्तर पर), त्र्याहिक (तीन दिनों के अन्तराल से) और चातुर्थिक (चार दिनों के अन्तर पर) ज्वर, सम या वातज, पित्तज, कफज, द्वन्द्वज तथा त्रैदोषिक (सान्निपातिक)—इन पाँच प्रकार के ज्वरों का दमन करके रोग से कृशांग मनुष्यों के अंग-प्रत्यंगों में बलवर्धन करता है। गुड़मिश्रित कालीजीरक के सेवन से विषमज्वर (टायफायड) का नाश होता है। इससे मन्दाग्नि दूर होकर वातज रोगों का भी शमन होता है।

विषमज्वर से आक्रान्त व्यक्ति को गुड़मिश्रित त्रिफला का क्वाथ अथवा सम परिमाणिक गिलोय, मोथा और आँवला का निर्मित कषाय पान करना लाभकारी होता है। अथवा मोथा, आँवला, गुरुच, सोंठ और कटेरी—इनका काढ़ा बनाकर पीने से छोटी पीपर के चूर्ण को मधु के साथ चाटने से विषमज्वर का अन्त हो जाता है।

परवल, सारिवा (सरिवन), मोथा और कूड़ा। इनका क्वाथ पीने से दूसरे दिन आने वाला ज्वर शीघ्र ही उतर जाता है।

उक्त प्रकार के ज्वराक्रांत रोगी को प्रतिदिन प्रात:काल घृत के साथ लहसुन अथवा दूध के साथ पिप्पली तथा अंडी के रस का पान करना चाहिए। अथवा प्र

बार पाँच पिप्पली खाकर दुग्धपान करें। तदनन्तर प्रतिदिन एक-एक पिप्पली की संख्या बढ़ाते हुए एक सौ पिप्पली तक प्रयोग करें। सौ की संख्या पूरी हो जाने पर उसे क्रमशः घटाकर पाँच पर ले आवें। इस पिप्पली सेवनकाल में दूध अथवा दुग्धनिर्मित पदार्थ ही पथ्य के रूप में लेने चाहिए।

पिप्पली और एरण्ड (रेंड़) तैल के सेवन से वात, रक्तपित्त, श्वास, पाण्डुरोग (पीलिया), बवासीर, गुल्म तथा शोथरोग का नाश होता है। इसके सेवन से विषमज्वर में भी बल मिलता है।

एकान्तर-चातुर्थिकज्वर का उपचार

एक दिन के अंतराल पर पुनरावर्तित होने वाला ज्वर त्र्याहिक तथा दो दिनों के अन्तर पर आने वाला ज्वर चातुर्थिक कहलाता है। त्र्याहिक और चातुर्थिक ज्वर में साधारण प्रयोगों से काम नहीं चलता। इसे विशिष्ट चिकित्सा के द्वारा ही दबाया जा सकता है।

सोंठ, गुरुच, मोथा, चन्दन, खस और धनिया। इनके संमिश्रण से पाचित क्वाथ शक्कर और मधु के साथ पीने पर त्र्याहिक ज्वर जाता रहता है। रविवार के दिन अपामार्ग (चिचिड़ा) की जड़ को सात लाल धागों में लपेटकर कमर में बाँध लेने से त्र्याहिक ज्वर भाग जाता है।

गंगा के उत्तरी छोर पर एक निःसन्तान तपस्वी मृत हो गया था। उसके लिए तिलांजलि देने से ऐकाहिक ज्वर उतर जाता है। 'अरे ज्वर! अंग, बंग, कलिंग, सौराष्ट्र, मगध तथा वाराणसी में जो वार्ता हुई थी, उसे क्या तू भूल गया?'—इस मंत्र का उच्चारण करते हुए रोगी के हाथ में पीपल वृक्ष के पत्ते को समर्पित कर देना चाहिए।

सूर्यरश्मि के सदृश, अरुण कान्ति सम्पन्न वानर के दिव्य मुख का स्मरण करने मात्र से ही कठिन से कठिनतम ऐकाहिक ज्वर छूट जाता है। वासा (अड़ूसा), आँवला, सरिवन, दारुहलदी, हरड़ और सोंठ। इन सब वस्तुओं का काढ़ा शहद और शक्कर मिला कर पीने से चातुर्थिक ज्वर का निवारण होता है।

अगस्ति (हथिया) वृक्ष के पत्तों से सिद्ध किया हुआ नस्य लेने से अतिप्रचण्ड चातुर्थिक ज्वर निर्मूल हो जाता है। अथवा अतिप्राचीन घी के साथ हींग का सेवन करना भी उक्त फल दिलाता है। यदि विषमज्वर से ग्रस्त व्यक्ति नित्य लहसुन के छिलकों का तिलतैल के साथ सेवन करे तो वह निश्चय ही ज्वर को मार भगाता है तथा सभी वातरोगों से छूट जाता है।

गूगल, नीम के पत्ते, वचा, कूड़ा, हरड़, सरसों, यव और घी—इनका धूप

देना भी विषमज्वर का उन्मूलन कर देता है। अथवा नागरमोथा, गन्धेज तृण, वचा, सरलवृक्ष की राल, नीम, अर्क, अगरु, देवदारु और बिलाव का विष्ठा। इनका धूप देने से ज्वर से कम्पायमान व्यक्ति भी स्वस्थ हो जाता है। भूतावेशित ज्वरों में प्राय: अपराजिता (लशुनिया नामक घास) का प्रयोग करना लाभकारी होता है।

बकरी की खाल और बाल, वचा, कूड़ा, गुग्गुलु, निम्बपत्र—इनमें मधु मिलाकर धूपन करने से ज्वर नष्ट हो जाता है।

उक्त ज्वर शांत मंत्र

निम्नलिखित मंत्रों को भोजपत्र पर लिखकर विषमज्वराक्रांत व्यक्ति की दाहिनी भुजा में बाँध देने से ज्वरोन्मूलन होता है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ठः ठः ठः सः सः हूं हः—इत्येतानि मन्त्रपदानिभूर्जपत्रे लिखित्वा बन्धनीयानि विषमार्तस्य दक्षिणभुजे।

उक्त मंत्र के अतिरिक्त रुग्ण व्यक्ति की भुजा में निम्न मंत्र भी लिखकर बाँध देना उचित है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ हूँ हूँ हूँ विकृतानन! अमुकस्य ऐकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं ज्वरं नाशय नाशय इति च पत्रे लिखित्वा बन्धनीयम्।

सोमदेव के अनुचरों सहित तथा मातृमण्डल के साथ शिवजी के अर्चन-पूजन से भी मानव विषमज्वर से रहित हो जाता है। अथवा त्रैलोक्य के स्वामी सहस्र शिरवाले विष्णुदेव की पूजा उनके सहस्र नामों की स्तुति द्वारा किये जाने पर मनुष्य समस्त प्रकार के ज्वरों से त्राण पा लेता है।

भूमिजयंती, खिरेंटी (सहदेई नामक तृणविशेष) अथवा चौलाई की जड़ को शिर पर बाँधने से ज्वर नहीं रह जाता। अथवा हरड़ का सेवन मधु के साथ करने पर ज्वर छूट जाता है। इसके साथ भोजन में सोंठ का भी उपयोग करणीय होता है।

ज्वरकाल में ज्वर की प्रबलता तथा कालचिन्तन से व्यथित व्यक्ति को अभीष्ट वचनों द्वारा उसकी मानसिकता को दूर करने चाहिए।

पिप्पल्याद्य घृत के लाभ

ज्वर के समय कफ की क्षीणता में बारह रात्रि तक निम्नलिखित घृत का पान रोगी को कराना चाहिए जो इस प्रकार से है—छोटी पीपर, चंदन, मोथा, खस, कटुकी, इन्द्रयव, शालपर्णी (सरिवन), आँवला, कालीसर, अतीस, काकोल, दाख, कर्करा, बेल, त्रायमाण और कटेरी।

इनके मिश्रण से पाचित घृत का सेवन करने से सभी प्रकार के ज्वरों का शीघ्र ही निवारण हो जाता है।

4Books.com